



विजय मुक्तावली

بیجے مکتاولی

छत्रकवि रचित

जिस में

दोहा चौपाई आदि छन्दों में सम्पूर्ण महाभारत
का संक्षेप अति उत्तमता से वर्णित है
श्रीयुत विद्या प्रकाशक मुन्शी नवलकिशोर
अवध समाचार सम्पादकने
दूसरी प्रति छपी हुई से
अपने पण्डितों के द्वारा शुद्ध कराय
दूसरी बार

लखनऊ
स्वकीय यन्त्रालय में छपवाया
जुलाई सन् १८८२ ईसवी

1882
July

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जून सन् १८८२ ई. पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और इनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	२-सभापर्व्व	तसवीरव क्षेपक	नाटक
महाभारत	३-बनपर्व्व	रामायण तुलसीकृत	प्रबोधचंद्रोदय
१-पहिले हिस्सा में	४-विराट पर्व्व	सातों काण्ड	रामाभिषेक
आदिपर्व्व सभा पर्व्व	५-उद्योग पर्व्व	१-बालकाण्ड	आनंदरघुनंदन
बनपर्व्व	६-भीष्मपर्व्व	२-अयोध्याकाण्ड	भ्रमजाल नाटक
२-दूसरे हिस्सा में	७-द्रोण पर्व्व	३-आरण्य काण्ड	वेदान्त
विराटपर्व्व उद्योग प-	८-कर्णपर्व्व	४-किष्किन्धाकाण्ड	योगवाशिष्ठ
र्व्व भीष्मपर्व्व द्रोण	९-शल्य पर्व्व गदा	५-सुन्दरकाण्ड	आनंदामृतवर्षिणी
पर्व्व	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व मय	६-लंका काण्ड	सांख्य तत्वकौमुदी
३-तीसरे हिस्सा में	ऐषिक व विशोक व	७-उत्तर काण्ड	काव्य
कर्णपर्व्व शल्य पर्व्व	स्त्री पर्व्व	रामायण शब्दार्थ कोष	सूरसागर
गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	१०-शान्ति पर्व्व राज	रामायण का इतिहास	कृष्ण सागर
ऐषिक पर्व्व विशोक	धर्म मोक्षधर्म व दा-	रामायण मानस दीपिका	विश्राम सागर
पर्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति	नधर्म	रामायण कवितावली	प्रेम सागर
पर्व्व में राजधर्म आप	११-अश्वमेध आश्र	रामायण गीतावली स-	ब्रजबिलास बड़ा
द्धर्म मोक्ष धर्म	मवासिक मुशल पर्व्व	विनयपत्रिका टी. मो.	ब्रज बिलास छोटा
४-चौथे हिस्सा में	महाप्रस्थान स्वर्गारो-	विनयपत्रिका टी. शि.	कृष्णप्रिया
शान्ति पर्व्व दान धर्म	हण	विष्णुपुराण भाषा	अनेकार्थ
अश्वमेध आश्रम	१२-हरिवंश पर्व्व	लिंगपुराण	छन्दोर्णव पिंगल
वासिक पर्व्व व मौश-	रामायण रामबिलास	ब्रह्मोत्तरखण्ड	रसराज
ल पर्व्व व चारा प्रस्था	रामायण तुलसीकृत	शुक्रनीति	सतसई मूल व सटीक
न स्वर्गारोहण पर्व्व ह-	रामायण सटीक मय	रसहृदय व रसचंद्रोदय	सभा बिलास
रिवंश पर्व्व	मानस दीपिका कोष-	सुदामा चरित्र	तुलसी शब्दार्थ प्र-
महाभारत पर्व्व अ-	आदि	कृष्ण गीतावली	भजनावली
लेहदा भी हैं	तथा जिल्द बंधी	श्री अनुराग रस	प्रेमरत्न
१-आदिपर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की मय-	सौदागर लीला	युगलबिलास



श्रीगणेशायनमः॥

विजयमुक्तावली॥

दोहा॥ विघन हरण तुम हौ सदा गणपति होउ सहाइ॥ बिनती करजोरे करौं दीजैग्रन्थ बनाइ १ ज्यहि कीनो परपंच सब अपनी इच्छापाइ॥ ताको हौं बंदनकरौं हाथजोरि शिरनाइ २ करुणाकर पोषत सदा सकल सृष्टिके प्रान॥ ऐसे ईश्वर को हिये रहै रैन दिनध्यान ३ मेरे मनमें तुमबसौ ऐसे क्यों कहि जाइ॥ ताते यहमन आपसों लीजे क्यों न लगाइ ४ जागुरु गिरिधर देवकी सुंदर दया दरेर॥ गुंग सकल पिंगल पढ़ैं पंगु चढ़ैं गिरि मेर ५ ब्रजरक्षण भक्षण अनल रक्षण गोधन ग्वाल॥ भुजवर करवर सुभुज पर गिरिवर धरन गोपाल ६ हरि दीपक मन सदन धरि कपट कपाट उघारि॥ नशै सकल अघकालिमा छत्र सु देखि विचारि ७॥ दंडकछंद॥ झूमिझूमि आये कोपि बासव पठाये नभ धाये दिशिदिशन ते बासव तरज पर। मेघकी मरोर महापवन झकोर जोर नीरद निपट घोर घोष सो गरज पर। ऐसे लखि कृष्णने उठायो गिरिगोबरधन ब्रजकी सहाइकरी करकी करजपर। राखे सुरपाल के कराल क्रोधते गुपाल छत्र ह्वै दयाल गोपी ग्वालकी लरजपर ८॥ सवैया॥ आनन एक कहै नरको चतुरानन चारिहु वेद बतावैं। जे ऋषि

वृद्ध प्रसिद्ध हैं सिद्ध सदा मनवांछित सिद्धि जो पावैं। नारद शारद जोवतहैं सनकादि शुकादि सबै गुणगावैं। वंदत ये सब शेष सुरेश दिनेश धनेश गणेशहु ध्यावैं ९ दोहा ॥ जगजननी जगवंदनी जगपावनि सुखकारि ॥ गिराथिरा मतिदीजिये बरणौं ग्रन्थ विचारि १० मथुरा मंडल में बसै देश सदा वरग्राम ॥ ऊखल तहाँ प्रसिद्ध महि क्षेत्र बटेश्वर नाम ११ तामग जनके पगपरत अघ को लेश रहैन ॥ बिकट जटे संकट तड़ित डरत सदा शिव नैन १२ सूक्ष्म स्थूल समूल अघ जरे जात दुख शूल ॥ फूल होत उरमें तहीं निरखि कलिंदी कूल १३ सवैया ॥ चंग उपंग मृदंग कहूं सुकहूं ध्वनि शंखन की सुनिये। कहूं ऋषि वृद्ध प्रसिद्ध कहूं कहुं सोहत साधु महा मुनिये। वेदनि वेदत भेदनिसों कहुँ नृत्यत गावत हैं गुनिये। शूली बटेश्वर के छिन बंदत देतहैं मुक्ति सदा दुनिये १४ ॥ दोहा ॥ सुयश सुबसता निकटही पुर अटेर इहिनाम॥ यज्ञ यजन होमादि व्रत रचतधाम प्रतिधाम १५ नगर मनहु अमरावती बासी बिबुध समान ॥ आखंड-लसो लसत तहँ भूपति सिँह कल्यान १६ कीरति दान कृपाणकी कोबरणै विस्तार ॥ जययुत सुयश प्रताप से छाय रही दिशि चार १७ ॥ दंडकछंद ॥ बदर बदक सान बंगसों तिलंगछाई छायरही बंदरमें वारिधि के घाट लौं। माडूकर कामरू फिरंगरोही रोहतास छाईहै कुमाऊं चिचि बंधव कुहाटलौं। गौड़वानौ मारवाड़ मालवा उड़ीसा छाई छाईहै सुदेश देश देशहू विराटलौं। छाई धरा

केहरी कल्यानसिंह कोरतिसो काबिल कलिंग काशमीर करनाटलौं १८॥ दोहा॥ श्रीबास्तव कायस्थहै छत्रसिंह यहनाम॥ बसत भदावर देशमें गृहअटेर सुखधाम १९ कौरव पांडवकीकथा तिन सब सुन्यो पुरान॥ तातेभाषा ग्रन्थको कीनो छत्र बखान २० संवत् सत्रहसै बरष सप्त बाढ़ पंचास॥शुक्लपक्ष एकादशी रच्यौ ग्रन्थ नभमास२१ नाम विजयमुक्तावली हितकरि सुनै जो कोइ॥ अष्टादशौं पुराणको ताहि महाफल होइ २२ लसत हस्तिनापुर अवनि अमरावती समान॥ सुरपति सो शंतनु तहाँ चहूं चक्रमें आन २३ सायरऋषिके शापते शंतनुभयो नरेश॥ भुजवर करवर स्वर्गवर जीतिलियो बहुदेश २४ताघर तरुणी सुरसरी पतिव्रता सुखकारि॥ प्रजा सकल आ-नन्दसों निशि बासर नरनारि २५ बचन सुरसरी यों लयो शंतनु पै सुखपाइ॥ पुत्रहोत मो पूरमें दीजो भूप बहाइ २६ जब यह बिधि करिहौ नहीं तबहिं तजौं यह गेह॥ जौलौं बचनन दृढ़ रहौ तौलों तजौं न नेह २७ अष्ट पुत्र नृपके भये दीनो गंग बहाइ॥ नवमभये गांगेय तब भूतल जनमे आइ २८॥ दोधकछंद॥ भूपतियोंमन माहिँ विचारी। कौनलहै नृपता अधिकारी॥ पुत्र भये सब गंगबहाये। मंत्रीसब नृप शोधि बुलाये॥ बातसबै भुव भूप बखानी। मंत्र कहाकरिये सुखदानी॥ जोबरजों गृह गंग नरैहैं। पुत्रहि राखत पूर समैहैं २९(मंत्र्युवाच) राखिय पुत्र रहै नृपताई। गंगरहै नृपके गृहजाई॥ मंत्र सुनोयह भूपतिभायो। सोचलिकै त्रियपै तबआयो ३०

(शन्तनुरुवाच) दै सुत गंग अबै इक मोहां । माँगत हैं हितसों यह तोहीं ॥ लैत्रिय पुत्र तबै करदीनो । चंद्र सो आनन रूपनवीनो ३१ ॥ दोहा ॥ पतिसोंकहि पूरब कथा रही समाय प्रवाह ॥ महा दुःख नृपकोभयो चकित चित्त नरनाह ३२॥ नगस्वरूपिणी छन्द ॥ भयो नरेशको महा। सो दुःख हौं कहौं कहा ॥ महीप देखियेइसों । निशा बिना शशी जिसों ३३ (मंत्र्युवाच) न भूप शोक कीजिये। सो पुत्र देखि जीजिये ॥ अनेक भाँति पारिये। सो ईश ता सुधारिये ३४ ॥ दोहा ॥ बीते वासर ज्यवघने तबगांगेय कुमार ॥ अस्त्र शस्त्र विद्यापढ़ी सीखे मंत्र अपार ३५ भूपति शंतनु एक दिन गयो अखेटके काज ॥ सघन विपिन सरिता निकट लै प्रिय लोग समाज ३६ केवटतनया शशिबदनि योजनगंधा नाम ॥ निरखि रूप मोहित भयो बिज्जुलतासी बाम ३७ अति आशक्त भयो नृपति केवट लियो बुलाइ ॥ देहु मोहिं अपनी सुता मन बच क्रम सुखपाइ ३८ (केवटउवाच) तुम पृथ्वीपति भूपहौ नीच जाति मल्लाह ॥ आपहि कहौ बिचारिकै किहि विधि होइ बिवाह ३९ तौ बिवाह तुम को करौं जो यह माँगे देहु ॥ नृपता याको सुत लहै करौ आप करिनेह ४० ॥ चौपाई ॥ यह सुनि राजा मन बिलखानो । गृह तन कौ तब कियो पयानो ॥ अब सोई हौं कहौं बिचार । योजनगंधा को अवतार ४१ पाराशर मुनिबन पगुधर्‍यो । तरुणी वचनप्रकट यौंकर्‍यो ॥ किती बरष बन जहैं बीती । कहु संतानि होइ किहि रीती

४२ (पाराशरउवाच) चौपाई॥ ऋतुवंती ह्वै जबहीं न्हाई। शुकदीजै मो पास पठाई॥ ध्यान उमँगि कंद्रप ढरकाऊं। शुक कर देतो पास पठाऊं ४३ तुम जलमेलि कीजियो पान। इहि संयोग होइ अवधान॥ यह कहिकै मुनि बिपिन सिधाये। तप हित महा बिपिन में आये ४४ दोहा॥ ऋतुवंती मज्जन कियो शुक पठयो पतिपास॥ पहुंच्यो पाराशर निकट तबहीं छाँड़ि अवास ४५॥ चौपाई॥ देखत ध्यान ऋषीश्वर धर्यो। मन मथि मदन तबै जल ढर्यो॥ धर्यो पत्रमेंशुक करदयो। ऋषिनी हित सों लीने गयो ४६ आयो सरिता निकट सुकीर। गिर्यो मदन जल अँचवत नीर॥ एक मीन सो कीनो पान। ताको प्रगटभयो अवधान ४७ शेष रह्यो सो तबहीं लयो। ऋषिनी पास कीर लैगयो॥ जाविधि सो कहिगये मुनीश्वर। सोविधि कीनी त्रिय तिहि अवसर ४८ दोहा॥ बीते पूरण मास तब गर्भ सुच्यो त्यहि काल॥ भयो पुत्र कविछत्र कहि उर आनंदति बाल ४९॥ त्रोटकछंद॥ उतमीनहि पूरण गर्भभयो। चलि केवट तासु शिकार गयो॥ लहि मीनसुगेह गयो जबहीं। निकसी तनया तेहि गर्भतहीं ५० चपला जनु सोहत देह धरे। रति मानहु अद्भुत रूप करे॥ दिन कोटिक ताकहँ बीति गये। कुल धर्म सबै हितकै सिखये ५१॥ दोहा॥ नाम सुता मत्स्योदरी करति आप कुल धर्म्म॥ पथिक उतारति आपगा करि मलाह के कर्म्म ५२ कीनो द्वादश वर्ष तप पाराशर मुनिआइ॥ निरखि रूप मत्स्योदरी गिर्यो

पुहुमि अकुलाइ ५३ निरखि निरखि आशक्त ह्वै कही बात मुनिराय॥ मोहि तोहि मृगलोचनी सुरति होइसुख पाय ५४ (मत्स्योदरीउवाच) सुन्दरीछंद॥ बातअबूझि तर्योकहि आवहि॥ क्योंकहि आप कलंक लगावहि ५५ (ऋषिरुवाच)दैरतिकै लहि शाप अबै त्रिय। नाहिं रह्यो कछु धीरज मो हिय॥ त्रास भयो सुनि ताउर में अति। जानि न जाय कछू विधि की गति॥ आतुर ह्वै ऋषि-राज दई रति। ताहि प्रसन्न भयो सु महामति ५६ दोहा॥ तुमतनकी दुरगन्धता नशि जैहै सुनि बाल॥ होइ सुगंध शरीरको योजनलौं सबकाल ५७ लखै न कोऊ गर्भ तुम जाहु अनंदित धाम॥ होइहै पुत्र प्रसिद्ध महि तीन भुवन ज्यहि नाम ५८॥ चौ० ॥यह कहि कै ऋषि गृह को गयो। प्रगट गर्भता त्रियको भयो। लखै न कोऊ ताहि अवास। लीनो जन्म महाऋषि व्यास ५९ बन उठि चल्यो जननि ऋषिराई। अति हित बचन कह्यौ सुनु माई॥जहँ सुधि करै तहां चलि आऊं। तेरो कठिन कलेश मिटाऊं ६० लख्यो न काहूसो व्यवहार । ज्यहि बिधि लीनो ऋषि अवतार॥ योजनगन्धा इहि बिधि भई। परम रूपबिधना निरमई६१ ॥दोहा॥ ताकोशंतनुदेखिकै गृह आये नरनाथ॥कुम्हिलानो आनन महा धीरज रह्यो न हाथ ६२ गांगेयउवाच)कौन हेत नृप मलिनहौ कहौ पिता सो काज॥पाऊं आज्ञा रावरी कहौ सो सारौं काज ६३ (राजोवाच)जबतें सुत गंगा गई बीती बर्षै सात॥ छिन छिन बीततु बर्ष सम युग भरि याम

विहात ६४ ॥ चौ० ॥ त्रियबिन धर्म्मकर्म्मनहिँ होई। नहिं नरलहै बड़ाईकोई॥धन संपति लागै नहिं नीकी। ता बिन सकल वस्तु हैं फीकी ६५ ॥ दोहा॥ योजनगंधाकी नृपति सब विधि कही बखानि॥ देत नहीं अपनी सुता करै न केवट कानि६६ चलि गांगेय गयेतहाँ ताके वटकेपास॥ देहु सुता भूपाल को कीनो वचन प्रकाश ६७ (केवटउ-वाच)होइ राज या पुत्रको तौहों करौं बिवाह॥ मनसा बा-चा कर्मना वचन देहिं नरनाह ६८ ॥ चौ० ॥ तबगां-गेय वचन यों कहै। तुव तनया सुत नृपता लहै॥ करौं बिवाह न त्रिय संग्रहौं॥सत्य वचनहौं तोसों कहौं६९ मेट-हि वचन सुनर्कहि जाई। करौं सेव हौं जानौं माई॥ साधु जानि तव यह पितु मानी।आये ब्याहन नृप रवदानी७० करि बिवाह लै त्रियहि सिधाये। तबहीं भीषम निकट बो-लाये॥तैंअति सुख दीनो है मोही॥हौंप्रसन्न दीनो बर तोहीं ७१ ॥ सवैया॥ मीच बोलाइ बिना नहिं आयहै चाहे बिना मरिहै नहिं मार्यो। तेरे न निष्फल जाहिंगे बाण टरैगो नहीं रण काहु को टार्यो। तोसों तुहीं सरि और नहीं उर अंतर को सब शोच निवार्यो। धन्यघरी जिहि जन्म लयो भुव धन्य तु पुत्र पिता पन पार्यो ७२ दो० ॥ सुनि शंतनु के बचन ये भीषमजी सुख पाय॥ मातु पिताकी भक्ति अति करि लीनी मनलाय ७३ ॥

इतिश्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकवि
छत्रविरचितायां व्यासावतारबर्णनो
नामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

त्रोटकछंद ॥ नृप शंतनु के सुत दोय भये। शुभनाम सुचित्र विचित्र ठये । गुणज्ञान कृपान सबै सिखये। दिनसीखत कर्म सुधर्म्म नये १ बहु भूपतिके मनमोदभयो। क्षितिमें यश भूपति भूपलयो। इहिभांति कितेदिन बीति गये। सब बासर आनँदमें बितये २ ॥ दोहा ॥ आयु भुगुति नरनाह तब बासलयो हरिलोक ॥ पुत्र कलत्र कुटुंबको उर बाढ्यो बहुशोक ३ सुरसरि सुत समझाय सबक्रिया कर्म सबकीन्ह ॥जेठेसुत तब चित्रको राज्यभार शिरदीन्ह ४ बहु ऋषिराजन बोलिकै कर्‌यो राज अभिषेक ॥ सब परिवार प्रजानको आनँद बढ्यो अनेक ५ सोरठा ॥ काशिराज के गेह हुतीसुता दुइ इंदुमुखि ॥ इक अंबा अंबेह मृगनयनी चंपकवरणि ६॥ दोहा ॥ अंबा दीन्ही चित्रको करि बिवाहको चार ॥ अरु अंबेह बिचित्र गृह भई सकल सुखसार ७॥ सोरठा ॥ बाढ्यो गर्ब्बअपार अपनीनृप संपति निरखि ॥ सकल सहज भंडार बरणि कहाँलौ कविकहै८॥ चौ० ॥ निशिदिन राजनीति बिसराई । रचे कुकर्मनिके सबभाई ॥ कुलको सकल धर्म नशि गयो । बहुसंदेह मातउर भयो ९ जान्यो जबहिँ राजको नाश । योजनगंधा सुमिरै व्यास । आइगये तब हीं ऋषिराई । धाइ जननिके बंदे पाई १० (योजनगंधाउवाच) यद्यपिमो सुत पायोराज । करै न राजनीति के काज ॥ ऐसोकुछ कीजै उपदेश । राजनीति मत चलैं नरेश ११ (ब्यासउवाच) दोहा ॥ सुनु माता तोसों कहौं राजनीति समुझाय सोसिख दीजै सुतनको सुयश

रहै घरछाय १२ दिनप्रति ब्यास कहै कथा राजनीति सब धर्म ॥ चित्र नृपति यह बातसुनि मनमें बस्यौ कुकर्म १३ को यहद्विज माता निकट बैठत निशिदिन आइ॥ ताको हतन बिचारिकै गुप्त भयो तहँजाई १४ ॥ गीतिकाछंद । आयकै ऋषिब्यास माता निकट बैठि कथाकहै। सुनत पाराशर सुता सुतवचन दीरघ दुखदहै। माय कहि कहि राजनीतिहि सकल विधिसों उच्चरै। पुत्रकहिबूझै जननि इहिभांति श्रवण कथाकरै १५ अर्द्ध निशि बीती जहाँ ऋषि ब्यासपग गृहको धर्‌यो। निरखि यहबिधि चित्र नृप तब बचन तिनसों उच्चर्‌यो। हेमहा ऋषिराय तुमसब भांति बुद्धि प्रबीनहो। लोककी परलोककी सब वेदविधि सों लीनहो १६ भयो मनसा पाप जाकहँ सो कहो क्यों उद्धरै। देहुबुद्धिनिधान सिक्षा काज कैसे कै सरै। ब्यास साध अगाध मति तब बचन तिनसों भाषियो। कहों तोसों बिधिसबै मनमाहिं हितकरि राखियो १७॥ दोहा॥ चलदल द्रुमको खंडिकै तामें अग्निप्रजारि॥ धूम घूटि प्राणन तजै सब अघडारै बारि १८ सीखलई सोपै सोई सोई कियो उपाय॥ धूमघूटि तिहि भांतिही गये देव पुरराय १९ ॥ त्रोटकछंद ॥ यहि भांति नरेश बिलोकि तबै। बहुदीन भये नरनारि सबै॥ तब मात महा उर दुःखभयो। उड़िमानहु भीषम प्राणगयो २० तब भूपति भूमि बिचित्र कर्‌यो। बिधि सों शिर ऊपर छत्र धर्‌यो ॥ बरणौं नृप के सब कर्म्म कहा। सु अखेटक सोहित आहि महा २१ यक द्योस गयो अतिही बनमें।

भय नाहिं कछू नृपके मनमें । उठि सिंह तहां नरनाह
हयो । प्रिय लोगनि के अति दुःख भयो २२ ॥ दोहा ॥
सब साथिन पुरमें कही बनमें बीती बात ॥ शोकयुक्त माता
भई अति भीषम पछितात २३ तबहीं माता चित्रकी सुत
हित बहु दुख पाय । हितकै अरु अति मोहकै भीषम लये
बुलाय २४ (रानीउबाच) चौपाई ॥ नृप बिन पुरबा-
सिन के शंका । ज्यों दशशिर बिन सूनी लंका । अब स्वइ
काज करौ जगदीश । राजभार सुत तेरे शीश २५ प्रजा
पालिये सुत ज्यों मात । राखौ राज जो बूड़ेउ जात । नाम
नृपति शन्तनु को रहै । भीषम सों यों माता कहै २६
(भीषमउबाच) माता सत्य हियेमें राखौ । सत्यहि छांड़ि
असत्य न भाखौ ॥ नृपता करों न तरुणी करौं । तुव सेवा
निशिदिन उर धरौं २७ ॥ (रानीउबाच) दोहा ॥ भयो
राज संदेह उर कीजै कहा उपाय । प्रगटी भीषम सों कथा
लज्जायुत अकुलाय २८ पाराशर संयोग ते भये ब्यास
अवतार ॥ बरणि सुनायो भीषमहिं विधि सों सब ब्यो-
हार २९ जन्मत कानन को गयो ब्यास महा ऋषिराय॥
ताही क्षण मोसन कह्यो बचन परम सुखपाय ३० जहां
कछू संकट परै कष्ट होइ कछु आय । सुमिरतही तहँ प्रगट
ह्वै डारों सकल नशाय ३१ ॥ सुन्दरीछन्द ॥ भीषम
यों सुनि सुःख भयो मन । बैन कहेउ हितवन्त ततक्षन
मातु बुलावहु ता ऋषिराजहि । दुःख दहै सब कारज
साजहि ३२ भीषम को अनुराग रहेउ चित । ब्यास तहां
सुमिरै करिकै हित । शोभित आप कियो ऋषिसों बल ।

जटा कसे कर दण्ड कमण्डल३३ बंदतु है पग मातु महा मति। भीषम के उर सुःख भयो अति। बात बिचारि कही सगरी गुनि। राज चलै क्यहिभांति महामुनि ३४ (श्रीव्यासउवाच) चौपाई॥ एक उपाय करौ जो माई। तौ संतान प्रगटहो आई॥ चित्र विचित्र नृपतिकी नारी। होइ नगन सब बस्तर डारी ३५ मो आगे आवैं तजि लाज। देहुं अशीश होइ सब काज॥ हौं तपसी नहिं चित्त बिकार। तातें जिनि कछु करौ बिचार ३६ रानी गई महल में धाय। पुत्र बधुन सों बिनयो जाय॥ उन सुनि बात अचंभो कियो। कैसो है माता तो हियो ३७ दोहा॥ इहि बिधि आगे जेठके काढ़ै कुलकी बाल॥ ऐसी कौन निलज्ज त्रिय करै जु कर्म कराल ३८ चौपाई॥ रानी कहि समुझाई बाला। भई नगन वह ताही काला॥ चहुंघा केश देह पर ढारि। नैन मूंदि कै अंबा नारि ३६ आई सो सामुहे ऋषीश। ह्वै प्रसन्न ऋषि दई अशीश॥ यहि बिधिकै ऋषि बोले बैन। होइ अंध सुत लहै न नैन ४० फिरि रानी अंबैपै जाई। लै आई ताको समुझाई॥ तिनहूं बसन दिये सब डारि॥ अंग मृत्तिका लाई नारि ४१ (व्यासउवाच) दोहा॥ पांडु पुत्र या गर्भतें ह्वैहै बहु सुखकार॥ मृतिका लाई अंग इनि भेद कह्यो निरधार ४२ बांछित फल मातहि दयो गेह गयो ऋषि राइ॥ चित्र बिचित्र त्रियानके गर्भ भये सुखदाइ ४३॥ सुंदरीछंद॥ पूरण मास भये तिन के जब। मातनि के उर सुक्ख बढ्यो तब। अंध भये सुत

चित्रकि नारिहि। पांडु बिचित्र बधू सुख कारिहि ४४ तापरहू निशि दुंदुभि बाजत। धुनि सुनि कै मघवा जनु लाजत। मंगलचार सखी सब गावहिं। भांतिन भांति अनन्द बढ़ावहिं ४५ भीषम कर्म्म बिचारकिये सब। दीनगुनी कहँ दान दिये तब। बीतिगये यहिभांति कछू दिन। बाढ़त आनँद है छिनहूं छिन ४६ भाट तहां बिरदावलि गावत। वारन अश्व समूह न पावत। पण्डितआय तहां गुनसागर। नृत्यत हैं बहुधा नटनागर प्रमुदित नगर नारि नर भारी। सुख भुज तननि सकल सुखकारी ४७॥ दोहा॥ को बरणै आनन्द को सुक्ख समूह बिलास॥ जबहीं फिरि सुमिरे जननि आयगये ऋषिब्यास ४८ (योजनगन्धाउवाच) तुम प्रसाद ते पुत्र द्वै प्रगट भये यहि गेह॥ आशिष देहु उदार ह्वै मोमांगे सुत देह ४९ (श्रीब्यासउवाच) बिना बसन यहि भांतिही आवै मोतट बाल॥ आशिष देहुंउदारह्वै ताको तेहीकाल ५० आनी दासी नगन करि योजन गन्धा माइ॥ करति कटाक्ष न लाज उर मन्द मन्द मुसकाइ ५१॥ चौपाई॥ काशिराज की सुता न होई। यह माता दासीहै कोई॥ याके गर्भ होय सुतएक। विष्णु भक्त अरु ज्ञान अनेक ५२ दै आशिष तबही ऋषिगयो। प्रगट गर्भ दासीके भयो॥ पुत्र स्वरूप तबै अवतर्‌यो। नामविदुर ऋषियों उच्चर्‌यो ५३ तीनों शिशु खेलैं इक संग। लखि सुख उपजत मातनि अंग॥ लरैं भिरैं खेलैं यहि रीति। केते बर्ष दिवसगे बीति ५४॥ सोरठा॥

भीषम सकल समाज बोल बुधजन ज्योतिषी ॥ दयो अन्धको राजतिलक शीश शिर छत्रधरि ५५ ॥ दोहा ॥ राजनीति मारगु थप्यो भीषम बुद्धि निधान ॥ सुवशबास चरों वरण आप धर्म्मयुत ज्ञान ५६ विजय करन को तब सज्यो भीषम दल चतुरग ॥ जीते अरि पुर जायकै लखि मुख उपज्यो अंग ५७ ॥ चौपाई ॥ एक नृपति पै लीनो दण्ड । पाटन नगर जीति बहु खण्ड । एक नृपति अपने कर थापै । बहुत नरेश महा भय कांपै ५८ ॥ दोहा ॥ भीषम करिकै दिग्विजय आये अपने गेह । पांडु अंध धृतराष्ट्र सों दिन दिन बढ्यो सनेह ५६ चौपाई ॥ अंधरायकी चलै दोहाई । सब बिधि करै पांडु नृपताई ॥ यहि बिधि सुख बीते बहुकाल । रहत यथा क्रम तहँ भूपाल ६० ॥ इतिश्रीमहाभारतपुराणविजयमुक्तावल्यांकबिछत्रबिरचितायांधृतराष्ट्रपांडुबिदुरजन्मबर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दोहा ॥ सुबस भूमि कनवज पुरी चारि बरण की भीर ॥ गंध्रबराय महीप तहँ परम शील गंभीर १ सोरठा ॥ सुरपति गंध्रब राज अमरपुरी कनवज नगर ॥ पुरजन बिबुध समाज दूजो सरि दीजै कहा २ ॥ दोहा ॥ ताके दुहिता शशिमुखी गंधारी यह नाम । शची किधौं है इंदिराकै मनसिज की बाम ३ अन्धराय को थापि कै दीनी लगन पठाय ॥ करि विवाह को चारु सब मंगल चार कराय ४ पुनि भीषम आनंद युत आये साजि बरात

अंधराय दूलह बने सुख समूह सरसात ५ बिन लोचन को पतिसुन्यो गंधारी दुखपाय॥ सखी आपनीसों कही यह सब बिधि समुझाय ६ को मेटै बिधि को लिख्यो पायो पति बिन नैन ॥ सोई प्रभुहैं प्राणपति सत्य कहौं सुनु बैन ७ ॥ चौपाई ॥ तबहीं यो गन्धारी कहै। परम पतिब्रत मो उर रहै॥ कैसी तरुणी वै जगमाहीं। पति के दुःख आप दुख नाहीं ८ गुरु देवता आप पति जानैं। ताकी आज्ञा निशिदिन मानैं॥ पगन देहिं पति शासन भंग। रचैं पतिब्रत के जो रंग ९ शुभ गति तिनकी करता करै। तब गंधारी यों अनुसरै॥ अन्धराय पति के दृग हैन॥ लै पट्टी तिन बांधे नैन १० ॥ दोहा ॥ जो बिधि दोऊ कुलन की ब्याह भयो तिहि रीति॥ कन्या दै दासी दई भूषन बसन समीति ११ ॥ नाराचछन्द ॥ मतंग औतुरंग सूर साजि साजि साजियो। अनेक भांति दायजो अशेष बस्तुको दियो। श्याम श्वेत नील पीत आसने बिछावने। दये सुवर्ण मालमुक्त राजते घने घने १२ बिवाह कै नरेश आप गेहको सिधारियो॥ दरिद्र हीन दीन के सबै नशाइ डारियो। गीत नाद ठौर ठौर सुक्खसों घने घने। उपंग चंग दुंदुभीनि भेरि वृंद को गने १३ ॥ दोहा ॥ कही नृपति धृतराष्ट्र यह भीषम सों समुझाइ। करों पांडु को ब्याह अब उत्तम ठौर सुधाइ १४ (भीषमउबाच) नगर निरखि नावलि बनी मधि नायक कुतवार॥ कुंतलराज बखानिये तह भूमि भरतार १५ सूरसेन नृपकी सुता हितकै आनं

गेह ॥ जन्म काल के कर्म सब कीने सहित सनेह १६
नाम धर्यो कुंती तहां सकल बुधीश बुलाय। दिन दिन
दुहिता इंदुमुखि अति द्युति सों सरसाय १७ द्वादश
बीते बर्ष तब करि कुंती चित ज्ञान॥ सेयो ऋषि दुर्बास
तब मन क्रम बचन सुजान १८॥ तोटकछंद ॥ ऋषि-
राज प्रसन्न भये जबहीं। अति निश्चल ध्यान धर्यो
तबही॥ सिखयो आकर्षन मंत्र तबै। हितकै तिहि सी-
खि लये सुसबै १६ ॥ दोहा ॥ सूरजको इक धर्मकोतीजो
पवन बखान॥ चौथे सिखयो इंद्रको सब गुन ज्ञान नि-
धान २० ॥ चौपाई ॥ पंचम तहँ अश्वनी कुमारा। दीनो
ऋषि सो परम उदारा॥ जाको मंत्रजपौ सुख पाई।
सोई देव प्रगट ह्वै आई २१ ॥ त्रोटकछंद ॥ उनसूरज
मंत्र जप्यो जबहीं। प्रगटे सबिता घर आइतहीं। सकुची
डरपी अति भीति पगै॥ नरमो जग मोहिं कलंक ल-
गै २२ (सूर्य्यउवाच) बिनयो जबतैं बहुजाप कर्यो।
अति भक्ति करीपग भूमि धर्यो। तब दृष्टि सँयोग
अधान रह्यो। त्रियसों तबहीं यह बैनकह्यौ २३ सुतहो-
य बली तुवगर्भ महा। बहुधा बर्णोंगुण तासुकहा। प्र-
गटे तन बर्मअभेद धरै। घर बारिधलौं अतिकीर्त्तिकरै२४
चौपाई॥ लखैनकोऊ तुव अवधानु। योंकहि बैनसिधाए-
भानु॥ आईकुंती अपने गेह। धाय बोलाई परम सनेह२५
रविको रमिबौ सबविधि कह्यो। तब उन मरम स-
कल बिधि लह्यो ॥ जबदश मास गये तहँबीति। क-
हीधायसों तबयह रीति२६ आजु मुचैगो मम अवधानु। ह्वै

है पुत्र कहिगये भानु ॥ लाउ मजूषा तुरत गढ़ाय। तामें सुत धरिदेहु बहाय २७॥ दोहा ॥आन्यौ धाय मजूष तब करि मनमांह विचार॥ अर्द्ध निशा बीती जबहिं लयो पुत्र अवतार २८ पहिरे कवच अभेद तनु कुंडल झलकत कान॥ सोकुमार भनि चंदसों षोडश कला निधान २६ धरिमजूषमें धायतब दीने सहित बहाय॥ दृष्टिपर्यौ श्रुति धारकी हितकरि लियौ उठाय ३०॥ नाराचछंद ॥ लसै महा स्वरूप पुत्र सूरसो उदय कियो। गयौसु भौन आपने हुलाससों महाहियौ। दयौत्रियाहि जाति कर्मआदि कर्मतेकरे। अनन्दभो महा घनो अशेष दुःखते टरे ॥ ३१ धर्यौ विचारि नाम कर्ण पुत्रयों सिखावही। नित्य नित्य अंगअंगमें सुज्योति आवही। भयो प्रवीण अस्त्रशस्त्र सीखबो हियेधरे। सहस्त्रबाहु जीतिये गयौ विचारि योंकरे ३२॥ दोहा ॥ आराधे तब कमल पद परशुराम केजाय॥ द्विजसुत ह्वै विद्यापढ़ी मन बच क्रम चितलाय ३३ यहिबिधि बहु विद्या पढ़ी सिखदै सो ऋषिराज॥ अस्त्रशस्त्र सीखे तहाँ करण तजे सुखराज ३४ परशुराम ऋषि राजतब आलस सों अलसाइ॥ करण जंघपर शीश धरि सोयरहे सुखपाइ ३५ चौपाई ॥ कीट रूप नारायण आये। भृगुनन्दन तहँ सोवत पाये॥ करण जंघतर पहुंचे जाई। काटत रहे रुधिर धरछाई३६ त्वचाकाटि बहु आमिष फोर्यो। करण सुभट अँग नेक न मोर्यौ॥ सोवतते तब भृगुपति जागे। देखि रुधिर तब पूंछन लागे ३७ (परशुरामउवाच) सुत यह रुधिर कहांते

आयो। तब रबि नंदन भेद बतायो॥ जान्यो करण विप्र नहिं होई। यह क्षत्री बालक है कोई ३७॥ दोहा॥ यद्यपि क्षत्रीबंश सों है बिरोध अति मोहिं। कपट रूप विद्यापढ़ी अंत फुरो नहिं तोहिं ३८ ओढ़ि शाप आये सदन रबिनंदन अकुलाय॥ उतकुंती गृहको गई तन के चिन्ह मिटाइ ४६ तबहीं कुंती रायपै नेगी दये पठाय॥ भीषम इती कथा कही सबनि सुनी सुखपाय४०सोरठा॥ कुंतल नृपपै जाय कही बात समुझाय सब॥ तब भूपति सुखपाय पठये नेगी लगन दै ४१ सुनत सुखद यह बात शुभ घटिका लीन्ही लगन॥ भीषम सजी बरात हय गयंदपरि बहुघने ४२ ॥भुजंगप्रयातछंद॥चले मत्त मातंग ऐसे बिराजैं। मनो श्याम भारे महा मेघ गाजैं। चले तेज सों तेज ताते तुरंगा। मनो लेत भाजे कुरंगी कुरंगा ४३चले बाजि साजे रथी शूर सेना। चले बीर बंका कहूं शंक हैना। चले दुंदुभी आदि दै सर्ब बाजे। चले नृत्य कारी मृदंगी बिराजे ४४ ॥दोहा॥ नियराने कुंतल नगर अद्भुत गई बरात॥ निरखि सकल बिधि नगर के आनँद उरन समात ४५ दुहूं कुलनि की रीति जो तिहि बिधि कियो बिबाह॥ दै कन्या बहु धन दयो समदे सब नरनाह ४६ करि बिबाह नृपपांडु को भीषम पहुंचे धाम॥ भये सगुन पैठत नगर होय सकल मन काम ४७॥दंडकछंद॥ सगुन को सोसार देख्यो दाहिनो कुरंग दौर भारद मयूर चारु दर्शन देखायो है। दाहिनोई जंबुक उलूक श्वान दाहि नोई नीलद नक्षात शुभ सगुन जनायो है॥ दाहि-

नोई शब्द स्वर शूकर भयो दाहिनोई उज्ज्वल बसन लैकै रजकघर आयोहै। अन्न पकवान दूब मृतिका सुगंध पान फूलन की मालको बिलोकि सुख पायोहै४८ ॥चौपाई॥ कुंती गृह भीतर पगु धारी। देखन मुख आई गंधारी॥ सब गुन शुभ लक्षन लखि नैना। मनमें बिलखी कहै न बैना ४९ बूझी सब गुनकी बिधि सबै। सकल सगुनिया बरणत तबै॥ पैठत नगर सगुन शुभ भये। नित नित आनँद देखैं नये ५० ॥दोहा॥ धर्मधुरंधर होय सुत कुंती गर्भप्रबीन॥ एक छत्र महि भोगवै करि समूह अरि हीन ५१ ॥त्रिभंगीछंद॥ सज्जन मन रंजै दुर्जनगंजै भंजै जग दारिद्र घने। सत्य कहै मुख सत्य लहै सुख दुःख दहै कबि छत्रभनै। धर्मनिधारै असुरन मारै जारैरोग किते जगके। भारी भय मानै निर्भयठानै जानै गुन जसके मगके ५२॥दोहा॥झुकि गंधारी सगुनिया दीनी तुरत निकारि॥ लोभ ग्रसित लोभी कहै बातन एक बिचारि ५३ बढ्यो पांडु नृप तरुनि सों दिनदिन प्रेम अपार॥ क्रीडा निशि बासरची सुयश सकल संसार ५४ दूजो कर्यो बिवाह तब आनी तरुनी धाम॥ नाममाद्री लसतसों बिज्जुलता सी बाम ५५ गयो बिपिन को पांडु नृप आखेटकके काज॥ तहां हते तप युक्त द्विज ऋषिनी अरु ऋषिराज ५६ तबहीं मनमथ मन मथ्यो कामातुर ऋषिराय। रति माँगी त्रियपै तहां अंग अंग अकुलाय ५७ (ऋषिनी-उवाच) पतिरति निशि में उचित है बासर युक्ति न आहि॥ किती बिनय तरुनी करी धीरज होइ न ताहि

(ऋषिरुवाच) चौपाई ॥ पशुपक्षी दिनमें रतिकरैं हमतुम रूप मृगनि को धरैं। ऋषिनी मृगी आप मृग भयो। या बिधि त्रियसों रति रसठयो ५६ ताछिन पांडु आय तहँ गयो। बिषम बाण सों ऋषिमृग हयो। लागत बाण भयो संताप। प्राण तजत तहँ दीनो शाप ६० ॥ दोहा ॥ जिहि बिधि छोड़ी देह में लागत बिषम सुबाण॥ यहि बिधि त्रियसों रति करत जैहैं तेरे प्राण ६१ ओढ़ि शाप ऋषिराज को ग्रह आयो दुखपाय॥ महामलिन निशि के समय पौढ्यो शय्या जाय ६२ तब कुंती नृप पै गई करि षोड़श शृंगार। मिस करि नृपसों बत लख्यो अर्द्धनिशा सुखकार ६३ करत सेव पति की त्रिया और पलोटति पाइ॥ अंग अंग दुखसों दह्यो उत्तर देहि न राइ ६४ बड़ीबेर जाग्यो नृपति कुंती अति सुख पाय॥ रतिमाँगी त्रिय लाजतजि कामातुर अकुलाय॥६५ बिषको इषसो उरलग्यो सुनत त्रियाकीबात॥ बचननिही नाशी निशा जौलों भयो प्रभात ६६॥ त्रोटक छंद॥ उठिबाहर पांडु महीप गयो।न सुहाइकछू बहुदुःख भयो। गज बाजि सबै सँग साजितहां। चलिकेपहुंचे बन घोर जहां ६७॥ सवैया॥ देखितहां बनतालकेजाल तमाल विशालनि कौनगनै। चंदन चंपक अंबकदंब सदां फल श्रीफल बेलघनै। केवरा केतकीऔ करनाकुलि कुन्द सुकुमनिकोबरनै।बेला चमेली जुही बहु कुंजनिपुंजनि पुंजनि मोहिमनै ६८॥ दोहा॥ सुबस बसायो इंदुपथ कानन मैं त्यहि ठौर॥ रह्यो बिरमि नृप पांडुतहँ भूपतिको शिर

मौर ६६ ॥ इतिश्रीमहाभारतेराजापांडुबनवास बर्णनो नामतृतीयोऽध्यः ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥ तबकुंती मन दुखितह्वै चली पांडुनृप पास॥ गृहरक्षा को छत्र कहि राखे दासीदास १ पहुंची भूपतिके निकट नगर इंद्र पथमाह ॥ रहत सुचैने लोगसब पांडु नृपति की छाँह २ ॥ चौपाई ॥ जानी तरुणी आवति जबहीं। शोक भयो भूपति उर तबहीं ॥ निशि सून्यो नृप-सेज सँवारी। इंदुबदनि त्रिय तहँ पगुधारी ३ पतिको मन त्रिय लहै न सोई। बहु संदेह तासु उरहोई ॥ तजि लज्जा यों बोली बैन।सुनहु प्राणपति बहु सुख दैन ४ (कुंत्युउवाच) काहे रचत न हमसों मोह।यह लखि मोउर बाढ़त छोह।तुमसों कहौं वचन तजिलाज। क्यों न रचत रति सुतके काज ॥ सुखद वचन रानीयों सुने। दुखकरि राजा मनमें गुने ५॥ दोहा॥बज्रतुल्य उरमें लगी तरुणी की यहबात ॥ बरनी कानन की कथा बिकल देह अकुलात ६ (पांडुउवाच) सोरठा॥मृगनयनी केरूप ऋषिनी ऋषि रति रचतमें ॥ हयो कह्यो यों भूप द्विजके उर शर मृद्धमें ७ ॥ दोहा ॥दयो शाप ऋषियों कह्यो ज्यों छाड़े मैं प्राण ॥ त्योंतरुणी संयोगते मरण आपनो जान ८ यों सुनि त्रिय लरखरि गिरी तनकी नहीं सँभार॥ सुधिआई बोली तबै यहिबिधि बारंबार ९॥ दंडकछंद ॥ किधौं हेम हर्‌यो आप मानकर्‌यो बिप्रन को किधौं धन धर्‌यो जाको ताही मैंन दीनोहै। किधौं मैं बिछोये कहूतरुणी को प्राण

पति किधौं निंद निगमके गुरुको दोष लीनोहै। होम मैं बुझायो तृण चरत बिडारीधेनु झूंठी साखि बोलीकै वचन महा दीनोहै। कुंतीके बिलाप कहे दीनो ऋषि शापजाको अंग अंग ताप ऐसोकौन पाप कीनोहै १० (राजोबाच) ॥ दोहा ॥ होनहार सोइ ह्वै रहै नहीं सुमेटी जाय ॥ सावधानके वच कहि राखी त्रिय समुझाइ ११यहिविधि बीते दिनघने चिन्ता करी भुवार॥किहि बिधि उपजै बंश गृहहोइ सकल सुखसार १२(कुंत्युउबाच)देव अकर्षण मंत्र मोहिं दीने ऋषि दुर्ब्बास ॥ तुम आयसुलै जो भजौं सो आवै मोपास १३ धर्म्म जपन पति तब कह्यो तरुणी सों सुखपाइ ॥ आज्ञालै सुमिरन कियो सो पहुंच्यो ढिग आइ १४ आयो दृष्टि सँयोग तबसूने महल मझार। धर्म्म अशीश दईघनी इहि बिधि बारंबार १५ (धर्म्मउवाच) चौपाई ॥ तेरे गर्भ होय सुत ऐसो षोड़श कला चन्द्र है जैसो॥ धर्म्म धुरन्धर धर्म्महि जानै। दत्त सत्तके सब मग ठानै १६ भूमि भोगवै यकछत्रराज। सबबिधि सारै जगके काज॥ यह कहि धर्म्म गयो सुरलोक। गर्भ धर्‌यो त्रिय नाशे शोक १७ दशयें मास पुत्र अवतर्‌यो। मनों अतनु तनु भूमें धर्‌यो ॥ जैजैशब्द अकाशहि भयो। धर्म्म जन्म महि मण्डल भर्‌यो १८ ॥ दोहा ॥ निशिदिन नारी नर सबै गावहिं मङ्गल चार ॥ होत बधाई छत्र कहि नृपति पांडु दरबार १९ तब बूझे नृप ज्योतिषी कहिये लगन बिचार ॥ कौन मुहूरत सुत भयो सो बर्णों बिस्तार २० (ज्योतिषीउबाच) शुभदिन

शुभ घटिका भयो भाग्यवन्त बहु होय ॥ एकक्षत्र महि भोगवै अरि कहुं बचै न कोय २१॥दण्डकछन्द ॥ सज्जन हुलासकार दुर्जन को नाशकार मित्रन विलासकार पृथ्वी को सिँगार है। मित्रको विश्वासकार पाटनि विलासकार भिक्षुक अवासकार भूमि भरतारहै। जगजाको आशकार शत्रुको बिनाशकार दीनन को यशकार रतन भँडार है। पुण्यको प्रकाशकार पापन को नाशकार नृपता को भासकार धर्म्म अवतारहै २२॥दोहा ॥ उपज्यो पूरण भाग्यते तुम गृह सुत बलवंड ॥ उन्नत सकल अधीन कै देह अदंडनि दंड २३ यहि सुख दिन बीते किते नृपति पांडु यक काल ॥ कही बोलि रानी तबै देव अकर्षण बाल २४ जा प्रसाद सुत दूसरो प्रगट होय मम गेह ॥ सो आयसु अब उर धरौ भूपति कह्यो सनेह २५ जप्यो मंत्र बोल्यो पवन अन्तःपुर यक धाम ॥ तहांभयो संयोग तब गर्भ धस्यो हठि बाम २६ ॥सुन्दरीछन्द ॥पूरणमास भयो प्रगट्यो सुत। काम स्वरूप सुशोभिन संयुत। अंध तिया यह बात सबै सुनि। ब्यास भजे तिहिबार महा मुनि २७ आयगये ऋषिराज तहां तब। जो त्रिय बैन कहे तिनसों सब ॥ सो वर दै ऋषिराज महामति। सोई करौ प्रगटै सुत या गति २८ (व्यासउवाच) दोहा ॥ शीश न धुनि सुनि बात यह देखु पराये ऐन ॥ आपु कियो सो पाइये कहे व्यास यह बैन २९ दीन्हीं हरषि अशीष तब व्यास महा ऋषिराय ॥ गंधारीको गर्भ तब प्रगट भयो तहँ आय ३० जहँ। शैलके शिखर पर कुटी ऋषिन

को धाम ॥ कुंतीलहि भीमहिगई कीने अमित प्रणाम ३१ सन्मुख गाज्यो सिंह तहँ भीमसेन त्यहिकाल ॥ हुलसि गोदते तब गिर्यो पाहन पै उत्ताल ३२ अरु हूं क्यों ज्यों जलद धुनि सुनि हरिगयो पराय ॥ सुनि गंधारी मूर्च्छितब गिरी धरणि अकुलाय ३३ थोरे दिनको गर्ब्भ ह्वै मूचि गयो त्यहिकाल ॥ पर्यो पिंड सो धरणि पर अंग अंग बेहाल ३४ भयो कुलाहल सदनमें भजे व्यास मुनिराय ॥ हितकारी ता वंशके तबहीं पहुंचे आय ३५ चौपाई । बरणि सबै बिधि दासी कही । सो सब सुनि मुनि हिरदे लही ॥ करि सत अंश पिंड के धरै । प्राण सबनि में तब संचरै ३६ सो घट घृत भरि लये मँगाय। प्रति घट अंश पिंड सुखपाय ॥ राखे एक एक गुणग्राम धरे सुअन्तहपुर यक धाम ३७ व्यास सिधाये तब ऋषि राव। करि गंधारी के चित चाव। पूरण मासगये जब बी-ति । खोलेघट आनंद समीति ३८ प्रथम जन्म दुर्यो-धनलयो। दूजे घट दुश्शासन भयो॥ तीजे दूरघ बहुसुकु मार ॥ रूपवंत ज्यों सोवत मार ३९ चौथे घटउपज्यो दुहुं बैन। मानों तन धरि आयो मैन ॥ इहि बिधि करि सत भये कुमार। शील वंत राचे कर तार ४० ।दोहा॥ आनँद भौ धृतराष्ट्र गृह जहँ तहँ मंगलचार ॥ कंचन भूषण हेम नग पावत मंगन हार ४१ सब पुरमें आनँद भयो मन भायो सब लेत ॥ हरषि हरषि कै सकल बिधि सबै अशीषन देत ४२(धृतराष्ट्रउवाच) कहौ बिदुर आनंद मति जनम लग्न को भाव ॥ तुमते और प्रवीण को हित

कै बोल्यो राव ४३ (विदुरउवाच) मैंबिचारि देखी लगन कही नमोपै जाय ॥ मेरो विलगु नमानिये सब बिधि देहुं बताय ४४ जेठो सुत ऐसो भयो भलो नकरिहै काज ॥ कुलहिकलंकलगाइहैअरुखोवैसबराज ४५ ॥नाराचछंद॥ भलो बुरो गनै नहीं समूह गोत संहरै। लहै नसीख एकहू सबै कुकर्म सो करै। नराखु पुत्र भूप नीर माहिं सो बहाइये। सदा अलीनता करै सुगेह में न चाहिये ४६ भये कितेक पुत्र और राज काज ते करे। बिचार औरहै न भूप बैन मो मनै धरै (गांधारीउवाच) नबोलु मूढ़ झूठ मा भलो नतोहि भावई। बोलाय तोहिं लीजिये इहाँ सुक्यों न जावई ४७ ॥दोहा॥ भीषम बिदुर उठे तहीं यों कहिकै अकुलाय ॥ जेठो सुत कुल संहरै कुलहि कलंक लगाय ४८ ॥चौपाई॥ दिनदिन बाढ़त वे सोभाई। यह सब पांडु नृपति सुधि पाई ॥ फूले अँग अँग दीनो दान ॥ सब याचक को राख्यो मान ४९ ॥ इतिश्रीमहा भारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कबिछत्रसिंह बिरचितायां दुर्योधनअवतारबर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

भुजंगीछंद ॥ दई पांडु अज्ञा तहांबोलि भामैं। जपो इंद्र को मंत्र आवै सुकामैं। कर्‌यो शक्रकोध्यान सोगेह आयो। भलो प्रिसंगमों सुःख छायो १ भयेमास पूरे भयो पुत्रनीको। लखेशंक नाशेनशे शोक जीको ॥ महापांडु नरपतिआनन्दहीको। बधायो कियोदान दीन्हो दुनीको २ (राजोवाच)कहो ज्योतिषी पुत्रकी लग्न कैसी। सुनावो सबै मोघरी

होय जैसी (ज्योतिषीउवाच) सुनौ भूप ऐसी घरीकी निकाई। चहूंचक्र फेरैं धरामें दुहाई ३ ॥ छप्पै ॥ वाग निछाय अकाश बाट सुरपुरको ठानै। देवन करि आतंक भूमि ऐरावत आनै॥ शरसमूह सोंसेतु सिंधुको मारग मंडहि। लंकहि पुर वर जीति लंकपति घरुकरि दंडहि ॥ छत्रवपत वरनपतवर अंकतसो जीतै समर। तीन भुवन कीरति करहि शुभ लच्छन सुन पंडुघर ४ ॥ दोहा ॥ कोहर द्रुम तन सुतभयो अर्जुन पायो नाम ॥ मनभायो कारज करै जीतैबहु संग्राम ५ ॥ चौपाई ॥ अर्जुन जन्म भयो जब सुन्यौ। तब गंधारी माथो धुन्यो ॥ कुंतीपुत्रबली सबजाये। पंडुराय गृह बजे बधाये ६ फिर भूपति मनमें यह आई। इन्दु बदन त्रिय निकट बोलाई॥ आयसु मानि हमारो लेव। जपौमंत्र फिरि आवै देव ७ (कुंत्युवाच) मंत्र नजापौं पतिगुणग्राम। पुत्रबली प्रगटै तुमधाम॥ पंच पुरुष सोजारति माने। तासों गनिका कहैं सयाने८ तुम अज्ञाते यहि विधि करौं। देवबुलाये उरमति धरौं॥ जोयह पतिको कह्यौ नकीजै। घोर नर्कतौ आप परीजै९ (पांडउवाच) दोहा॥ देहुमाद्रीको यही मंत्र विचक्षण वाम ॥ तौप्रसाद सुत पावई होय सकल मनकाम १० तव अश्विनी कुमारको मंत्रदियो तिनवाहि ॥ सुमिरत आयो देवतहँ कोटिमदन छबिजाहि ११ भयो सदन संयोग तहँ गर्भ धर्यौ तिहिवाल॥करिमनपूरण कामना देव गये त्यहि काल १२ उपजे ताके गर्भते रूपवन्त सुत दोइ ॥ मंगलचार भये सदन आनन्द्यौ सबकोइ १३

चौपाई ॥ सुर किन्नर कौतुक चलिआये । व्योम विमान सकल छविछाये ॥ कोटि काम छबि बरणि नजाई । निशि दिन आनँद होइ बधाई १४ जेठेसुतको सहदेव नाम । लहुरे नकुल लसै छबि काम ॥ कह ज्योतिषी सुनु भुव-राइ । पुत्रनके गुण कहौं सुनाइ १५ जेठाबली सकल जग जानै । जाकोबल सब दुनी बखानै ॥ पंडित ह्वैहै आगमकहै । मानसकल अरि गणको दहै १६ खांडेबली न दुसरो होइ । महि मंडल जानै सबकोइ ॥ भयेस-याने पांचौ भाइ । बहुतक दिन जबगये सिराइ १७ दोहा ॥ देख्यो स्वप्न अरिष्ठ तब एक द्यौसनर नाथ ॥ श्याम बरण टेढ़े रदन तिहित्रिय पकरे हाथ १८ चलि चलि कंता यौंकहै बारंबार सुनारि ॥ कारो नर ठाढ़ो लख्यो केश भूमिलौं डारि १९ छाया लखी शरीरकीबिन शिर देखीदेह ॥ जागतही नरनाह उर भयोमहा सन्देह २०जप तपदान कियेघने पंडित विप्र बुलाय॥ सात्विक दान दयेतहां सबहीको सुखपाय २१ तीन द्यौस अन्त-र भये कीनो नृप बहु दान ॥ पुहुप वती माद्री भई तब कीन्हे असनान २२ पतिकी सय्याको चली करि षोड़श शृङ्गार ॥ नवलचीर आभरण बहु कंकन तरव निहार२३ सवैया ॥ खंजनकी गति गंजन नैन करी दृग अंजन रेख निकाई । भूषनके मुक्तानिकेहार सिंगार सजीसब सुंदर-ताई ॥ पीनउरोज मुखी सब देह मनोज के ओज सरोज सोछाई । चातुर काम की पातुर सी अतिआतुर ह्वैपति पास सिधाई २४ दोहा ॥ इंदुबदन त्रिय पति निरखि

कामातुर अकुलाय। दंपति रतिमानी हरषि ऋषि के बचन नसाइ २५ तबहीं सुखसंयोग में भूपति छांड़े प्रान। अंधकार दुख को जगत भूप अथयो भान २६ शोक कुटुंबिन के भयो नर नारिन उर दुःख। रह्यो न चारो बर्णमें काहू के उर सुःख २७॥ चौपाई॥ ऋषिन आय कुंती समुझाई। करता गति सो कहा बसाई॥ सहदेव नकुल माद्री लये। मोह छांड़ि कुंती को दये २८ (माद्रीउवाच) ज्यों अपने तीनौ सुत जानौ। त्यों मो पुत्रन सों हित ठानौ॥ यह कहि उठी शीघ्रही कामिनि। भूपति संग भई सहगामिनि २९ जब यह सुधि भीषम को गई। सहित बिदुर बहु चिंताभई॥ कीनो पंडुनृपतिको शोग। खानपान बहु भूल्यौ भोग ३०॥ दोहा॥ चलि आये ते इंदुपथ समुझाये नर नारि। लै पांचौ पुत्रन चले कुंती युत सुख कारि ३१ नगर हस्तिनापुर गये सबही लै सुख पाइ। गांधारी उर सुख भयो देखत बहु पछिताइ ३२ (गांधारीउबाच) दुर्योधन की सब करौ सेवा तन मन लाइ। आधी नृपता लै जिये धर्मपुत्र सुख पाइ ३३॥ इति श्री महाभारतपुराणे बिजयमुक्तावल्यां कबिछत्रसिंह बिरचितायांअर्जुनसहदेवनकुलअवतारबर्णनोनाम पंचमोध्यायः ५॥

दोहा॥ दुर्योधन को आदि दै सत बंधव बलबीर॥ इतहि पंचसुतपंडु नृपतेखेलैंइकतीर १ राखतउरमें दुष्टता कौरव भांति अपार। ताको बारुन बांकई जोसमाय करतार २ मत्त

सहस दश भीम बल दीनो त्रिभुवननाथ। चाहत बांध्यो ताहि बल जुरि कौरव इकसाथ ३ ॥ सुंदरीछंद॥ मंत्रकियो इहिभांति सबै जन। भीमहि बाँधो दैदृढ़ बन्धन॥ याहि दयो विधि आय महाबर। मारत ताहि अनाथ युधिष्ठिर ४ वे नहिं बन्धु कछूकरि जानहिं। जो कहिहौं सोइ आयसु मानहिं॥ तैसरिता तट खेलत हैं सुत। कौरव पांडव आनँद संयुत॥ ५ कौन हरावहि भीमहिको बर। साजहुबार कछू अपनोछर॥ सोवत बाँधै दैदृढ़ बंधन। गंग बहावहुयाहि ततक्षन ६ ॥ दोहा ॥ भीम सुवायो सदनमें सत बंधव सुखपाइ॥ दृढ़ बंधनसों बाँधिकरि चाहत लयो उठाइ ७ रह्यो मुष्टकरि पवनसुत देखत तिनके भाइ॥ कैसे सोये मूढ़मति मोको सकै उठाइ ८ पचिहारे बन्धन सबै सकैन ताहि उठाइ॥ दुर्योधन अद्भुत गन्यो अवलोक्योसोआइ ९ (दुर्योधनउवाच) प्रथम कह्यो तुम प्राणबिन फिर यह बांधो आइ॥ अब कंटक मेरो मिट्यो दीजै गंगबहाइ १० बरुकरि लयो प्रयंक युत दुश्शासन धरि शीश॥ चले बहावन सुरसरी संग बंधु दश बीश ११ डार्यो गंग प्रबाहमें देख्यो कोसक जात॥ दुर्योधनसों आयकै कही सकल बिधिबात १२ चौपाई॥ सब कौरव मन आनँद भयो। अबनिज शाल्ह हमारो गयो॥ अबवे चारों बंधु अनाथ। दीजै चारि ग्राम नरनाथ १३ जोकहि होसो सेवा करिहौं। अबनहिं गर्ब कछू चित धरिहौं॥ बंधन तोरि भीम तबधायो। कौरव जहांतहां चलिआयो १४॥ सुंदरीछंद॥ देखतही कुम्हिलाय गयोसब। कैतिक

भागि चले गृह को तब ॥ बोलत हैं सब कौरवयागति। खेलकियो हम बंधु महामति १५ खेलकियो तुमसों हम जान्यो। हँसिन आप बिसासहि ठान्यौ ॥ भूप युधिष्ठिर आयसु मानहुं। नातरु आजु सबै तुम जानहुं १६ ॥ (दुर्योधनउवाच) गंग बहाय दयो जबतू इन। मोहिं भई उरमें रिस योंसुन ॥ मैंपठयो दह बैन तहांतब। तूचलि आयगयो कित ह्वैअब १७ गीतिकाछंद ॥ करीझूंठीसोंह इन कछुनाहिं मोहिं जनाइयो। खोलि बंधन फांसि चलिकै भले मोढिग आइयो ॥ (भीमसेनउवाच) करौं भूपति कानितेरी धर्म्मसुत सिखमैंलई। नातरु बचौं कत मोहिं सेरत जायरिस क्यों आगई १८ कहिबैन येचलि सदन आये आय मातासों कही। अंधसुत मिलि दुःख दीनो सो परै कैसे सही ॥ जानिकै वे क्षुधित मोसब बचन कर्कस उच्चरैं। जब करत सुख धर्मसुत की आन वेसब पज्जरैं १६ बांधिकै गंगा बहायो दया फिरजियमें भई। छोरि बंधन सकल दीने बाट गृहकी मैंलई॥ (कुंतीउवाच) मानि दुर्योधन महीपति कानि तिनकी कीजिये। जोकहैं नरनाथ सोईमानि आयसु लीजिये। २० क्षुधित जान्यौ भीमजब आहारलै आगे धर्‌यौ। भारकेते अन्न व्यंजन तृप्तह्वै भोजन कर्‌यौ ॥ उदर पूरणकै उठ्यो बहु बस्तु बसननि साजिकै। उठिगयो कौरव सभा तब द्विरद सो गल गाजि कै २१ देखि कै कुरुराज आदर हेतसों बहुबिधि कर्‌यौ। छरस भोजनकर्‌यौ तुमहितसों रसोंईमें धर्‌यौ। प्रीति तुमसों मोहिये अरु स-

सकल अनुजनके हिये। निशि द्यौस देखत तोहिं आनँद छिनक बिछुरै नाजिये २२ (विदुरउवाच) दोहा॥ सबकौ-रवकी दृष्टिछमि विदुर कही यह आन॥ तूकितआयो भीम ह्यांविषज्योंनारहि खान २३ ॥सवैया॥ आवत ह्याँबहुतै दुचितो लखि तोहिं पसीजि चल्यो अँग ह्वै। मानतुनाहिं सबै मिलि जागत दुःख दियो बहुना कछु ह्वै। भोजन कीनो महा बिष संयुत आवहि तूकत बावरो ह्वै। धर्मके नन्दन जैसे बचावत काल बचावत हू दिन ह्वै २४ (भीमउवाच) ॥दोहा॥ सिंह छवन कहि क्यों जिये जो कछु पक्षी खाय॥ मेरे कृष्ण को ध्यानउर काल कहाँ नियराय २५ कही नृपति सों मोहिं तुम जोचाहो अघ वाइ॥ सकुच छाँड़ि भोजन करौं बिदुरगेह जोजाइ२६ दुश्शासन उठि तुरत ही बिदुर पठायो धाम॥ जेंवत बैठ्यो भीम तब सजे सकल मन काम २७॥ दंडकछंद॥ रसहू अनरसहूमें हाँसी अरु खेलहूमें गृह अरु बाहिरहू नेक मन सच्चयो। दुष्ट दुर्योधन हलाहल कै आये आधु ताके हिये दुष्टतानि भाजन है रच्चयो। ल्याइ ल्याइ आमिष अनेक पकवान तहाँ स्वारनि सवारि कै समूह आगे सच्चयो। कीनी न गलानि सों बखानि कबि छत्र कहै जानि बूझि पवनपूत सोई विष पच्चयो २८ ॥दोहा॥ जितनो ल्यावत स्वार कछु झारनलगै नबार॥ बचो र-सोईं में नकुछ जेयें कैयो थार २९ ॥ दोधकछंद ॥ भीम चल्यो तबहीं गृहआयो। कंचन पालकि धाम बिछायो॥ सोइ रह्यो मन आनँद कीनो॥ सोधि तहाँ सत बंधव

लीनो ३० रैनिगई तब कौरव धाये। कुंतलकी तनया ढिग आये॥ सोवत भीम कहाँ सुख पायो॥ खेलन को अब क्यों न जगायो ३१ जागि उठ्यो चलि सो तहँ आयो। दुष्टन के मन संभ्रम छायो॥ बेगि नरेशहि जाय जुहार्यो॥ कौरव के मन संभ्रम पार्यो ३२ (दुश्शासनउवाच) ॥दोहा॥ कहाकरैं कैसीकरैं कीजैकौन उपाय॥ सोई सब बिधि कीजिये याको लेहिं हराय ३३ चौपाई॥ बट तर चलिकै खेल खिलावें। सब मिलि छल करि ताहि हरावैं॥ जब जब भीम दंड लै आवै। बट चढ़ि रहो छुवन नहिं पावै ३४ तब सब बट द्रुमतर चलि गये। बोलि भीम दुश्शासनलये॥ खेलैंभैया खेल अखंड॥ जोहारै सो ल्यावै दंड ३५ (भीमसेनउवाच) दूखत है पग वीर हमारो। देखें कौतुक बैठि तुम्हारो॥ हरुवे खेलै खेलि है ऐसे। खेलत भैया बंधव जैसे ३६ दंडकछंद॥ खेलैं वीर ऐसो खेल आपुस को जैसो जो-पै खेलिहौ अनैसो तौन खेल खेल्यो परिहै। आनिहै जुरोष ताहि देहैं हम रोष फिरि खैहै आफसोसन हमारो कछु करिहै। पगहैं पिरात ताते चल्यो हू न मोपैजात सांची कहौं बात पैन याहूते उसरि है। हारे हारे दाव दंड दीजै तू चलाय तौतो खेलै हम आय पाय पीर तन डरि है ३७ (दुश्शासनउवाच) ॥ दोहा॥ जोहारैंतौ दाउं हम दोस पांचमें देहिं॥ जो जीतैं तो आपनो पकरिहा-लिही लेहिं ३८ दंडचलायो भीम जब पर्यो गंगकेपार दुश्शासन तब पैरिकै लायो तेही बार ३६ आवतजान्यों

निकट सो धायो भीम खुराइ ॥ चढ़ि न सक्योबटवृक्षपर लयो दुश्शासन आइ ४० चौपाई॥ सोभाई वे फूले गातन। सबै उच्चरत ऐसी बातन ॥ दीजै अबहीं दांउ हमारो। नातरु कहु हमसों तूहारो ॥ (भीमसेनउवाच) सुनो कहौ तुमसों सत भाउ। चौसपांच में लीजै दाँउ ॥ पगमेरोहै महा पिरात। ताते मोपै चल्यौ न जात ४२ (दुश्शासनउवाच) बकसो अंत कहैं सतिभाउ। तबहम छांड़ै अपनो दांउ ॥ ठाढ़े भीमसेन यों भाषै। दांउ बिरानो कैसेराखै ४३ दयो दुशासन दंड चलाय। पर्‌यो सो कोस एकपै जाय। ढूंढ़त भीम लाय यों तहां ॥ कौरव बंधु हतेसब जहां ४४ दुश्शासन फिरि उतर्‌यो धाय। चाहत दंडहिदेहु चलाय ॥ पकर्‌यौ भीम बीचही आय। सक्यौ न दूरि दंड पहुंचाय ४५ तब दुश्शासन बटको धायो। अग्रपर पवनपूत छ्वैपायो ॥ उतरि दांउ दुश्शासन दीजै। अब कछु लोभ न आपन कीजै ४६ ॥ दोहा॥ सबमिलि बटपर चढ़िरहे सुने नहीं कोउ बात। भीम गह्यो द्रुममूल तब हर्षवंत हैं गात ४७ गहियो गाढ़ी डार को रहियो सबै सम्हारि। पवन चलायो कृष्ण तब सकल गिराये झारि ४८ ॥ दंडकछंद ॥ एकपरे औंधे मुख एकगिरे उर्द्धमुख धुकि धुकि परै धराधर धरकत है। एक लोट पोट ह्वै के चोट खाइ खाइ उठे एक अग्रपर शाखागहे लरकत है॥ एक हरबर उठि भागत है डारि डार कँपि कँपि थर थर फर फरकत है। अंध सुत बंधु सुत डारि डारि डारनि ते घायल ह्वै

घूमि घूमि भूमि परे बरकत है ४९ ॥ दोहा ॥ जे बराइ गृहको भजे गहे भीम तेजाय ॥ सब पौरुष साहस गयो उबरे हाहा खाय ५० दई महीपति को सबै बीती कथा सुनाइ ॥ रोषवंत भूपति भयो सुनि कै बहु दुख पाइ ५१ (दुर्योधनउवाच) ॥ दोहा ॥ सन्मुख बैर न कीजिये रहो सकल अरगाइ॥तौलाजों सुनि जो उन्हें ठौर नदेहु छुटाइ ५२ ॥ इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रबिरचितायांभीमसेनकौरवसंवादबर्णनोनामषष्ठो ऽध्यायः ६ ॥

॥ सोरठा ॥ खेलत एकहि साथ कौरव पांडव अनुज सब॥मारत कंदुक हाथ जैसे शशा बहीर को १॥दोहा ॥ उछरी कंदुक त्यहि समय परीकूप में जाय ॥ काढ़न कोसब बंधु मिलि साजत किते उपाय २ ॥ गीतिका - छंद ॥ कूप तट ऋषिद्रोण आये निरखि या बिधि सों कहै। नहींहै समरत्थ कोऊकाढ़ि कंदुकको लहै। वंशक्षत्री को लजावत जनत नहिं करि आवही। काढ़ि तुमको देहुं यह तृण सींकजो कोउ लावही ३ आनि आपसींक ताकरि धनुप ताको तिहि करयो । बाण ताहीको रच्यो तिहि काल धनु ऊपर धरयो। लग्यो कंदुक माहिं सो शर साक दूसर कर लयो। करि कर्म्म अद्भुत बेगिदेइषु माहिहीइषु सोदयो ४ ॥ दोहा ॥ यहि बिधि बेधो सींक सों सींक कूप मंझार ॥ अन्त सींक गहि काढ़ियो गेंद छत्र तिहिबार ५ ॥ चौपाई ॥ देखत सकल अचम्भैरहैं।

समाचार भीषम सों कहे। लयो पितामह बिदुर बुलाई। द्रोण बिप्र ढिग पहुंचे आई ६ लैद्विज आये अपने गेह। करि सनूमान रच्यो बहु नेह ॥ सब शिशु तापहँ विद्या पढ़ै। नित नित चाउ चौगुनो बढ़ै७ अस्त्र शस्त्र विद्यासब जानी। बिदुर पितामह के मनमानी ॥ तिनमें अर्जुन भो अधिकारी। गुरु प्रसाद पायो गुणभारी ८ ॥ दोहा ॥ देख्यो चाहत शिशुनको तब गुरु द्रोण प्रभाउ ॥ कर्यो अखारो सदनमें बोले राजा राउ९ ॥ त्रोटकछंद ॥ रबि पुत्र तहां तब कर्णगयो। कुरु नन्दन साथ मिलापभयो। अति आदर भाउ बिशेष कर्यो। हितसों नरनायक हाथ धर्यो १० गज दन्तन के बहु मंचबने। बहुचित्र बिचित्र अवास घने। तहँ बैठे पितामह आदि सबै निरखैं शिशु कौतुक लोग सबै११गुणकी रचना प्रगटी जबहीं। लखि अद्भुत बर्णत लोग तहीं। भट और न अर्जुन की सरिहैं। गहिकै धनुको समता करिहैं १२ यह बातसुनी दुर्योधन जबही। प्रगट्यो उर कोपमहा तबही।धनुलै तब अर्जुन पास गयो। अवलोकि सुरोषहि छाइ गयो १३ (कर्ण-उवाच) तोमरछंद ॥ अस समर मोसों माड़ि। सबदेहु बतन छांड़ि। सजि बाण तू डर डारि। अब पांडुपुत्र स-म्हारि १४ (अर्जुनोवाच) साजि तोकह बान। यह नाहिं मेरोस्यान। निज होय भूपति कोय। पुनि समर तासों होय १५ ॥दोहा॥ कैसे कहौं बराबरी मोसों तोसोंआय॥ तू सुतहै निज सूतको नहीं अवनिपति राय १६ सुनि दुर्योधन कोप करि थप्यो करण भुव राय ॥ टीको नृप

ताको कर्‌यो शुभ घटिका सुखपाय १७॥ सवैया॥
अर्जुनके सुनि बैन सरोष तहां कुरु राज महा रिसभीनो।
देशदियो सब कोशदियो बहुबाजि दै साजि कै बाहन
दीनो। भूषण दै गज भूषण भूपति भूपकियो कबि छत्र
नवीनो। राज्य दियो सुख साजदियो सबकाज के कर्ण
महीपति कीनो १८॥ दोहा॥ जुरे कर्ण नर नाह तब
अर्जुन सों करि क्रुद्ध॥ दुओ धनुर्धर धीर अति करत अ-
मित गति युद्ध १९ देखै जननी पुत्र बिधि करत वृष्टि
शर जाल॥ कही महा अकुलाय सुत दोऊ राखि गुपा-
ल २० पांच बार धर मूरछो कर्ण सुभट बलिबंड॥ बार
सात अर्जुन धुको बिक्रम कियो अखंड २१ दोऊ बरजे द्रोण
गुरु दोऊ शिशु इकसार॥ राखि अखारो समदियो लोग
सकल तिहिबार २२ दुर्योधन लै करण को गये आपने
धाम॥आजु पैज राखो महा सुनि रबिसुत गुण ग्राम २३
(द्रोणाचार्य्यउवाच)॥ चौपाई॥ धनिधनि सुरपतिसुत
सुखदाई। सबते तुम पौरुष अधिकाई॥ यहकहि अपने
कंठ लगायो। ह्वै है तो तें जो मन भायो २४ जाडर
करण कर्‌यो नरनाह। तोहिं निरखि दुर्योधन दाह॥
गुरुदक्षिणा सकल मिलिदेह। द्रुपदजीति मेटौ संदेह २५
(अर्जुनउवाच) जो आज्ञा म्वहिं देहो आप। सोई
करिहौं तुम परताप॥ प्रथमहिं दुर्योधन सों कहौ। यह
गुरु दक्षिणा उनपै लहौ २६ जो वे यह करिसकें न आजु।
तब सारोंगो हौं सबकाजु॥ यह सब कही द्रोण तहँ
जाय। कौरव सजी चमू सुखपाय २७ कियो द्रुपद सों

सन्मुख युद्ध। तब पंचाल कियो बहु क्रुद्ध॥ बाननि जुर्यो समर भुव आय। अम्बर लीनो ततक्षण वाय २८॥ दंडकछन्द॥ द्रुपद सों जुरे अद्भ सोदर सकल संगलीनो रणरंग महा शूरन के गणमें। बाणनि अकाश छायदोऊ समुदाय युद्ध क्रुद्ध बाढ्यो शुद्ध दुहूं वीरन के मनमें। केते शर जालको प्रयोग कियो पाँचाल कौरव बिहाल काहू धीर नहीं तनमें। सेना अकुलानी देखि राख्यो छत्र कुल पानी लेखि पांडुपुत्र पांचौ तहां आय गाजे रणमें २९ दोहा॥ अर्जुन करि संग्राम बहु जीतो सो नरनाथ॥ आन्यो बाँधि सु गुरु निकट चकित भयो सबसाथ ३०॥ चौपाई॥ डार्यो गुरु के चरणनि सोई। देखत अद्भुत गति सबकोई॥ बाल मित्रता की सुधिकरी। विप्रद्रोण करुणा हिय धरी ३१ अति हित भूपति कंठलगायो। तुमते भयो सकल मनभायो॥ धनि अर्जुन गुरुद्रोण पुकारे। तो बिन मो कारज को सारे ३२ (युधिष्ठिरउवाच) सुनि अर्जुन सोदर गुणग्राम। आजु करौं नीको संग्राम॥ भयो हमारो सब मनभायो। दुर्योधनको गर्ब्ब नवायो ३३ द्रुपदराय बिलख्यो गृहगयो। महाशोच उर अन्तर भयो॥ द्रोणहि हितकै परिह सुसारैं। ऐसे कोटि बिचार बिचारैं ३४ पुत्र शिखंडी ताके धाम। ताते सरै नहीं मनकाम॥ यज्ञारम्भ बोलि द्विज कीनो। भूपति अति करुणा रस भीनो ३५ दोहा॥ यज्ञकुंडते तब कढ़ी कन्या रूपनिधान॥ कै रति शची पुलोमजा है मेनका समान ३६ नाम द्रौपदी तबभयो निरखत दुहिता

नैन ॥ धृष्टद्युमन पुनि कुंडते कढ्यो पुत्र जनु मैन ३७॥ (द्रुपदउवाच) या कन्या यापुत्रतें ह्वैहैं सब मनकाम॥ पूरण करिके यज्ञको हर्षो भूपति धाम ३८ तबहीं यज्ञ सिरायके सबसमदे ऋषिजाल॥ वर्ण वर्ण सुवरणसहित सुरभी दे तिहिकाल ३९ ॥ इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायां अर्जुनबिजयबर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

(दुर्योधनउवाच)त्रिभंगीछन्द ॥ कहां मति कीजै क्यों जगजीजैवेसब छीजैउर धरिये। कछु मंत्र बिचारैंवे ज्यों हारैंभीमहिमारैं सो करिये। कछु व्यंजनकीजै बहुविषदीजैबोलि सुलीजै भोजनको। सुनि धावन धायेतुरतहिलाये बहुभाषेभूपति मनको १ अति आदर कीनोबहु सुख भीनो ताहितबै। संमुखभये भारे अंधदुलारेआयजुहारे बंधुसबै। निशिदिनतुम भावत मनकरि आवत सरसावत आनंदघने। सबही सुखपायो नेहबढ़ायो मनभायो वहको बरने २ (भीमसेनउवाच) दोहा ॥ सेवक जानत मोहिं तुम कृपा करत सब कोय ॥ ताते दिन प्रति को इहां आवन को मन होय ३ ॥ चौपाई सहस हाथ पनवारो आयो । पवनपूत जेंवत बैठायो ॥ दश बीसक जन परसत धाई । सोईलेय छिनक में खाई ४ ॥ दंडकछन्द ॥ दुष्टताको पूर अति तामस को मूरमहा क्रूर दुर्योधन रहतु तासों क्रोध में। कालकूट फोरि फोरि जोरि जोरि केते विष घोरिघोरि डारे बहु भोजन अशेष में। व्यंजन अपार घृतसार कैया

भार आनि कीनों हलाहल आधे आधु सुविषमें। लावत ही हारिजात स्वार जेतो डारिजात भीमसेन झारिजात पातरि निमेषमें ५ ॥ सवैया ॥ तद्यपि आन न चित्त कछू नहिं यद्यपि भाव महा छलको। जानिनि जानतु भोजन खातु नहीं डरु ताहि हलाहलको। भोजन व्यंजन वृन्द घने सु कितेकनि जेंये न लग्यो पलको। दृष्टि इतै उत सो न करै न करै सुतौ पान कहूं जलको ६ ॥ दोहा ॥ भोजन करि बीरालयो चल्यो आपने गेह ॥ छायगयो तिहि काल विष अंग अंग सब देह ७॥ चौपाई ॥ पवन पुत्र जब बाहर आयो। जान्यो भीम महाविष खायो ॥ आई लहरि गिर्यो बिकराल। तब यह शोचत वारंबार॥ ८ तीनों मोलघु सादर आइ। तिनकी इनसों कहा ब-साइ ॥ भूपति मन में नेक न क्रोध। कौरव सों को करै बिरोध ९ यों सुमिरत तब छांड़े प्रान। प्रफुलित कौरव भये निदान॥ बोल्यो वैद नाटिका देखा। मुयो हलाहल सूचित लेखो १० (बैद उवाच) है अजहूं याके उर श्वाश ताते है जीवन की आश ॥ आयसु दीजै करौं उपाय। यों सुनि क्रोध भयो भुवराय ११॥ दोहा ॥ तबै बैद जान्यो कपट गेह गयो अकुलाय॥ जाहु करण लै भीमको आवो गंग बहाय १२आयसु लै रविपुत्र सो दीनों गंग बहाय॥ देव विमाननि आरहे रहे व्योममें छाय १३ (सुरउवाच) जीवैगो सुत बायुको श्रीहरि सदा सहाय॥ सुरसरिजल में सो बह्यो पर्यो पतालहि जाय १४ बासुकि दुहिता इन्दुमुखि अहिलमती त्यहि नाम॥ देखि भीम मूरति

मदन प्रफुलित भई सुबाम १५ शिशुता से पूजी गवरि मन बच क्रम चितलाय ॥ यकदिन सो बिघना करी रही महा अरसाय १६ बासी पानी सो गवरि पूजी यकदिन आप ॥ तब देवी मन क्रोध करि दीनो ताको शाप १७ मृतक मिलै तोको पुरुष जाहु सुरसरी तीर ॥ अहलमती सो प्राणपति देख्यो मृतक शरीर १८ लै राख्यो सो सदन में सखि सों कही बुलाय ॥ अब सोई कीजै यतन याको लेहुं जिवाय १६ ॥ चौपाई ॥ ततछिनहीं तिहि बुद्धि उपाई । जीरन पटकी गेंद बनाई ॥ सुधाकुंड सो ततक्षण डारी । धाये पन्नग रक्षक भारी २० रहे सुधा कुंडनिपै छाई । नहि रंचक कोऊ लै जाई ॥ अहिलमती यहिविधि कहि धाई। गेंद मोहिं दीजै किन आई २१ का निराय बासुकि की करौं । जीव छांड़ि तुम ऊपर मरौं ॥ गेंद निचोरि ताहिलै दई । लै सो पवनपूत ढिगगई २२ रंचक तामहिं अंमृत पायो । भीमसेनके मुख में नायो ॥ जीय उठ्यो जनु सोवत जाग्यो । निरखि त्रियायों बूझन लाग्यो २३ (भीमसेनउवाच) ॥ दोधक छंद ॥ को त्रिय तू जिहिं चित्त चुरायो। सोवत तें कित मोहि जगायो । ब्याल लिये संग को कहि बाला । चंद्र मुखी गुणरूप रसाला २४ कोकहुतू अबमो ढिगआई । कोयहदेशकहो समुझाई २५(त्रियउवाच) आय पतालसुनो सुखसाज । बासुकिमोपितुया थलराज २६॥ दोहा॥ बासुकि दुहिता आहुंमैं अहिल मती मोनाम । गवरि कृपा पाय पुरुष मो गृह करि बिश्राम २७ अब अपनी सबबिधि कहो कोहो

आप निदान। कौन वंश का नाम है किहि कारण ह्यां आन २८ (भीमसेनउवाच) सोम बंश हम सुखद त्रिय छत्री जाति सुजान। भूपति जंबूदीप के महि मंडल में आन २९ तव संग दीखैं ब्याल बहु कहो कौन यह भाउ॥ जितै तितै ये देखियत सो सब बरणि सुनाउ ३० (अहिलमत्युवाच) ये पियूष के कुंडनव जगकी जीवन मूरि। रखवारे तहँ सर्प बहु रहे चहूंदिशि पूरि ३१ (भीमसेनउवाच) दोधकछंद॥ मैं अब कुंडसकललखि पाये। सोखौं सबै करौं मन भाये। अहिलमती तब बिनवै ताहि। यह कछु बात न नीकी आहि ३२ जेहैं ब्यालकिते लिपटाइ। रंचक सुधा सको नहिं खाइ॥ करि बिवाह जो मोसों लेह। जानि हितू माने सब नेह ३३ (दंडकछंद) भारे भारे ब्याल महा कारे कारेविकराल कालहू के काल जहां तहां छाइ जायँगे। आनन की ओरजे श्रवतबिष ज्वाल जोर घोर घोर चहूंओर कहां धौं समाइंगे॥ सप्तमुखी एकअष्टमुखी तेरे अनेक एकएकमुखी आशी बिष आइ लपटाइंगे। जोरे दोऊ हाथ कहौं मानो प्राण नाथप्यारे देखि ऐसे साथकैसे धीरज धराइगे ३४ (नाराचछंद) फुरैन मंत्रमूरि एक एक ब्याल जोड़सें। करो बिचार कौन आपअंग आय जो ग्रसें। कछू सुनैन नारि बात भीमसेन योंकहैं। सरोष मोंहि देखिके कहोसुको इहांरहै ३५॥भुजंगप्रयातछंद॥ लखे कुंडनैनानि सोखौं अबैहों। सबैनागके यूथको त्रासदेहों। चल्यो धायकेनारियों चित्तशोचै। करै दुःखसों नीर नैनानिमोचै॥ ३६

(अहिलमत्युवाच) कहा कर्म कीनो मुयामें जियायो। दुहूं भांतिसों कालह्वै खानआयो। करैजो कहूं यह पराजै पिताकी। बिनाशै किधौं युद्धमें देहयाकी ३७ दुहूं भांति मोको महादुःख ह्वैहै। अभैदान मोको कृपासिंधु देहै। महां क्रोध ह्वै पवनको पूत धायो। हतेनागसो कुंडमें पैठिआयो ३८ महाक्रोध कीनो सबै ब्याल धाये। चहूंओर घेरे सबैकुंड छाये। उठ्यो कोपिके भीम धायो तहांते। भगेनागसों नैन देख्यो जहांते ३९ (दंडक छंद) एकमारे तोरिकै मरोरि मारे एकैनाग एकै मारे मींडकैकहांलौकहों करनी। एकै धाये धायकै धुकाय दये धांवतहीं धर धर धरकत एकैपरे धरनी। एकनि के कारे फन फर फर फरकत थर थर कंपभगे एकै लैलै धरनी। भागि भागि एकै गये बासुकिनरेश आगे जाय कै अकह कह बातसबै बरनी ४० (नागउवाच) चौपाई॥ आयो असुर एक अति भारी। क्योंहुं नमानत आन तुम्हारी॥ कुंडएक करिलीनो पान। मार्यो सब नागनको मान ४१ शोषन कुंड सकल कहँ कहै। पठयो काहू सोंसुधिलहै॥ बासुकि कहै असुर नहिं होई। नृपति युधिष्ठिर बंधव सोई ४२ भीमसेनहै ताको नाम। यहिथल जीत्यो तिहि संग्राम॥ वाबिन इतोबली को और। सोम बंश सुभटन शिरमौर॥ ४३॥ दोहा॥ युद्धिष्ठिर नरनाहकी देहु दुहाई धाइ॥भीमसेन कुंडननिकटसकैननियरो जाइ ४४ चौपाई॥ पाय रजायसु धाम न धायो। तुरतहि पवन पुत्र ढिग आयो॥ आनि युधि-

ष्ठिर नृपकी दीनी। कानिभीम कुंडनकी कीनी॥ ४५ (भीमसेनउवाच) जौनदुहाई देतेआई। कुंडल सकल लेतसोखाई॥कौने तुम्हैं बतायो भेद।यहमनमें बहुउपज्यो खेद ४६ पाई सुधि बासुकि उठिधाये। भीमसेन तब कंठ लगाये॥ बहुसुख संयुत लैगृहगये। अष्टकुली मनआनँद भये॥ ४७ दोहा॥ शुभघटिका शुभलग्न गनि शुभ वासर शुभबार। अहिलमती भीमहिं दई करि बिवाह सब चार ४८ पाइ दाइजो ब्याहिकै बिधुबदनीवरनारि॥ हियहुलास कीनो महा बदन मयंक निहारि ४९ बहु प्रताप पूरण कला भीमसेन ज्योंभान॥ फूलति लखिअम्बुज मुखी सबगुण रूप निधान ५० ॥ सोरठा॥ धर्म पुत्र भुवराय सहदेव सों यहकही। यह सँदेह मोहिं आय भीमहिं भयो बिलंबबहु॥ ५१ (सहदेवउवाच) गयोवीर पाताल भूपर नहीं सुभूमिपति। कौरव कर्म कराल करि भोजनमें बिषदयो ५२ ॥दोहा॥ दीनो गंग बहाइसो पर्यो पतालहि जाय॥ बासुकि तनया तिनब-री रहत तहां सुखपाय ५३ पठयो धावन भूपतब पहुं-च्यो भवनपताल॥ बोलेहो तिनसों कही युधिष्ठिर भू पाल ५४ पवनपुत्र मांगी बिदा बासुकिपै सुखपाइ॥ नाय शीश तिनको चल्यो अहिलमती सँगलाइ ५५॥ चौपाई॥ सब नागन मारग दरशायो। निकसि भीम भुव ऊपर आयो॥ धर्म्मपुत्र के आनँद भयो। कुंतीको सब दुख मिटि गयो५६ सकल अनुज मिलि आनँद ठयो। महा दु-खत कुरुनंदन भयो॥ दयो दुष्ट सुरसरी बहाई। कहो

कहांतेप्रगट्यो आई ५७ सकल जगतअपयश ह्वैगयो। अब यह सालु हमारो भयो ॥ अब कछु ऐसो करौ विचा-र। भीमसेन को सकिये मार ५८ (युधिष्ठिरउवाच) दोहा ॥ अंध सुतन को मानहति कियो सुयश संसार। गांधारी को गर्ब अब गयो बार इहिबार ५६ ॥ इतिश्री महाभारतपुराणेबिजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचिता यांभीमसेनबिवाहवर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

दोहा ॥आश्विन कृष्णा अष्टमी नर नारिन की भीर॥ पूजन गज नारिन सजे भूषन वसन शरीर १ महा मलिन कुंती भई अर्जुन निरखी नैन ॥ कहा बिसूरति माय तुम सोकहि मोसों बैन २ (कुंत्युवाच) मेरे पांचो पुत्र तुम वै सतबंधु बिचारि॥ सो लौंदा ले आवहीं सक-ल मृत्तिका डारि ३ करि गजपूजै आजु सो गंधारी सुख पाय ॥ तिनसों हमसों कौन बिधि करी बराबर जाय ४ अर्जुनउवाच) पंचपुत्र तेरे बली क्यों मलीन बिचचित्त॥ ऐरावत आनों द्विरदतेरे पूजन हित्त ५ ॥ सवैया ॥ काहे को माय बिसूरति याबिधि बाण अनेकनि अंबर छाऊं। बाट करौं शरजाल पठै नभ भूमि अकाशहि मेंट कराऊं॥ मानहतौं दुर्योधन को बल कौरवको सबगर्ब्ब नवाऊं। आनो भुजा बलसों ऐरावत अर्जुन तौ तुवपुत्र कहाऊं६ दोहा ॥ करि प्रणाम गुरुद्रोण को लीनो धनुष उठाय॥ हित ऐरावत सुरपुरी दीनो बाण पठाय ७ अर्जुन इषु देवन लख्यो कह्यो इंद्र सुनिलेहु ॥ तुम सुत मांगत तय

इरिद करोकृपा सो देहु ८ जो न देहु ऐरावतै तौ वह बरु करिलेइ ॥ अमरपुरी भटभंजि कै दुख देवनिको देइ ६ देन कह्यो वाग्य सुनी देवनि की मनुहारि ॥ क्यों धरि जैहैं स्वर्गते सो सबकहो बिचारि १० ॥चौपाई॥ सब देवन मिलि बाण पठायो । भूतल अर्जुन के ढिग आयो ॥ ऐरावत को मारग कीजे । यहि विधि वाग्य आपन लीजै ११ (अर्जुनउवाच) बाण अनेकन अंबरछाऊं । ऐरावत को बाट बनाऊं॥ इंद्रसभा में बाण पठायो । देवन इंद्रहि जाइ जनायो १२॥ दोहा॥ आज्ञा सुरपति तबदई साखि दये सुरपाल ॥ पूजाकरि पठवै इहां बाग्य याही काल १३ आयो पत्री भूमिको अर्जुन लिखिये भाइ ॥ निकसि नगरतें सुभट तब लीनो धनुष चढ़ाइ १४ करि प्रणाम गुरुद्रोण को कृष्णहिं शीशनवाय ॥ शर पंजरपूर्यो तबै लयोब्योम सब छाय १५ ॥ सवैया ॥ ब्योमको पठायो बाण प्रथम सहस्र एक दूसरे सहस्र दशस्वर्गकोपठाये हैं । तीसरे अयुत पांच चौथेलक्ष एकशर एक कोटि पांचये आकाश माहिं छायेहैं । षष्ठमें करोर दश अर्ब एक सातयें सु कहांलौं बखानों शरजालजेते धाये हैं । पूर्यो सुर लोकते धरालों शर पंजर बिलोकि अंधपुत्र शत बंधुतें सवाये हैं १६॥चौपाई॥ देखत कौतुक सब जग जाल । कौरव कुललखिभये बिहाल ॥ कौतुक बिदुर पितामह भूले । नृपति युधिष्ठिर तनमन फूले १७ अर्जुन महा पराक्रम कीनो । मित्रनि सुख दुष्टन दुखदीनो॥ सकल ब्योम शर पंजर छायो ॥ उतमै कहा मेघ जनु आयो १८

दोहा ॥ योजनद्वादश लक्षलौं शरपंजर नभ छाइ ॥
देखतही सब सुरन मिलि कही शक्र सों जाइ १९
आज्ञा लै सुरराजकी चल्यो मत्त मातंग ॥ गर्व धर्यो
शरजालको करौंकोपिकै भंग २० ॥ भुजंगीछंद ॥ धर्यो
व्योम तें गर्ब कै शक्र हाथी। किधौं मेघ कै योध के शैल
हाथी ॥ कहै बाण के पंजरे तोरिडारों। धरा में धसौं
जायके शेर पारों २१ जहां जोर करि कै करी बाण तो-
रे। तहाँइंद्र को पुत्र लै बीस जोरे ॥ चल्यो मत्त मातंग
सो भूमि आयो ॥ लख्यो मातुकुंती महा सुक्ख पायो २२
(भीष्मउवाच) न ऐसो सुन्यो मैंन नैनादि देख्यो। सुतो
में अचम्भो महा चित्त लेख्यो ॥ महाबीर आकाश को
पंथ कीनो। भयो पंथ तानाम श्रीराम दीनो २३ (अर्जु-
नउवाच) करों जू अबै मातु पूजा करी की। नकीजै क-
छू बेर एकौ घरी की ॥ तबै मात आनंद जी मांझ आन्यो।
कही को सुतौ धन्य कै द्यौस मान्यो २४ गये सर्बसंशय
सो संदेह जीके। भुजा दंड पूजे तबै पार्थही के ॥ महा
धन्य हौं पार्थ सो पुत्र जायो। दये बायने और कीनो
बधायो २५ ॥ दोहा ॥ आनँदयुत पूजा करी सब बिधि
बात बनाइ ॥ गंधारी लखि लखि तबै मनहीं मन पछि-
ताइ २६ करि पूजा मातंग की फिरि पठयो सुरलोक ॥
दुर्योधन को आदि दै भयो सबनि को शोक २७ (युधि-
ष्ठिरउवाच) धनि अर्जुन तैं राखियो लोक लोक में नाम ॥
अब नकरेंगे गर्बवे रहे सशोके धाम २८ दुर्योधन को
आदिदै भये गर्बकरि हीन ॥ नैक सुहायन धाम धन क्षण

क्षण ह्वैगये छीन २६ (गंधारीउवाच) कहाभयो सुत सो जने सरै नतिनसों काम ॥ जाये अर्जुन भीमउन धनि धनि कुंतीबाम ३० देखि पराक्रम दुहुन के लख्यो नहीं कुशलात ॥ लैहैं तुमते राज वे यह सूझति है बात ३१ ॥ दोहा ॥ लाज भई दुर्योधनैं दुश्शासनके चित्त ॥ थाके अमित प्रकाश करि कुंती पुत्रनि हित्त ३२ ॥ सवैया ॥ राज सुहाय न काज सुहाय न लाज सुहाय नहीं मन माहीं। ग्राम सुहाय न धाम सुहाय न बाम सुहाय हिये सुधि नाहीं । देश सुहाय न कोश सुहाय सुकौरव के मन रोष वृथाहीं। खान सुहाय न पान सुहाय सुहाय न पांडु के पुत्र न छाहीं ३३ (दुर्योधनउवाच) दोहा ॥ अर्जुन भीम भये बली कीजै कछूउपाय ॥ सब मिलि ऐसो कीजिये शाल हमारो जाय ३४ इतिश्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यां कबिछत्रसिंहबिरचितायां ऐरावतआगमनोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दोहा॥गंधारी भ्राता शकुनि बोलि लियो अकुलाय॥ भीषम अरु बोले बिदुर मंत्र काज सुखपाय १ (दुर्योधन उवाच) जैसेछीजैं पंडु सुत सोमति कहौ बिचारि ॥ बीचहि बोले शकुनि तब देहु गेहमें जारि २ बरुणा नगर लै कोटि रचि तामें दीजै बास॥ चहुंदिशि अगिनि प्रजारिये होय सबन कोनाश ३ ॥ चौपाई ॥ भीषम मंत्रकहन नहिं पायो। शकुनि कह्यो सो नृप मनभायो। समझो सोई कोटि करावहु। बेगहि चलो बार जनि लावहु ४

सवैया ॥ तेल भरे घट आनि धरे घृतके भरिकै घट केते सवारे। तूलदै मूलमें रार अपार सुलाख मिलेकिये गंधक गारे। अंतर सूत निरंतर काठ बनाय कै पावक धाम सुधारे। चित्रित चित्र सवारि दिवालनि देखिय सदन सबै उजियारे ५ ॥ दोहा ॥ बर्ष दिवस बीते शकुनि कह्यो नृपति सों आय ॥ सपऱ्यो मंदिर पांडुसुत दीजै तहां पठाय ६ ॥ गीतिकाछंद ॥ बोलिलीने बिदुर भीषमलै सभा बैठारियो। नृप युधिष्ठिर आदिदै सब पांडु पुत्र हँकारियो। बात भीषम पै कहाई मानि आयसु लीजिये। तुमहेत मंदिर बरया राच्यो बास तामें कीजिये ७ धर्म सुतके हर्ष उपज्यो तुरत सबरथ पर चढ़े। राज आज्ञा मानिकै युत मातु पुर बाहिर कढ़े। बिदुर साथचले पठावन सकल सिक्षाते कहैं। बैठिकै पर सदन में निश्चिन्त भूपति नारहैं ८ ॥ चौपाई ॥ अति सचेत रहियो गृह माहीं। आप उठायो तुमवह नाहीं ॥ जायबासना गृहकी लीजौ। आप सूझतौ सबकुछ कीजौ ९ पैठन पेटजु कोई आवै। सो नहिं भेद कछू लखिपावै ॥ बुधिदै बिदुर गये फिर ग्राम। पहुंचे नृप चलि ताहीधाम १० गेह प्रवेशकियो भूपाल। सनमुख छीक भई तिहिकाल ॥ सहदेव कहै सुनिये महराज। हरहु इहां नहिं नीकोकाज ११ (नकुल उवाच) क्यों न हस्तिना पुर पगुधारो। जियमें काह बिचार बिचारो ॥ कही भूप वहिपुर नहिं जैहैं। दुखसुख वीर इहां हमरैहैं १२ यह दुख बिदुर पितामह पायो। सो भ्रातनि उर आनँद छायो। बिदुर कह्यो सबतें सो

देख्यो । पावक पुंज धामसों लेख्यो १३ सावधान निशि बासर रहैं । मरम न काहूसों कछु कहैं ॥ दुर्योधन प्रतिहार बुलायो । भेद सकल दै ताहि पठायो १४ (राजोवाच) हमसों अनरस करि तुमजाहु । जहां युधिष्ठिर रहैं नर-नाहु ॥ भूलै अगिनि सो वारो धाम । करिहौ सब तुव पूरण काम १५ ॥ सुन्दरीछन्द ॥ आयसु पाय गयो वह ता थल । जाय प्रणाम कियो पलहीपल ॥ और कहे दुर्योधन के दुख । पेट विश्वास कहै हितकी मुख १६ दोहा ॥ वचन सम्हारे बिदुर के कपटी उर पहिंचानि । सबबिधि सकल सचेत ह्वै कर्यो पवरि मग आनि १७ मालतीछन्द ॥ भीम सिधायो । सुरँगखनायो ॥ बन कहँ कीनों । पंथ नबीनों १८ ॥ चौपाई ॥ हमहिं मरे ज्यों कौ-रव जानौ । ऐसे सब मिलिकै मति ठानौ ॥ भिक्षुक पंच दिवस यक आये । जननी वृद्ध संग ते लाये १९ देखि भीम यों कहै बिचारी । बनमें जाहिं इन्हैं ह्यां जारी ॥ बहुबिधि भोजन तिनहिं कराये । उत्तम ठाम तहां पौढ़ा-ये २० ॥ दोहा ॥ जबहीं बीती अर्द्ध निशि सोवत सबही जानि ॥ कही भीम नरनाहसों चलौबिपिन सुखदानि २१ सुरँग बाट सब मिलि कढ़े लै जननी त्यहिकाल ॥ लै पावक तब पौरि पर भीमहुं गयो उताल २२ ऊंक दई प्रतिहार शिर दीनी पौरि जराय ॥ महल महल परि जारिकै गयो भूप पै धाय २३ ॥ दोधकछन्द ॥ बाटलई बनको उठि धाये । मंदिर दुर्ग्गम कोटि कराये ॥ मूंदिगयो मग कोउ न जानै । जात चले थकिकै हहराने २४भीम

महीपति कंध चढ़ाये। पार्थ तबै उरसों लिपटाये ॥ बंधव दोय लये एक बारी। शीश धरी जननी सुखकारी २५ लै दशकोस गये बनमाहीं। भयजिनकेमनमें कछुनाहीं॥ धाम जर्यो सुनिकै कुरुराई। बैठि सभा बहुतै पछि-ताई२६ सुखबाढ्यो अतिही उरमाहीं। देखत लोगनके पछितार्हीं ॥ शाल मिट्यो उरको यह जान्यो। शुद्धभयो तब दैकरि पान्यो २७ ॥ दोहा ॥ नयो जन्म जान्यो तबै शतबंधव उर फूल ॥ बड़ी कृपा करता करी नशे हमारे शूल २८ उत पांडव बनको गये उतरे बटकी छांह ॥ सब सोये पहरे जगे भीमसेन बनमांह २६ नरदेही की बास लहि आई त्रिय गलगाजि ॥ नाम हिडंबी राक्षसी घोर महा बपु साजि ३० तन दीरघ दीरघ उदर दीरघ दंत कराल ॥ दीरघ मुख दीरघ श्रवण दीरघ बाहु सुबाल ३१ आई गर्ज्जत नारि वह भीम न मानी शंक ॥ तरुवर लै संमुख गयो करी न भय कछु अंक ३२ देखत साहस भीमको भई परमबपु बाल ॥ राकाशशि षोडशकला रूप लख्यो त्यहिकाल ३३ (हिडंउबीवाच) दोधकछन्द ॥ मो मन रोचक आपु न मानो। आपु त्रिया करिकै उरजा-नो॥ मैं तुम देखि बली बरकीनो। नित्तचलों तब आयसु लीनो ३४ आय हिडंब तहां तब गाज्यो। भीम इतै द्रुम लैकर साज्यो॥ को कहि नारि कहांयह आयो। भेद कछू नहिंमैं अब पायो ३५ (हिडंबीउवाच) दोहा ॥ मेरो वीर हिडंबयहकीजै युद्धनिशंक ॥ कछु बिस्मयजिय जनि करो लज्जा धरो न अंक ३६ नहिं गाजत धीरज रह्यो तेरो

बुद्धिनिधान॥यह न कछूतेरोकरै हतिबर याहिनिदान३७ (भीमसेनउवाच) चौपाई ॥ तेरो कहा भरोसो मोहिं । बीरहततरिस लागैतोहिं॥जब याकी तू होइसहाय । तब कहु मेरी कहाबसाय ३८(हिडंबीउवाच) दोहा ॥ जानति तोकों प्राणपति नहिं राखति चितऔर ॥तोसम या मेंब- ल नहीं हति हिडंब यह ठौर ३९ भयो असुर अरु भीम सों अतिगति मुष्टिप्रहार ॥ मल्ल युद्ध करि धरपरे ह्वै दोऊ बिकरार ४० निकट न पायो भीमजब जागे बंधव चारि ॥ निशिचरसों मंडत समर अवलोक्यो सुखकारि ४१॥त्रोटकछंद ॥ अवलोकत भीमहि लाजभई । तब दा- नवके भुज कंठदई ॥ बरुकै वह दानव वीर हयो । सब बंधवको बहु सुःख भयो ४२ गीतिकाछंद ॥ धर्म सुतको माँगि आयसु सीख कुंतीपैलही । तब हिडंबीभीम ब्या- ही विधिकरी जैसीचही । रहत बीते दिन किते ताबिपि- नमें सुख साजही । कंदमूलनि खात खनिखनि जीवका यों राखही ४३ ॥ दोहा ॥ रहत किते दिन जबभये ता काननके धाम ॥ पुत्र हिडंबीके भयो धर्यो घरूका नाम ४४ बीति कितेदिनतबगये तज्यो बिपिन वह ठाम॥ छाड़ि घरूका ताथली पहुंचे इकचक ग्राम ४५ रूपकप- रियाको सजे रहे एकद्विजधाम ॥ उद्यम करि भोजनकरैं सब बंधव गुणग्राम ॥ ४६ ॥ इतिश्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंह विरचितायांघरूकाजन्म वर्णनोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

त्रिभंगीछंद ॥ इकचक नगरी सबगुण अगरी कीरति बगरी सकल दिशा। पुरनर सबगाजत इहिविधिराजत साजत सीकन घोसनिशा ॥ सब कंपत थर थर बक दानव डर घरघर शोच सकोचमहा। नितप्रति नरमारैं किते सँहारैं बरणौं निशिचर कर्मकहा १॥दोहा॥ नाश जानि पुरनरसबै तबयह कियो विचार ॥ दिनप्रति दीजै एक नर चैनलहै संसार २ निशिचरसों कीनो विनय सबही मिलि तहँ जाय ॥ प्रतिदिन को तुव भक्ष हित नरयक पहुंचो आइ ३ मानि विनय प्रतिघोस को भक्ष एकनरलेहि ॥ जाको जबही औसरा सोभक्षन तेहिदेहि ४ द्विज तरुनीके धाम जहँ बसत युधिष्ठिर राइ ॥ ताके सुतको औसरो पहुंच्यो इकदिन आइ ५ ॥ सोरठा ॥ द्विज तरुनी अकुलाइ बार बार घर मूरछै। फिर फिर यह पछिताय क्योंन काल्हि यह पुरतज्यौ ६ ॥ दोहा ॥ मोहमहा देखत भयो कुंतीकेउर आइ ॥ ततक्षण वाको दुख कह्यो भीमहिपास बुलाइ ७ (भीमसेनउवाच) चौपाई ॥ याके सुतके पलटे जैहों। फिरि मिलिहों जो जीवत रैहों ॥ भोजन दानव हितजो भयो। भरिकै महिष भीम संगलयो ॥ ८ दानव ठांउ तहांचलि आयो। बैठभीम तहँ भोजन खायो ॥ धायो असुर क्रोध करिभारी। बज्रपात सम दोहथिमारी ९ ॥ दोहा ॥ मुष्टिप्रहार कियो असुर आपु शक्तिअनुसार ॥ भीमनआन्यो चित्तमें भोजन भखै अहार १०॥दोधकछंद॥मारतही सब भोजन खायो। शंकनहीं अपने उर लायो ॥ बीरदुहूं मिलिके रण

कीनो। कोउ नहीं तिन में बल हीनो ११ युद्ध भयो अति ही गति ऐसो। राघव रावण को रण जैसो॥ ग्रीव दयो पगु दुष्ट सँहार्यो। ऐंचतबै पुर बाहर डार्यो १२ दोहा॥ ठाढ़ो कीनो पँवरि पर मृतक असुर सो ला- इ॥ प्रात होत पुरनर सकल निरखि भगे अकुलाइ १३ सबही को शंका भई सकैंन नियरे जाय॥ हैदानव नि- रजीव यह कही भीम तहँ आय १४ भीमसेन ढिग जाय कै संभ्रम दियो भगाय॥ यह गति जानी ब्यासमुनि तबहीं पहुंचे जाय १५ (श्रीव्यासउवाच) पवनपुत्र मा- र्यो असुर सबजग भयो चवाउ॥ अब सिख मानो बे- गिही नगर कंपिला जाउ १६ मानि सीख ऋषि व्यास की तिहि पुर पहुँचे जाइ॥ होत सगुन सहदेत सों कही नृपति सुख पाइ १७॥चौपाई॥ कैसे सगुन भये अब भाई। सो अब मोसों कहि समुझाई॥ सुनहु गोसाईं स- गुन प्रभाव॥ होइ लाभ चित चौगुन चाव १८ आमिष लीने देख्योश्वान। गयो दाहिनो उत्तम जान॥ लीनो अ- र्जुन धाय छुटाइ॥ लाभ बहुत पहिचानो राइ १९ र- हे सुकुंभकार गृहजाय। पंचवीर सँग कुंती माय॥ यहि बिधि बीति काल बहु गयो। भूपति द्रुपद स्वयंबर ठयो २०॥ दोधकछंद॥ सोहत पंचन की अवली अति। पेखत तासुको मोहतिहै मति॥ उज्ज्वल है गज दंत म- हा छबि। जोन्ह मनो द्युति बर्णत हैं कबि २१ आय जुरे भुवके सब भूपति। है जगमें जिनकी बहु कीरति॥ कौरव सेन तहांसब सोहति। दीरघ सायर सोमन मो-

हति २२ ॥दोहा॥यज्ञ द्रुपदनृपकै भयो आये सब ऋ-
षिराइ। रच्यो द्रोण गुरु यंत्र नभ राहा बेध बनाय २३
राख्यो परम कठोर धनु मीन यंत्रके पास ॥ ह्वैहै सो
समरत्थ जग बेधै यंत्र अकाश २४ ॥चौपाई॥ तप्त तेल
सों भरो कराह। राखो नीचे तब नरनाह ॥ तरे दृष्टि
करि देखे झाई ॥ मीनयंत्र जो बेधै आई २५ ताउर
कन्या ताही काल। कही भूप यह डारैमाल ॥ बारन
चढ़ी फिरै सो बाल ॥ लीन्हे हाथ पुहुप की माल २६
(दंडकछंद) बेनी ज्यों फणीन्द्र और इंदु सो मुखारबिंद
चंपक बिलाश हास मोहत है मन को। खंजन चपल
गति भंजन हैं ऐन नैन अंजन सहित मन रंजनहै बनको॥
अधर चिवुक चारु बाहु है सुढार कुच कनक कलश रंग
कंचन सो तनको। कदलीकेखंभसे युगुलजंघ छत्रकबि
कोमलकमल जिमि बानिक चरनको२७चौपाई॥ देखि
कुमरि सब उमहे राई। करि करि गर्ब छुयो धनु आई॥
तानि सकैं नहिं सकैं उठाई। गये सबन के मुंह कुम्हि-
लाई २८ कौरव सब बंधव पचिहारे। सबही के मुख ह्वै
गये कारे। धृष्टद्युमन तब शकुनिहि देखि ॥ करत धर
षनाकुमरविशेखि२६ (धृष्टद्युम्नउवाच)सवैया॥ शूर नहीं
शूरन में कूरमहा कूरन में दुष्टता सों पूरण है पूर पुर-
बाईको। मूढ़ महा मूढ़न में गुणी मंत्र गूढ़न में पगन-
आरूढ़न में संग्रह चवाई को ॥ ऐसो अबिबेकी है कुटेव
टेवटेकी जिहि तासों एक येका जौन खोज है भलाई
को। नाहिं बली बालिन मेंछली महा छलिन में सुदेखिये

नमुख ऐसे कुटिल कसाइ को ३० ॥ दोहा ॥ बारे लाक्षा गेह में पाण्डु पुत्र यहि जाइ ॥ होतो जीवत पार्थ जो लेतो धनुष चढ़ाइ ३१ यन्त्र बार दश बेधतो महा बीर बलवण्ड । सुनि पुनि कोप्यो कर्ण तब बाढ्यो कोप अखंड ३२ (कर्णउवाच) जो मारों अब द्रुपद सुत कौन छुड़ावै तोहिं ॥ मरो मर्मना तूल है कानि भूप की मोहिं ३३ ॥ सोरठा ॥ चल्यौ कर्ण धनु पास बरजि कृष्णा तब यों कही ॥ छांड़ि देहु यह आश बेधो जाय न यंत्र यह ३४ ॥ दोहा ॥ जो बेधो इक बाण सों तौ जगमें यशहोत॥ हारे होय कलंक बहु और लाज हो गोत ३५ रूप कप-रिया को कियो अर्जुन बचन प्रकाश । नहीं सभा समर-त्थ कोउ बेधै यंत्र अकाश ३६ (द्रुपदउवाच) चौपाई ॥ कै भूपति कै तपसी होई । एहा बेध करै जो कोई ॥ ता उर कन्या तेही काल । डारै अमल कमल की माल ३७ तब चलि अर्जुन आगे गयो । धनुष चढ़ाय हाथसों लयो अति कठोर जान्यो धनु जबहीं । भीमसेन मुख चाह्यो तबहीं ३८ दोहा ॥ भीमसेन बलवंत गति अर्जुनकी पहिं चानि । कोमल करि धनु पार्थ कर दयो बारदश तानि ३९ लेधनु गयो कराह तन इकटक ताहि निहारि ॥ झांईपाई मीनकी रह्यो ध्यान उरधारि ४०दीठमूंदि मन एककरि बेध्यो सो शरएक ॥ फेरि गयोइषु दृगनि को कौतुक करत अनेक४१॥चौ०॥चूकि गयोनर एक बखानै। बेधिगयो शर एकतें जानै॥ बाल लियेकर मालहि आई । अर्जुनके तब हीउर नाई ४२ देखत कर्ण महा रिस भीनो । दारुण

कर्म महा इन कीनो लै तपस्वी अब याको जैहौ। लाज सबै भुवपालन ऐहै ४३॥ दोहा॥ कर्ण चढ़ायो कोपि धनु देखत सब भूपाल॥ निरखि शोच उरमें भयो बिकल भई उरबाल ४४ (अर्जुनउवाच) सवैया॥ चंद्र-मुखी कत शोचकरै जियगर्ब हरौ कुरुनंदन कोतो। आजु करौं छिनमें रण में जययुद्ध जुरै यम आयकै जोतो॥ हों समरत्थ अकेलोइ वे किनि सोदर जूझहि धायकै सोतो। जोन बधौं तौ लजाउं पिताकहं अर्जुन नाम कहाइहक्योंतो ४५॥ दोहा॥ कोपे दोऊ बीररण रह्यो बाण नभ छाइ॥ लोपे सूरज तमभयो उपमा कही न जाइ ४६ देख्यो करण प्रचंडरण पार्थकोपि ज्यों काल॥ रुद्रबाण बेध्यो कवच बिकल भयो बेहाल ४७ तबहिं करण छांड्यो समर जयजय करि तिहि काल॥ दुर्योधन इत भीमसों कीनो युद्ध कराल ४८ (करणउवाच) अरे कपरिया कौन तू मोसों कहि सतभाइ॥ तेरे शर ऐसे लगैं ज्यों अर्जुन के घाइ ४९ यों कहि करण बराइ गो भिरे भीम भुवराइ॥ मल्लयुद्ध करि बीर द्वउ थाकिरहे अकुलाइ ५०॥ चौपाई॥ बर करि भूपति भीम उछार्‌यो मल्लयुद्ध करि भूपरडार्‌यो॥ जयजयकार पार्थ तब कर्‌यो। सम्हर्‌यो भीम कोपि तबलर्‌यो ५१ मार्‌यो गुरज गिर्‌यो भुवराउ। ठाढ़ो भीम करैनहिं घाउ॥ चेति फेरि यों कहै नरेश। तूको सुभट तपीकै भेश ५२ दोहा॥ पवन पुत्र अरु पार्थके ऐसहुते प्रहार॥ वैसोईमैं तू लख्यो बल दीनो करतार ५३ सोरठा॥ सहदेवहु तहँ

आय गहि करलै भीमहि गयो॥ द्रुपद सुता सँग लाय पहुंचे कुंती निकट सब ५४ (युधिष्ठिरउवाच) चौपाई॥ सुनि सुनि मात महासुखदाई। आजु कछू हम भिक्षा पाई॥ तुम आज्ञा सब बांधव मानैं। सो तजि और न चित्तहि आनैं ५५ (कुंत्युवाच) दोहा॥ पांचौ बंधुन सों तुम्हें पुत्र आय बहुनेहु॥ जो कछुपाई भीख तुमबाटि सकल मिलि लेहु ५६ (अर्जुनउवाच) माता को सुनि सुखद त्रिय वचन न मेट्यो जाइ॥ मुख जोयो तब पार्थ को पंचाली अकुलाइ ५७ निरखी कुंती द्रौपदी मनहीं मन पछिताइ॥बचन अनैसो मैं कह्यो पुत्र न सकैं नशाइ ५८ आये हलधर कृष्ण तहँ जानत सगरो भाउ॥ करि कुंती को बंदना मिले युधिष्ठिर राउ ५९ तब बिचारिकै द्रुपद नृप धृष्टदुमन सुत बोलि॥ आप कपरिया को भये भेदलेहु सुतखोलि ६०॥ सुंदरीछंद॥ नीच किधौं कोउ उत्तम है नर। कैबन में कि बसैं पुर सुंदर॥ श्रीयदुनंदन भूपति है जहँ। आय दुर्यो सुत भूपति को तहँ ६१ बात बितीत कहे भुव भूपति। कृष्ण सुनी बहुधा हरषी मति॥ पूछत पार्थहियों यदु नायक। तैं सुख आजु दयो सुखदायक ६२॥ दोहा॥ एहा बेध कर्‌यो भलो सुनिहो पार्त्थ सुजान। गर्ब नवायो करण को मारे कौरव मान ६३ (अर्जुनउवाच) सवैया॥ कष्ट पर्‌यो जबही जहँ आय के राखी तहीं सब पैज हमारी। मांझ स्वयंबर द्रौपदी कैअति कर्णहि गर्व वढ्यो तहँभारी जीतिकै बीरधनंजय धीर सुआजु लई बलकै बरनारी।

कीजै कहौ सरतौ किहि भांति जो होते सहाय न आय मुरारी ६४ ॥ दोहा ॥ भलो दृढ़ानो करण रण यहै सराहेउ ताइ ॥ भीम कहै कुरुराज हरि बड़ोबली यह आइ ६५ मैं अघवायो युद्ध मैं धनि दुर्योधनराय ॥ हनतो एक निमेष जो करते सबै सहाय ६६ ॥ चौपाई ॥ धृष्टद्युम्न सदरी गति जानी। कही पिता सों सब सुख दानी ॥ वे क्षत्रीकुल उत्तम आहि। नहीं कपरिया जानो ताहि ६७ हरि हलधर तिनपै चलिआये । देत बड़ाई बहु गुणगाये ॥ यह सुनि भूपति फूल्यो हियो। बिधना सबमन भायो कियो ६८ (द्रुपदउवाच) चामरछंद ॥ साजि साजि बाजि राज मत्त दंत गाजि के। चर्मबर्म अस्त्र शस्त्र चीरद्रव्य साजिकै ॥ जायकै अवास द्वार वस्तु सो रखाइयो। देखिकै तपीनिको सुकर्म मर्म पाइयो ६९ दोहा ॥ आयसु दीनो भूपजो सोई कीनो जाइ ॥ मंडपछायो बिधि सहित मुक्तन चौक पुराइ ७० ॥ गीतिका छंद ॥ आइकै तहं पंचबंधव सकल सौजनिहारियो। नकुल लखि बाजी सराहै पार्थ धनु टंकारियो ॥ भीम फूल्यो देखिकुंजर खड्ग सहदेव करगह्यो। नृपति सब देखत सराहत हाथतिन कछु नालह्यो ७१ देखिया विधि द्वारभूपति परम सुखहिरदै भयो। है देवगंधर्व यक्षकोऊ भेष तपसी को लयो। बोलिलीने पार्थ भीतर द्रुपद नृप सुखपाइकै। तबयों कह्यो हँसि भीमजेठो प्रथम ब्याहै आइकै ७२ सुनि भयो बहु संदेह भूपति नीच कोऊ है महा। पंचजन त्रिय एक ब्याहै मूढ़ता बरनौ कहा ॥

बोलि पठये ब्यास आये कही तिनसो बिधि सबै। एक पतिहै धर्म पुत्री कही ऋषि सों यहसबै ७३॥ दोहा॥ जेठो ब्याहै जात्रियहि लहुरे कीहै माय। लहुरे कीत्रिय जेठके सुता बराबरि आइ ७४ (व्यासउवाच) सोम वंश एपांडु सुत एकजोति मन एक॥ पूरब जन्म सुरेश ए सुनिये सहित बिवेक ७५ पंचइंद्र इनवहि जनम पायो शिव बरदान॥ पांडु नृपति गृह अवतरे क्षत्री रूप निधान ७६ रवि कन्याहै द्रौपदी सेये शिवचित लाइ॥ पंचकला के देहुवर यह बांछौं सुखपाइ ७७ दिव्यदृष्टिकै नृपति को दरशायो ब्यौहार॥ देखे एकै जोति तहं पंचइंद्र अ-वतार ७८ (द्रुपदउवाच) चौपाई॥ तुम बिनको संभ्र-महिं भगावै। तब क्षितिनायक ऋषि गुणगावै॥ नृप बिवाह की सब बिधिठानी। बोलि युधिष्ठिर सब सुख दानी ७९ तिनकी भांवरि करि नरनाह। फिरि चारों का कर्‍यो बिवाह॥ दुहूं कुलनि की बिधिही जैसी। भांति भांति सब कीनी तैसी ८० पंचपुरुष को कन्या दीनी। बिदा दाइजो दैकरि कीनी॥ हय हाथी पट भूषण घने। दासी दास दिये कोगने ८१॥ दोहा॥ लैदल परिगह गृहचले द्रुपदफिरे पहुंचाइ॥ गये हस्ति-नापुर सबै आप सदन सुखपाइ ८२ सुनि दुर्योधन के भयो अंगअंग अति दाह॥ नेक सुहाय न द्यौस निशि चकित चित्त नरनाह ८३॥ इतिश्रीमहाभारत पुराणे विजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंह विरचितायांबकदानवबध द्रौपदीबिवाहवर्णनोनामएकादशोध्यायः ११॥

(दुर्योधनउवाच) दोहा ॥ ग्राम धाम अपनो लयो पांचो बांधव आय। कहो बंधु कीजै कहा इनसों कछु न बसाय १ बरुण नगर को आदिदै कीनेकिते उपाय ॥ तबहूं मुये न पांडुसुत फेरि प्रगट भे आय २ तपीभेष आये हुते भूप द्रुपद अस्थान ॥ हम काहूजाने नहीं मारे सबके मान ३ भीषम बिदुर बुलायकै बूझेमंत्र सुजान ॥ कौन उपाव करैं कहो सोमत देहु निदान ४ (भीष्मउवाच) अपकारी तुवबंधु नृप उनको कछू नखोरि ॥ महा सयानो पवनसुत अवगुण सहै करोरि ५ बरजो अपने सोदरन अवगुणकरै नकोइ ॥ अति सनेह तुमसों उनहिं ताहीदिन नृप होइ ६ (राजोवाच) दोष लगावत हौ हमैं उनको भलो सुहाइ ॥ शकुनि कह्यो यह मंत्र तबबीच बैठिकै आइ ७ कत बूझत भीषम बिदुर यहै मानि मनलेहु ॥ जो कछु उनको देशहै उन्हैं आपु सो देहु ८ गयो नृपति धृतराष्ट्र पै सुनि भूपति यह बात ॥ शकुनि कह्यो सोई कह्यो पितु के आगे जात ९ बोलियुधिष्ठिर तव कही सुनि बिनयो सो मानि ॥ रह्यो इंद्र पथजाइकै आपुग्राम उरजानि १० ॥ चौपाई ॥ मानि रजायसु चले नरेश। सुबस इंद्रपथ कीनो देश ॥ मणिमय खचित बने सबधाम। मनहुं लसत सुरपति के ग्राम ११ फटिक थंभकी जागति जोति ॥ होइसूर किरननितैं होति॥ बापी कूप सुनीर तड़ाग। दिशि दिशि दीसत सुंदर बाग १२ कल्पवृक्ष से द्रुम मनमोहैं। फूलेफलैं छहूं ऋतु सोहैं ॥ चंचल हय अतिधाम बिराजैं।तमके सुतसेकुंजरगाजैं १३

भाट भले बिरदावलि गावत। जो मन बांछित सोई पावत॥ भूप युधिष्ठिर आज्ञा होइ। चारों बंधु करत हैं सोइ १४ करत सबै आनँद मनभाये। एक द्यौस नारद मुनि आये॥ आदर करि वह आसन दीनो। तब ऋषि बचन प्रगट यों कीनो १५ तीनिहु लोक जातुहों जहां। अति आतिथ्य करत सब तहां॥ मेरो बचन न मेटै कोइ। जोई कहों वहै पैहोइ १६ (ऋषिरुवाच) तुमहो सोदर पंचसनेह। तरुणि द्रौपदी है तुमगेह॥ मिलि सब बंधव यह मनधरो। मो आगे सब बाचाकरो १७ जैलों बीति जांय षटमास। एक रहै द्रौपदी अवास॥ अवधि मांझ दूजो जो जाइ। बारहवर्ष होइ बन ताइ १८ सबही मिलि कै आज्ञा मानी। स्वर्ग सिधाये ऋषि सुखदानी॥ प्रथम नृपतिकी बारी भई। पांचाली शय्या परगई १९ द्विजकी सुरभी चोरन लीन्ही। आय पुकार बिप्र तहँ कीन्ही॥ सुनै न कोऊ लगै गुहारि। सो तब थक्यो पुकारि पुकारि २० (द्विजउवाच) छप्पै॥ क्षत्री कुलहि कहाइ आपजग अपयश लावत। सुरभी बिप्र गुहारि क्योंन तुम पापी धावत॥ कायर है कितरहे मूढ़ तुम धामनि गहि गहि। और न जानै नाम रटै यह अर्जुन कहि कहि॥ त्रीयकाज सुरभि द्विजकाज जो नहि इनको उप करहि। द्विज दोष लगै ता पुरुष कों घोरनरक में सो परहि २२ (अर्जुनउवाच) दोहा॥ रहि रहि विप्र सुजान तू जागन दै नरनाथ॥ बिनती करि तबहीं चलोंलै कृपान तुवसाथ २३ सोरठा॥ धनु न हमारो हाथधरों सदन

में बिप्र तहँ। द्रुपद सुता नरनाथ पौढ़े ताही धाममें २४
त्रोटकछंद ॥ द्विज एकहु बात न मानतु है। मुख बैन कु
बैनन आनतु है ॥ रचिकै सबबात बनाव न छोड़हु। लहि
पाप महा शिर शापहि ओढ़हु २५ डरि शापहि सो अकु-
लाइमनै। चितमें द्विजको अपमान गनै॥ नृप धामगयो
धनु बान जहां। दृग ओझिल बाह दईजु तहां २६ तबहीं
बर बीर चल्यो धनुलै। मुकराइ दई सुरभी बलुलै॥ ऋषि
नारद बैन धरे मनमें। हित तीरथ बेगि चलो बनमें २७
अवलोकि सुदेव नदी जबहीं। हित मज्जन पत्थ धर्‌यो
तबहीं॥ लखि नागसुता लगि दृष्टिरही। अवलोकि तहीं
तब बांह गही २८ गहि ताहि पतालहि लै सुगई। वह
व्यालसुता अतिमोह भई॥ तुमतो वर ईश्वरमोहिं दये।
अति निष्ठुर क्यों तुम नाहभये २९ (अर्जुनउवाच) ऋषि
नारदको हम बैनलह्यो। अब याबिधि तीरथ पत्थगह्यो॥
ब्रत भंग महा तिय अंकभरै। बहु तीरथकी हमजात क-
रै ३० यह अपने जीमहँ नेम धरौं। फिरि तो कहँ सुदरि
आइ बरौं॥ इमि ब्याल सुता तब बातकहै। इहि भांति
नहीं तुम धर्मरहै ३१ चलिहो मम बैन नशाइ जबै। पुनि
जाय अकारथ धर्म सबै॥ पुनि तासँग पत्थ बिवाह भयो।
तहँ केतिक द्योस बिरामलयो ३२ त्रिय नाम उलूपिहि गर्भ
भयो। सुत मन्मथ ज्यों अवतार लयो॥ उर तीरथकी तब
सुद्धि भई॥ कहि पत्थ तबै गहि बाटलई ३३ (उलूपी
नागकन्योवाच) सुनु प्राणपती इक बात कहौं। किहि
भांतिनि हौं कुशलात लहौं। द्रुम दाड़िम को दरशाइ

दयो। जब जानहु जू यह सूखिगयो ३४ ॥ दोहा ॥ तब सँदेह भो प्राणको कीजो नागरि नारि ॥ आयो निकसि पतालते तीरथ हेत विचारि ३५ ॥ सोरठा ॥ नैमिषार चलिजाय परसि बनारसको गयो ॥ वाराणसी अन्हायगया तृप्त कीन्हे पितर ३६ ॥ दोधकछंद ॥ सागर संगम गंग गयेजू। द्यौस किते बनमें बितयेजू। न्हाइतबै मथुराहि चलेजू। देखत आश्रम कुंड भलेजू ३७ न्हाय न ता जल में नरकोई। जाय लखै फिरि आवत सोई॥ बिप्रन को लखि पार्थ कही यों। पैठत कोउ न मध्य कही क्यों ३८ (बिप्रउवाच) यामें जंतुरहैं अति भारी। सो जगजीवन को दुखकारी॥ पार्थ नहीं कछुत्रास कर्योजू। लै पगता जल माझ धर्योजू। ३६ आय गह्यो पगता छणपाहीं। अर्जुन के उर भय कछुनाहीं॥ लै जलते वह बाहर आनी। ह्वैगई सो त्रिय रूप सयानी ४० अर्जुन सों यह बैन कह्योजू। शापदियो ऋषि पाप गयोजू॥ ता जलते तिय पांच कढ़ीयों। मानसरोवर इंद्र त्रियाज्यों ४१ ॥ दोहा ॥ पांच त्रियनि को मोक्ष करि चलि अर्जुन बरवीर। तज्यो द्वार मग तब गयो मानिकपुर रणधीर ४२ ॥ सोरठा ॥ त्रिया बाहुबर बाहु जीत्यो छिति मंडल घनो ॥ राजैं तहँ नरनाह सकल जगत को कामतरु ४३ ॥ दोहा ॥ ताके दुहिताइंदुमुखि चित्रांगदा सुनाम। रूप बहिक्रम उरबसी बिज्जुलता सी बाम ४४ ॥ सोरठा ॥ कनक बरण तन ज्योति लसत नीलपट ओट ज्यों ॥ जगर मगर द्युतिहोति मानो घनमें दामिनी ४५ नाहि निमिष इक ताकि त्रिकल

सकल जिय कल नहीं ॥ रही पार्थ मनि थाकि करी बसीठी बंदि जन ४६ ॥ गीतिकाछंद ॥ जाय नृपकोतब जनायो ब्याह अर्जुनको भयो। सनमान दंती दियेबाजी द्रव्य बहु कंचन दयो ॥ चारि बर्षहि रहे ताथल पुत्रइक अर्जुन लह्यौ। जाहुंतीरथ जातको नरनाह सों तिन यों कह्यौ ४७ नायमाथो भूपको चलि द्वारकानगरी गयो। पाय सुधिआये कृपानिधि दुःख सब के उरभयो ॥ रुक्मिणी दै आदि सब त्रिय ताहि भेटन आइयो। चली कौतुक हित सुभद्रा निरखि बहुसुखपाइयो ४८ सोरठा ॥ चंचल नैननि ताकि झीने पट चहुं दिशि लखिन। रही पार्थगति थाकि परि फंदा तरफै सफर ४६ ॥ दोहा ॥ नख शिख सकल बनी ठनी करै सकल श्रृङ्गार। धीर रही नहि पार्थ उरब्याकुलतन न सम्हार ५० चौपाई ॥ सबहि सुभद्रा अर्जुन देख्यौ। अपनो पति करि उरमें लेख्यौ ॥ शिव सेवाको यह सब सार। दीजोमोहिं पार्थ भरतार ५१ यहसब बिधि श्रीहरि पहिंचानी। तब यह अपने उरमें आनी ॥ गर्भ सुभद्रा को यहभयो। जठर बासु अहिदानव लयो ५२ दीजै पार्थहि मिटै कलंक। श्रीहरि आनी यहबुधि अंक ॥ बोलि पार्थ सों यह तब कही। बसि तुम मनहिं सुभद्रारही ५३ मैंआज्ञा दीनी हरि लेहु। पाछे ह्वैहै अधिक सनेहु ॥ हरी कुमरि अर्जुन सुखपाय। भई शुद्ध अंतहपुर जाय ५४॥ दोहा ॥ कोप भयो बलभद्र को अब अर्जुन कित जाय ॥ लाऊं गहिकै द्वारका छांड़ौं भीख मंगाय ५५ कोपि चल्यौ

सजि सेन बहु बरजे श्रीहरि आइ ॥ को पारथ के सरस हैं क्यों रण जीत्यो जाइ ५६ हारे होय कलंक कुल जीते हूयश नाहि । ताते कोपहिपरिहरो चलौद्वारकाजाहिं ५७ (बलभद्रउबाच) तेरी यह करतूति सब कछू न जानी जाय ॥ फेरि नकछु उद्यम कियो बैठि रहे अरगाय ५८ आये अर्जुन इंद्रपथ भूपति बहु सुखपाइ ॥ लई सुभद्रा गेहमें मंगलचार कराइ ५९ पुत्रबधू कुन्ती लखी बहुविधि करि आनंद ॥ शुभलक्षण गुण आगरी मुख द्युति राकाचंद ६० ॥ चौपाई ॥ यह बिचार श्रीहरि जू करयो । सबही सों ऐसे अनुसरयो ॥ चलौ इंद्र पथ जैये भाई । जाय पार्थकों करैं सगाई ६१ लीने गज रथ तुरी तुषार । जात रूप भूषण भंडार ॥ हरि हलधर सबसंग लिवाई । पहुँचे बेगि इंद्रपथ आई ६२ पार्थहि बिहँसि सुभद्रा दई । भामरि पारि रीति सब ठई ॥ हस्ती हय रथ भूषण दीने । याचक सबै अयाची कीने ६३ दोहा ॥ करी बिदा बलभद्र की नगर द्वारिका हेत ॥ आपु कृपा करि हरि रहे भूपति के संकेत ६४ गर्भ सुभद्राको भयो पुत्र कला जनु चंद्र ॥ नाम धरयो अभिमन्यु तब कीन्ह परम आनंद ६५ द्रुपद सुताके पंचसुत प्रगट भये सुख कारि ॥ मात एक पितु पांचते पांचहु की अनुहारि ६६ दुरयोधन संशय कियो रची कहा करतार ॥ हते अकेले पंचवे अब बाढ्यो परिवार ६७ ॥ इतिश्रीमहाभारत पुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायांसुभद्रा बिवाह बर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

सोरठा ॥ खेलत पासेसार अर्जुन कृष्ण अनंद सों ॥ डारत दाँव हँकारि अपनो अपनो भाषिकै १॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ धर्‌यो बिप्रको रूपयों अगिनि आये। दुखी दीन ह्वैकै महारोग छाये ॥ तहाँ आयके दीनबाणी बखानी। हरो पीर मेरी महादुःख दानी २ कहै अग्नि मोको क्षुधा नेक नाहीं। दया आप कीजै महा जीव माहीं ॥ किते यत्न करि इंद्रको बिप्र जार्‌यो। महा कोपिकै नीरसों बोरि मार्‌यो ३ सबै औरको मैं भरोसो नशायो। चल्यो हौं अबै रावरे पासआयो ॥ चरोंकाननै इन्द्रको बीरजैसो। महारोग नाशै करो काज तैसो ४ चले कृष्णजू पार्थ को संग लीने। बनै जारिबे को सबै काज कीने ॥ तबै अग्निसों पार्थ बाणी बखानी। धनुर्बाण नाहीं सुनो सुःख दानी ५ दोहा ॥ अछय तून दीनो अगिनि आप काज पहिचानि ॥ दियेधनुष गांडीवतब नंदघोष रथआनि ६ साजि दियो रथ अर्जुनहिं तबहीं श्रीयदुराय ॥ पूरब दिशि पठयो सुभट पावक साजे जाय ७ आपरहे पश्चिम दिशा छाइ लई दिशिबान ॥ जीव जंतु ता विपिन में भाजि न पावैं जान ८ पूरबतें साजीअगिनि अर्जुनपरम प्रचंड ॥ दीन शब्द रोवैं सबै सावजु पक्षि अखंड ६ जीव पुकारें दीन रट सुनि सुरपतिसुखदाय ॥ तुव बनजारैअगिनि यह यहकत तोहिं सुहाय १० प्रलय कालके मेघजे ते बोले सुरराय ॥ कोटि छानबे एकसँग बरसहु बन पर जाय ११ उनै जो आये मेघनभ तम चारोंदिशि छाय॥ बर सोहै लखि पार्थतब लीनो धनुष चढ़ाय १२ ॥ सवैया ॥

धायकै पार्थ चढ़ायलयो धनु छाय लयोवर अंबर बानन। दौरि दवागिनि लागि उठी द्रुमजारत शाख समूल सपानन। कोपि महा मघवा बरस्यो कहुं एकहु बूंद न भीजत कानन। व्योम बिलोकत अद्भुत कौतुक किन्नर यक्षचढ़े सुबिमानन १३ ॥ दोहा ॥ द्वादश योजन लौं बिपिन करैं बूंद नहिँ एक॥ कोटिछानबे जलद मिलि उद्यम करैं अनेक १४ शशा स्यार सावर सुवर सेही सिंहसँकोच सारो शुक सोना सबै सकल सचानन शोच १५ चिरा चील्ह चिमगादरैं चातक चक्र चकोर ॥ रजत न उबरत जीव सब बचत न काहू ओर १६ ॥ दंडकछन्द ॥ धाय धाय मेघ बर छाय छाय क्षिति पर बरसि बरसि हरि भागे भहरायकै। झरपि झरपि झर तड़पि तड़पि तहाँ जित तित नीर गये ढारि ढहरायकै। तरु तरु लगि आगि बरत न उबरत भागि भागि पक्षी पशु बचे न परायकै। छत्र बलवंत वीर पार्थको अनंत बल अगिनि तृपतकियो कानन जरायकै १७॥ दोहा ॥ सुनि सुनि बनकी यह दशा तब कोप्यो सुरराय ॥ हन्यो वज्र बाणावली टूटि परी खहराय १८ ॥ चौपाई ॥ अर्जुन बाण लये फिरि छाई। बूंद न परत कहूं बन आई ॥ शर पंजर तोर्यो दश बार। जोरे पार्थ वहै आकार १९ यहि बिधि बन खांडवहि बरायो। भग्यो मयासुर दानव आयो ॥ राखु शरण यह असुर पुकारै। मोहिं अगिनियह जारैमारै२० दई दिलासा राख्यो सोय। छांड़ि त्रास तो हतै न कोय॥ असुर कहै सुनु पार्थ सयाने। तेरे कर्म्मन जाय बखाने२१

(मायासुरउवाच) दोहा ॥ जितने त्रिभुवन में असुर हों तिनको श्रुतिधार ॥ जब चाहैं तब आयहौं करों काज सब सार २२ बिदाकरी अर्जुन सुभट असुर चल्यो सो धाम ॥ पुरई पावक कामना सब बिधिकै गुण ग्राम २३ आये सुरपति पुहुमि में बिग्रह सकल नशाय ॥ सुतहि देखि कछु सुखभयो कछु मनमें पछिताय २४ इन्द्र सिधाये सुरपुरी चले पार्थ गृह आप ॥ चले इन्द्रपथ कृष्णजू जिनको अमित प्रताप २५ निरखि युधिष्ठिर भूप तब कही परमसुखपाय ॥ श्री यदुराय प्रताप तेतैं जीत्यो सुरराय २६ गहि है कोऊ धनुष नहिँ तोको सुनि बलवंड ॥ पूरि सुयश धर पर रह्यो सप्तद्वीप नव खंड २७ द्वारावति को तब गये बिदा भये यदुनाथ ॥ इस भूपति के निकटही शोभित बंधव साथ २८ (युधिष्ठिरउवाच)सोरठा ॥ रचिये धाम बनाय उत्तम दीखेदूरिते ॥ बहुबिधि चित्र कराय धवल नवल कीनी सभा २९ (अर्जुनउवाच) चौपाई ॥ जो तुम भूपति आयसुपाऊं नाम मयासुर बेगि बुलाऊं ॥ (राजोवाच) बेगिहि बंधव ताहि हँकारो । उत्तम उत्तम धाम सँवारो ३० सुद्धि मयासुर की उर आनी । आय गयो तबहीं सुखदानी ॥ आवतही तिन भूपति देखे । धर्म्मधुरंधर चित्र विशेखे ३१ इति श्रीमहाभारतपुराणे बिजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायांइंद्रबनखांडीवदहनोनामत्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥

इतिआदिपर्बसमाप्तः॥

अथ सभापर्व कथनं॥

दोहा॥ धर्मधुरंधर तिहि छिनक धर्मसुवन भुवभूप॥
कही मयासुर असुर सों कीजै सभा अनूप १॥ नगस्व-
रूपिणीछंद॥ नवाय शीश बेगि कै। चल्यो सुबीर चेत
कै॥ समुद्र पास सो गयो। सुधाम शीश कै लयो २
दोहा॥ हरनाकुश को सदन सो लीनो तिन धरि शीश॥
लै आयो सो इंद्रपथ लखि फूले अवनीश ३॥सवैया॥
सुंदर लीले रँगीले खरे अरु पीरे हरे रचि धाम बनाये।
माणिक लालनिके बहु जाल प्रबालनि के खचि थंभ
सुहाये। स्वच्छ शिला जनु दीखत नीर बने चकवा जनु
पैरत धाये। है अमरावति तें अति अद्भुत सुंदर सदन
सबै छवि छाये ४॥दंडकछंद॥ शोभाही के सार तहाँ
फाटक किवार बने केते द्वार द्वार जिनै देखे बुधि भरमें।
दिये हैं कि दिये हैं बिचारत ही भूलि रहै जानिये सनीर
पै नीर नाहीं सरमें॥ धामनि के बीचनि धरीं चनि मरीचि-
कानि राजति है नील मणि छत्र घर घरमें। भूप की
सभाकी आभा कौन सों बखानि कहै ऐसी द्युति नाहीं
कहूं इंद्रके नगरमें ५॥दोहा॥ पट दीने से देखिये दिये
न पट तिहि द्वार॥ जे सरवर हैं नीरयुत पृथ्वी के आ-
कार ६ मन भायो दैके सबै गयो मयासुर गेह॥ भूपति
बैठे तिहि सभा बंधुन सहित सनेह ७॥चौपाई॥ ऋषि
नारद भूपति पै आये। निरखि सभा बहु बिधि गुण
गाये॥ ऐसी सभा न मैं कहुं देखी। सब ठामनि में उ-
त्तम लेखी ८ (ऋषिरुवाच) सवैया॥ किन्नर यक्ष पुरी

अवलोकत धर्म पुरी अवलोकत फीकी। भोगवती अवलोकि सबै सु बिलोकि सुरेश पुरी सुरही की। भूपति भूपन के धन धाम बिलोकि फिर्यो न भई रुचि जीकी। और सभा न सभा सम लागति रावरी आहि सभा अति नीकी ९ (राजोवाच) दोहा॥ तीन भुवन की बात सब जानत हौ ऋषिराय॥ सुद्धि कहो नृप पांडु की मोको सकल सुनाय १० (ऋषिरुवाच) चौपाई॥ सुनि अवनीपति बहु सुख दाई। एक बात पै कही न-जाई॥ निरखत पंडुहि भयो सशोकू। भई कुमृत्यु गयो यमलोकू ११ यज्ञ करो मिटिहै सब दोष। पांडु महीपति पावैमोष॥बिलखै भूपति बहुदुखपाइ।दै उपदेश चले ऋषि राइ १२ यज्ञ राजसू भूपति कीजे। भूप जीति जगमें यश लीजै॥ यज्ञ बिधान सकल अनुसरै। एक राय ते रक्षा करै १३ चंदन गारे क्षितिपति एक। एक ते लावै समिध अनेक॥ सहस्त्र धेनु सुबरन युत देहु। पितुको तारि जगत यश लेहु १४ भूपति के मन चिन्ता आई। जिनके श्रीहरि सदा सहाई॥ यह कहि नारद स्वर्ग सिधाये। सुमिरे भूपति श्रीहरि आये १५ ऋषि उपदेश महीप सुनायो। यज्ञ करो उन मोहिँ बतायो॥ श्रीहरि कह्यो मतो यह कीजे॥ जीतहि जरासंध यश लीजै १६ तिन नरमेध यज्ञहै नाध्यो।ताहित भूपतिको गण बाँध्यो॥एक घाटिसौ अधिपति रोके।परे बंदितें मह सब सोके १७ मारि ताहिहौं बंदि मिलाऊं।शोकवंत सब भूपछुटाऊं॥ भीमसेन अर्जुन सँग लाये। रूप कपरिया

के तिन ठाये१८ नगर राज गिरि चलिते गये । दुर्गम ठाम बिलोकत भये ॥ मध्य नगरके लागे जान। बाजन बाजे हने निशान१६ यज्ञ थली भूपति हो जहां। लागे जान सबै मिलि तहां ॥ रक्षक हुतो मल्ल तिहिं द्वार । बिन बूझें क्योंचले अगार २०॥ दोहा ॥ तिनकर पकर्‌यो भीमको दाहन क्योंहूंजान ॥ तुमसों कछु सरवर नहीं कहत न बनई आन २१ भिर्‌यो मल्लसों भीमसों कीनो अदभुत युद्ध ॥ पवनपुत्रके उरहन्यो मुद्‌गर बहु करिक्रुद्ध २२ लरखराय भूतल गिर्‌यो पार्थपछार्‌यो आइ ॥ चेति भीमकरि क्रोधअति हन्यो गुरजउर धाइ २३ फेरिबली बरबाहु बल डारी भुजा उखारि ॥ कर्‌यो दुष्ट सो प्राणबिनु फटिक शिलासोंमारि २४ कर्‌योप्रणाम महीपको यज्ञ थलीमें जाइ ॥ देखतही सन्देह करि यों बोल्यो भुवराइ२५ आय तपीके भेषतुम देखत बहु बल वंड ॥ माँगो जो मनकामना सोईदेहुं अखंड२६ (श्रीकृष्णउवाच) दोधकछंद ॥ माँगत युद्ध महीपति दीजै । जीमहँ और बिचार नकीजै ॥ तीनहुमें जोआयसु पावैं। सोई तुमसों जूझन आवैं २७ भूपति कृष्ण तहीं पहिचाने । बैनतबै यहिभाँति बखाने ॥ मोसँग बार अठारह हार्‌यो। मैंफिर तूतब देशनिकार्‌यो २८ अबन युद्ध मंडों सँग तोहीं । तू रण पीठ दिखावहि मोहीं॥ कोमल गात धनंजय देख्यो। युद्धन तामहँ चित्तहि लेख्यो २६ भीम घड़ी एक युद्धहि सैहै। फेरजुर्‌यो कत या पै जैहै॥ भूपति रोष महा उरआन्यो। कोपित भीम चढ्यौ सुखमान्यो ३०

सोरठा ॥ जुरे युद्ध दोउवीर मानहुं गजमाते फि-
रत। शूर समर रणधीर मनहुं शिषर दोउ शैलके ३१
दोहा॥ भिरत नकोऊ हारही दोऊ समर प्रवीन ॥ लट-
पटाइ गिर गिर उठत दोऊ रोषनलीन ३२ हनी भीम
भूपाल शिर भईगदा द्वैखंड ॥ जरासंध तब क्रोधकरि
गह्यो सुभट बलवंड ३३ फेर्यो गहिकै चरण बिबि
तीनबार भुवपाल ॥ फेरिगदा करमें लई प्रगट्यो बचन
कराल ३४॥ चौपाई ॥ तूजानै कौरव सौभाई। मोसों
तेरी कहा बसाई॥ कै अब समर छांड़ि भजि जाउ। बज्र-
पातको ओड़ौ घाउ ३५ योंसुनि पार्थहि चिंता आई।
कहाहोइ जहँ कृष्ण सहाई॥ फिर रण कोपे दोऊवीर।
रणमें उद्यत कोप गँभीर ३६ जरासंध बहु बरुकरि धाइ
लत्ता हन्यो पवन सुतआइ॥ सत्त पौंडपै पर्यो सुजाइ।
रही विकलता मुखपै छाइ ३७ जय जय करिकै उठ्यौ
सम्हारि। हरिको मुख निरख्यो सुखकारि ॥ झुकिकै
कृष्णदई तब सैन। तिनुका फार्यो देखतनैन ३८ समुझि
सैन कोप्यो बलवीर। दूनो ह्वै गयो फूलिशरीर॥ जरा-
संध भुव पटकिपछारि। कीनो फाँक बीचते फारि ३९
सोरठा॥ सगरे राजा राय मुकराये तब बंदिते॥ छूटि चले
सुखपाय जो पक्षी पिँजरानिते ४०॥ छंद॥ (राजोवाच)
जयजय नँदनंदन दुष्टनिकंदन जय जगबंदन गरुडासन।
भवभय मोचन जनमन रोचन दुःख बिमोचन भव
नासन॥ सज्जन मन रंजन दुष्ट निकंदन परम निरंजन
जगकरता। कष्ट निवार्योदुष्ट सँहार्यो मार्यो लोकनि

के हरता ४१ ॥ दोहा ॥ हरि गुण गावत भूप सब गये आपने धाम ॥ जरासंध सुत बोलि कै दुरासंध वहि नाम ४२ नगर राज गिरि को तिलक कीनो ताके शीश। अर्जुन भीमहि संगलै चले तिहूंपुर ईश ४३ (दुरासंध उवाच)॥ छप्पै ॥ कैटभमधु मुर हरण धरन नख अग्र शैल बर। हिरनाकुश हिरनाक्ष हरण प्रभु रदन धरणि धर ॥ शंखासुर संहरण हरण हरि अंध कबंधहि। खर दूषण बपु भंजि गंजि भंजन दश कंधहि ॥ गज राज काज प्रहलाद ध्रुव दयासिंघु अशरण शरण। नमो नमो कबि छत्र कहि सुनारायण जगउद्धरण ४४ ॥ दोहा ॥ चलि हरि आये इंद्रपथ ताको दैकै राज ॥ भूप युधिष्ठिर सुखभयो भये सकल मनकाज ४५ (श्रीकृष्णउवाच) पठयो बंधव आपने जीतिहि चहुं दिशि देश ॥ गये कृष्ण तब द्वारका यह कहि कै उपदेश ४६ इतिश्री महाभारत पुराणेविजयमुक्तावल्यांकबिछत्रबिरचितायां जरासंधयुद्ध बर्णनोनामचतुर्द्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

दोहा ॥ करीकृपा चारों अनुज भूपति लये बुलाय॥ कह्यो करो सब दिग्विजय दिशि दिशि जीतहु जाय १ भीमसेन पूरब गये उत्तर पार्थ सुजान॥ सहदेव दक्षिण गये पश्चिम नकुल पयान २ दिशिदिशि जीते जायसब आने बाँधि महीप ॥ कीरति सो छाई धरा थल थल जंबू दीप ३ ॥ चौपाई ॥ सब बंधव नृप अंक मिलाये। समदे नकुल द्वारका धाये॥ करी बिनय कृष्णहि लै आये।

नगर इंद्रपथ भये बधाये ४ आये दुर्योधन गुण ग्राम। अतुल रूप ताको संग्राम ॥ कीने सकल यज्ञ के साज। बोले तहां सकलऋषिराज ५ ॥छप्पै॥ आयेगौतम व्यास अत्रि पाराशर आये। विश्वामित्र बशिष्ठ गर्ग शृंगीऋषि धाये। बालमीकि दुर्व्वास जासुमति पार न लहिये। बहुरि सुभद्रक द्रोण और नारद मुनि कहिये। कबि छत्र अठासी सहस ऋषि सकल जुरे भूपति भवन। यज्ञस्थल लागे सबै वेद ध्वनि द्विज उच्चरण ६ ॥ सोरठा ॥ भूपति के चित चाउ रक्षक कीने सब नृपति ॥ दुर्योधन भुवराउ भंडारी शोभित तहां ७॥ दोहा ॥ जहां चाहिये एकतहँ द्वै दुर्योधन दानि॥ रीतोहोय भँडारज्यों सोराजै मतजानि८ जितोलुटावैभूप धन दूनो दूनो होइ ॥ देखि भर्यो भंडार तब भूलि रह्यो सबकोइ ९ ॥ चौपाई॥ कीनोगर्ब युधिष्ठिर राय। कौन आजु मेरी सरआय। धरिहौं जाको भर्यो भँडार। यहै सकल बस्तुनमें सार १० कीनोगर्ब कृष्ण जब जान्यो। यह बिचार अपने उर आन्यो॥ कर्ण राय भंडारी कीनो। बेगि द्रव्य ह्वै गयोजो हीनो ११ सोरठा ॥ चिंताकरि नरनाह बिश्वंभर सों यों कही॥ सुनिये त्रिभुवन नाह रीता भयो भँडार सब १२ (श्रीकृष्णउवाच) दोहा ॥ तैं कतकीनो गर्ब मन कमल हस्त कुरुराय ॥ घटै घटावै द्रव्य नहिं जो वहदेइ लुटाइ १३ दंतकरण के कँपिउठे शंके गिरिवर मेर ॥ हैं कुरु राजहि करणको इतनोई नृप फेर १४ आज्ञा अर्जुनको दई लंका को तुमजाउ ॥ जीति लंकपति को सुभट बहु सुबरण लै

आउ १५ ॥सवैया॥ धायकै जाय चढ़ायलयो धनुसागर बाणनि छायलयोई। कौरवमें बहु बाहु पराक्रम मारगलंक को बीरकियोई। पायकैगर्ब निशाचर नाथको घोरअदगड- नि दंड दियोई। कोसरि दीजिये देवअदेव सो पार्थ समा- न न और बिगोई १६ ॥ दोहा ॥ आन्यो कंचन बीर बहु फिरि यह कियो बिचार॥ कौरव कर फिरि सौंपियो धर्म- पुत्र भगडार १७॥ सुंदरीछंद ॥ पूजन यज्ञ कर्यो भुव राय। भीम कह्यो उठि कै सुखदाय। आयसु देहु सबै अबनीको। कौनके भाल करैं अब टीको १८ ॥ दोहा ॥ यह बनिआई सबनको कही सुखद सुखपाय ॥ प्रथम तिलक हरि शिर करो ये प्रभु त्रिभुवन राय १६ बैठ्यो तहँ शिशुपाल नृप झुकिबोल्यो यों बैन ॥ कहो कहां को भूप यह कहत तिलक शिरदैन २० ॥ चौपाई ॥ गैया राखत जन्म सिरानो। ताको नाम कहामुख आनो ॥ कौ- रव आदि महीपति जहां। हरिको देत मानकत तहां२१ जरासन्ध छलिकैजिन मार्यो। मैंहूंअब यहमंत्र बिचार्यो॥ मारों याहि बैरसो लेहुं। रहन गेहहों याहिन देहुं२२द्रव्य इतेमें चाह्यो और। अलका गये पार्थ शिरमौर। जीत्यो धन प्रति तिनबर जाइ। मिल्यो पार्थ को माथोनाइ २३ कंचनमणि गण माणिक जाल।दीनीचन्द्र बदन बहुबाल॥ तब सुख सदन बीर चलिआयो। नृपति युधिष्ठिर हरि सुख पायो २४जबतें टीको हरि शिर सुन्यो। करि करि क्रोध शीशतिन धुन्यो ॥ बारबार अन उत्तरकहै। श्रीपति सन्मु- ख बैठ्यो सहै २५ ॥ सवैया ॥ एककही सद बीसकही

कहिसौंहूतें जाबिधि आगारि नाखी। देव अदेव सबै नर देव जिते क्षिति देव भये सब साखी॥जेतिक चूक क्षमी हुती कृष्णजहीं मर्य्याद हुतै बढ़ि भाखी। चक्र हन्यो शिशुपाल के शीश सभा मह रंचक कानि नराखी २६ दोहा॥ सब के उर शंका भई सब कंपे भुवराय॥ जय जय जय भाषत भये जय जय त्रिभुवन राय २७ प्रथम तिलक हरि शिर कर्‌यो फिरि भूपन के शीश॥ विधि सों सब पहिराय कै कीने बिदा क्षितीश २८ इतिश्री महाभारतपुराणे बिजयमुक्तावल्यां कबिछत्रसिंह विरचितायां शिशुपालबधबर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः॥ १५ ॥

सोरठा॥ दुर्य्योधन भुवराय न्योति बुलाये इंद्र पथ॥ कर्ण सहित सुख पाय आदर कीनो धर्म सुत १ सुंदर मंदिर चाहि भूलि रहे कौरव सकल॥ जनु अमरावति आहि आखंडल सो धर्मसुत २॥ दोहा॥ जब भीतर को नृप चले सरवर सों चितचाहि॥ जानत अमित अगाध जल पै तहँ नीर नआहि ३ बसन उठाये आप नृप धर्‌यो फटिक के ताल॥ गयो गर्ब सो सदन लखि भयो बिकल बेहाल ४ आगे सरवर बावरी नीर नपरै लखाय॥ जानि भूमि धोख्यो पर्‌यो। जल अगाध में जाइ ५ दरवाजे दीनेहुते उज्ज्वल फटिक कपाट॥तिहि मारग अवलोकि कै लीनी सोई बाट ६ तामारग कुरुराज के लागीचोट लिलाट॥ तबआगे सहदेव ह्वैनृपहि गहाई बाट ७ निरखि भूपकी यह दशा पंच बीर मुसकाइ॥ अरु

हँसि द्रुपदसुता गई रह्यो नृपति मुरझाइ ८ हिमकर हत जैसे नलिन त्यों भूपति मुख देखि। उतराये भीजे बसन आदरकियो बिशेखि ६ बैठारे भूपति सभा धर्मपुत्र तिहि काल॥ रच्यो अखारो नृत्य को बोलि गुणिनके जाल १० आनी अर्जुन जीतिकै उत्तर तें जे बाल॥ भीम जीति पूरब लई ते आईं तिहि काल ११ जीति नकुल सहदेव वर आनीही जे नारि॥ नृत्य हेत आगे नृपति ते सब लई हँकारि १२॥ सोरठा॥ नृत्यत त्रिय बहु भाय सुरपति रति उलथा सहित॥ उपमा दीजै काहि मानहुं रंभा उरबशी १३ इंद्रपुरी समसो सभा धर्मपुत्र सुरराय॥ नृतत त्रिया मनु मेनका तिलोत्तमा छबिछाय १४ चौपाई॥ देखि सभा आये ज्योनार। जेंवत षटरस भोजन सार॥ भांति भांति के ब्यंजन आने। नाम कहाँ लगि कौन बखाने १५ जेंइ उठे तब दीनो पान। गये गेह तब बुद्धि निधान॥ महा मलिन मन कछु न सुहाइ। सब बंधुन सों कह्यो बुलाइ १६ पांडु सुतन को कह मत कीजै। कहो तो देश निकारो दीजै॥ भारत सब बिधि मेरो मान॥ देश तजें सो करो सयान १७ चलि धृतराष्ट्र भूप पै गये। पंडुसुतन बहुधा दुखदये॥ तब जैहैं पितु मोर अँदेश। पांचो बीरन छूटै देश १८ (धृतराष्ट्रउवाच) दोहा॥ जब पांचों बालक हते दीने देश निकारि॥ भ्रमत फिरे बन बीथिकनि रह्यो सहाय मुरारि १६ मन न बिचारो दुष्टता कारज भलो न एहु॥ कह्यो मान मेरो उन्हें जीवदान किन देहु २० यों सु-

निकै उतरे नृपति आये अपनेगेह ॥ शकुनि दुशाशन कर्ण तहँ बोले सहित सनेह २१ दुष्ट चौकरी जुरि तहाँ कहै बिचारि बिचारि ॥ सो कीजै पांचौ अनुज दीजै देश निकारि २२ (शकुनिउवाच)मंत्र बिचारयो एक मैं आपु मानि मन लेहु ॥ भूप हरावो यूप में देश निकारो देहु २३ जो बिरंचि उनको करै यहि थल आनि सहाउ ॥ भूप जीति हौ आपुवै लहै न क्योंहूं दाउ २४ ॥ दोधक-छंद ॥ मंत्र मही पति के मनमान्यो ॥ सत्य यही अपने उर आन्यो ॥ भीषम कर्ण तहां तब बोले। बुद्धि कपाट हृदय के खोले २५ द्रोणहिं आदि सबै चलि आये। भेद सबै तिनको समुझाये ॥ ऐसो मंत्र कछू प्रति पारो। भूप युधिष्ठिर देश निकारो २६ (बिदुरउवाच)॥दोहा ॥ जौ लगि उनको भूप सुनि त्रिभुवन नाथ सहाय। तौ लगि काहू की कछू कैसहू न बसाय २७ (द्रोणउवाच) ॥दंडकछंद॥ देखिकै परायो कछु कीजिये न अनरायो दाये बिना दायो किये ह्वैहै महा हानिये। ऐसो अबिबेकीहै कुटेव टेव टेकीजिहि नेकहू तौ त्रास हरिजूको उरआनिये॥ साजतु है काज तू कसाई अघदाई कैसो ह्वै है अपयश यह नीके उर आनिये। बंधुन सो कीजै मोह द्रोह उर कोह छांड़ौ कीरतिकलित जाते भूतल बखानिये २८ दोहा ॥ पर द्रोही अरु कृतघनी ते अंतक सब होत। दीजत नर्क अघोर में जिते सँहारत गोत २९ सुनि नृप महि उत्तर दियोबचन कह्यो गुरु थोर ॥ शरसों लाग्यो चित्तमें चितये भीषम ओर ३०(भीषमउवाच)खेल कपट

को नाश जो ह्वैहै मूल बिनाश ॥ बाढ़ै वंधु बिरोध अति ह्वैहै जग उपहाश ३१ ॥ छप्पै ॥ बिनशै सोईधर्म जहँापाषंडहि कीजै। बिनशै सोई प्रीति जहां हाँसीमन दीजै ॥ बिनशै सोई पुत्र लाड़ माता पितुमंडहि। बिनशै सोई बंश आप कुल करनी छंडहि ॥ बिनशै साधन वेग ही धनहोते जोऋणकरै। छत्रसुमति मारग चलो कुमति कलह नृप परिहरै ३२ बिनशै सोई बिप्र जोन षट्कर्म हि साजै। बिनशै मन्दिर वहै निकट रावरके राजै ॥ बिनशै सोई कथा जो न ता महँ मनदीजै। बिनशै सोई काज जहांपर आशा कीजै ॥ बिनशै सोई नारि प्रचँड गृह सकल कुमति गति परिहरो। सिख सीख भूप भीषम कहे सुनृप ताहि मंडल करो ३३ बिनशै सोई बधिक दया जाके उरआवै। बिनशै तस्कर वहैभेद आपनेबतावै ॥ बिनशै सोई नेह कपट जो उरमें धरिये। बिनशैस्वइ ब्योहार नीचसों जोकछु करिये ॥ बिनशै द्विजसेवा करत बिनशै द्रुम सरिता निकट। इहि भांति सीख भीषम कहै समझहु भूपति आप घट ३४ ॥दोहा॥ तजो यूपकी बाणि सब अयश बढ़ै संसार ॥ ह्वैहै कलह कुटुम्ब में रचि राखी करतार ३५ धर्मपुत्र को भूपजो आयसु देहु बुलाइ ॥ बचन न मेटै रावरो उठि काननको जाइ ३६ भीषम के यों बचन सुनि भूपति गयो अवास ॥ आपबुलाये अनुज सब हितकै अपने पास ३७ पास रजायसु शकुनि तब रच्यौ कपटको यूप ॥ निरखि करन रबिपुत्र को योंबोल्यो तबभूप ३८ आनहुं बोलि युधिष्ठिरहि

यों बोल्यो सुखपाइ ॥ कपट यूप में खेलिकै लेहौं ताहि हराइ ३९ करण गयो चलि इन्द्रपथ कह्यो भूप सों जाइ ॥ बोलत खेलत यूप सों दुर्योधन सुखपाइ ४० चले भूप यह बातसुनि भीमसेन सुधिपाइ ॥ जाहु हस्तिना पुरनहीं कही नृपति सों जाइ ४१ (युधिष्ठिरउवाच) चौपाई ॥ युवा युद्ध को क्षत्री भागै। ताको भुव अपयश बहुलागै ॥ कह्यो भीमसों कर्यो न कान। चले भूपतब बुद्धिनिधान ४२ चलो अनुज सबकसि किरबार। चली द्रौपदी लियें भँडार ॥ साहन लैपरि गेहसिधाये। नगर हस्तिनापुर चलि आये ४३ कोश एक आगे ह्वैलिये। आदर भाव अमित बिधिकिये ॥ हित करिलिये सभामें आये। निरखत बिदुर महादुख पाये ४४ तब आरंभ यूपको कीनो। बोलि शकुनि दुश्शासन लीनो ॥ भीषम बिदुर भाव यह जान्यो। कपट खेल अपने उर आन्यो ४५ भूप युधिष्ठिरको तबदेखि। दावें रदन करज सबिशेखि ॥ चकृत भये चहूंघा ताके। भूपति डर कछुकहि नहिंसाके ४६ कपट खेलको कियो बिचार। कौरव जाते सब भंडार ॥ राज पाट आपनपौ हार्यो। बिलख बदन भये बंधव चार्यो ४७ फूल्यो दुर्योधन भुव राई। लयो दुशासन निकट बुलाई ॥ तुरत जाइ नहिं लागै बार ॥ ल्याव द्रौपदी सभा मझार ४८ इतनी बात कहत उठि धायो। तुरत द्रुपदतनया ढिग आयो ॥ अजुगत बात आय कै भाखी ॥ ताकी नेक कानि नहिं राखी ४९ (दुश्शासनउवाच) दोहा॥जीत्यो कौरव यूप में पुरी

युधिष्ठिर हारि ॥ तू दुरयोधन मन बसी चलि मेरे संग नारि ५० (द्रौपदीउवाच) दंडकछंद॥सत्त धर्म पुत्रके अ-सत्त कहूं देखिये नजाके सत तेज क्षिति छोरै लौं मढ़िति है । तामैंतु अधर्म कहि भाषतुहै दुरशासन कीरतिन शत अपकीरति बढ़तिहै । करको करज दाबि दंतनिमें बारबार मींजि मींजि हाथ ऐसे द्रौपदी रटति है । मातके समान जेठे बंधुकी बधूसो अब ऐसी क्यों अनैसीतेरे मुखते कढ़-तिहै ५१॥ दोहा॥ दुश्शासन फिरि तहँ गयोकह्यो नृपति सों जाइ ॥ द्रुपद सुताकी बिनयबहु रही गेह भुवराइ ५२ (दुर्योधनउवाच) दुश्शासन जिय मारि हौं लाउ द्रौपदी बाल॥पकरि केश नहिं कानि करि आनि सभा उत्ताल ५३ जायगहे कर केश तिन कीनी कछू नकानि ॥ सभा माँझ आनी पकरिआई मन न गलानि ५४ (दुर्योधनउवाच) बैठि त्रिया मोजंघपर मनमानी तूनारि॥ मैंतुम हित स-गरी तजी निज तरुणी सुखकारि ५५ (द्रौपदीउवाच) पापी बोलि नदुष्टता कहु न अबूझत बैन ॥ राज पाट मिटि जायगो इहि बिधि कछू रहैन ५६ झुकि भूपति तब यों कह्यो लेहु दुकूल उतारि । सुनि दुश्शासन मो निकट आई नग्यो बहुनारि ५७ ॥चौपाई॥ दुश्शासन कर पकर्यो चीर । भीमसेन थर हर्यो शरीर ॥ कही युधि-ष्ठिर सों अकुलाई ॥ आयसु दै त्रिय लेहुं छुटाई ५८ राजा उत्तर कछू नदीनो । तब दुश्शासन उद्यम कीनो॥ पंचाली सुमिरे अकुलाई ॥ दीन बंधु किन करो सहाई ५९ द्रौपदी उवाच ॥ दंडक छंद ॥ जिनकी पतनीकी तिन

पतिनकी तुम पति खोवत पतित गति कैसेकै कसाईकी। रानी अकुलाइ कही फाटिहू न जाय मही कैसे जात सही दुष्ट दुश्शासन दाई की । कीनी करुणा कानि नहीं द्रोण न गिलानि करी तजी पहिचानि बानि भीषम भलाई की । जैसेप्रहलाद काजकीनोहै इलाज त्योंहीं कीजै महाराज आज लाज शरनाई की ६० ॥ सवैया ॥ काहू कि बार सह्यो गिरि भार सुकाहू कि बार अँगार चबाये। काहूकि बार बिदारि अदेव सुकाहू कि बार पयादेइ धाये । काहू कि बार को पाहन फारि कढ़े नरसिंह के रूप हि आये । दीनके नाथ कहाइकै वे गुणबार हमारी कहां बिसराये ६१ ॥ दंडकछंद ॥ मेटी कुलरीति मानों जानि पहिचानि नहीं द्रौपदी सभा में छोर गह्यो आनि चीर को । रानी अकुलाय कही फाटिहू न जाय मही हूजिये सहाय धर्‌यो ध्यान यदुबीर को । दीनन की लाज राखि लीजे महाराज आप और कहों कासों कोऊ हीरको न पीर को । जोर साथ दुश्शासन हाथ थाके पाथर ज्यों छूट्यो नहीं क्योंहूं पटरंचक शरीरको ६२ साहस सहित बलबाहु सबिलाइ गये भीषमसमेत कोऊबोलत न तटको। ब्यालसे बिशाल काल दंडते कराल बाहु ऐंचि साक्यो पट दुश्शासन से भट को। आश छांड़ि पति की निराश बाम टेरे हरि करुणा निधान शब्द सुन्यो दीन रटको । देहतें कढ्योहै पट कोटिन मढ्योहै छत्रद्रौपदी दुकूलबढ्यो जैसे सूत नटको ६३ भीमसेन भीर तजी पारथहू पीर तजीधीरतजी धर्मपुत्रसत्तमें दृढ़ाइकै । भीषमहू बानितजी

द्रोण पहिचानि तजी कर्णतजी आनिरह्यो बिदुर बराइ के। बुद्धिकुरुराज तजी दुश्शासन लाज तजी ऐंचिऐंचि हार्यो पट खरोई खिसाइके। बार ना लगाई करी द्रौ-पदी की भाई तहां साँकरे सहाई यदुराई भये आइके ६४ खैंचत पिरानी बाँहैं कीनी जु अनेक आहैं दोऊ कर मींजि दुश्शासन दयातु है। भोडरके कत्ता भोजपत्तर के पत्तालों पट उघरत जातु पै न उघरत गातु है। दुर्जन दुश्शासन क्षमान गहतु छिन छिन छीजतु बसन पै न उघरतु गातु है। द्रुपद सुता को चीर पुजवत यादव बीर अंगते तरंगसों अम्बर होत जातु है ६५ ॥ दोहा ॥ पट झटकत भटकी नहीं भुजबल भये अनाथ ॥ आपुन लीनो ग्यारहों बसन रूप यदुनाथ ६६ ॥ दोहा ॥ ऐंचि ऐंचि हार्यो पटहि दुश्शासन अकुलाइ ॥ थाकिरह्यो करिबल घनो रही सभा अरगाइ ६७ (भीमसेनउवाच) दंडक छंद ॥ मारि डारों रणमें निकारि डारों गर्ब सर्ब मूलतें उखारि डारों बाहू दुस्सान के। तोरि डारों जानु जंघ दुष्ट दुर्योधन के तनक करो ना भ्रम दुष्ट न के तनके। चाहि मुख नृपति युधिष्ठिर जू भीम कहे आयसु जो देहु तौ तौ सारों काज मनके। हमहिं अक्षत खल चीर ऐंचो द्रौपदी को धमकत हिये मांझ जैसे घाउ घन के ६८ दोहा ॥ द्रुपद सुताको इन गह्यो जिहिकर दुष्ट दुकूल ॥ हौं बर बाहु उखारि हौं तेई भुजा समूल ६९ द्रुपद सु-तहि अन्हवाय हौं ताके रुधिर मझार ॥ भीम पैज बोली यहै इहिविधि बारंबार ७० (भीष्मउवाच) सांचहु जाये

अंध के अछत दृगनि जे अंध ॥ चलै कहाधौं एक की वैसेही सब बंध ७१ महिमा करुणासिंधु की देखतहै खल नैन ॥ भये लटपटे मूढ़ भुज ऐंचत पट उबरैन ७२ शाप देहिं त्रिय क्रोध करि सभा भस्म ह्वै जाइ ॥ होनी होइ सो क्यों मिटै देखि देखि पछिताइ ७३ सुनी सकल धृतराष्ट्र यह ततछिनही अकुलाइ ॥ धर्म पुत्र युत द्रौपदी लीने निकट बुलाइ ७४ समाधान संतोष करि दीन्हे गेह पठाइ ॥ पहुंचे त्रिययुत इंद्रपथ पांचों बांधव आइ ७५ इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्रविरचितायांद्रौपदीअक्षयदुकूलवर्णनोनामषोडशोऽध्यायः १६ ॥

चौपाई ॥ दुर्योधन सब अनुज बुलाइ। तिनसों कही बात अकुलाइ ॥ कहा हमारे जीते होइ। वैसुख बिलसत हैं सब कोइ १ ऐसो मंत्र कछू अब कीजै। उनकी सकल संपदा छीजै ॥ पांचों अनुजन देश निकासि। तब ह्वैहै सुखकी बहु रासि २ पठयो करण इन्द्रपथ गयो। खेलन द्यूत सँदेशा दयो ॥ चलनयुधिष्ठिर भूपति कह्यो। न्योत पठाये जाइ नरह्यो ३ खेल कपट को तेसब जानैं। कही भीम की चित्त न आनैं ॥ चलिकै नरपति पहुंचेजाइ। आदर कीनो कौरव राइ ४ खेल कपटको तब तिनगन्यो। कपट महा अपने चित अन्यो ॥ अभय कीजिये बचन दृढ़ाय। जो हारै सो बनको जाय ५ वाचा बंध दुहूमिलि कीनो। द्यूतखेल में तब मनदीनो ॥ हार्यो राज युधिष्ठिर भूप। हार्यो साहन पाट अनूप ६ हार्यो देश स-

हित भंडार। हार्यो गज बाजिन को दार॥ प्रफुलित ह्वै दुर्योधन कही। राज पाट सब हारी मही ७ बारह वर्ष जाय बनरहो। गिरि गह्वर के सब दुख सहो ८ दोहा॥ बरष तेरही जाउ दुरि जो हम लेहिं निहारि॥ फिर करि द्वादश वर्ष को देहैं तुम्हैं निकारि ९ (भीमसेनउवाच) कपट द्यूत इन खेलिकै कानन दीनो बास॥ पाय रजायसु हौं करौं कौरव कुलको नाश १० नृपता लेहुं छिड़ाइकै करौं राज भुव ईश॥ करै सकल जगबंदना छत्र धरौ किन शीश ११ (राजोवाच) नलदमयंती की कथा भूप कही समुझाय॥ द्वादश वर्षै बिपिन रहि राज करैंगे आय १२ (अर्जुनउवाच) मोको आयसु देहु जो राजछाड़ि सब लेहुं॥ सकल परेखो जाय मिटि नृपता बिप्रन देहु १३ मिटै परेखो चित्त को दूजे ह्वैहै धर्म॥ आयसु देहु कृपालु ह्वै यहै करौं हौं कर्म १४ (राजोवाच) छप्पै॥ धन्यधन्य तू पार्थ खरड खंडन यश कीनो। धन्य धन्य भुजदंड कर्यो सुरपति बल हीनो॥ धन्य धन्य तव पाणि कोपि धनु करत युक्तशर। धन्य धनुर्धर धीर दियो बिधना तो कहं बर॥ कबि छत्र न कीजै रोषमन तुव सरबरि कहुको करहि। शंकत दश दिगपाल धर सुथर थरथरथरहरहि १५ दोहा॥ बिप्रनको यहदान नहिं देहु पंथ बलि बंड॥ बारह वर्ष ब्यतीत करि करिहैं राज अखंड १६ (सहदेवउवाच) हतौं अंध सुत अनुज सब यह मेरे जिय आज॥ आप वचन प्रति पालिये बनहिं चलो महराज १७ राज सिंहासन

द्रव्य सब साहन अरु भंडार ॥ रखवारो ह्वै राखि हौं कीजै यही बिचार १८ बिपिन दुखीजनि होहुनृप मोसों सेवक पाइ ॥ अन्नद्रव्ययुत भूषणान देहौं बन पहुंचाइ १९ (राजोवाच) चौपाई ॥ तेरो पौरुष हौं सब जानौं। अति हि शूरतनु कहा बखानौं ॥ पैनिजु वचन हमारो मानि। फेरि राज्यकरि हैं हम आनि २० नकुल पर जर्यो यों हठि भाखै। कौरव मारों को अब राखै ॥ आज्ञा देहुभूमि भरतार। हतौं अनुज सब लगै न बार २१ हारी पुहुमि सुनीचे धरों। तरकी धरती ऊपर करों ॥ तापर बैठि राज्य नृप कीजै। सकल अरिन ऊपर पगु दीजै २२ ॥ दोहा ॥ नकुल निवार्यो नृपति तब योंकहि बारंबार ॥ तोसोंबली न और भुव जानै सब संसार २३ गहि ठोढ़ी नरनाथ तब लघुबंधव समुझाय ॥ तबै इंद्र पथ धाममें पहुंचे सब जन आय २४ (राजोवाच) तेरह बर्षै बिपिन बसि फेरि आय हैं धाम। क्रोध नहीं कोऊ करो मनसा बाचा काम २५ इतिश्रीमहाभारतपुराणे बिजयमुक्तावल्यां कबिछत्र बिरचितायांराजायुधिष्ठिर दुर्योधनद्यूतवर्णनो नामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अथ बनपर्व ॥

गीतिकाछन्द ॥ राजचिन्ह तजे युधिष्ठिर भूप सब बनको चले। चतुर भ्राता संग लीन्हे हुते शूर भलेभले ॥ मातु राखी बिदुर के गृह हेतु बहुबिधि जानिकै। राखी सुभद्रा पुत्रयुत पुरद्वारका में आनिकै १ द्रौपदीके पंचसुत

नृपद्रुपद ढिगते राखियो। पंच बंधव द्रुपद तनयासहित बन अभिलाषियो॥ छत्रपाट धरे सिंहासन सदन में सुख पायकै। भूप रथ चढ़ि बंधुयुत कानन चले अकुलायकै २ चलतही यक असुर मारग विपिन को तब रोकियो। विकट घट अति रदन दीरघ भीमसेन बिलोकियो॥ गदा युद्धहि छांड़िकै बलवंत रथतजि धायकै। मल्लयुद्ध कियो बली बहु दुष्ट अंकहि लायकै ३ भूमिगहि संहारि राक्षस विपिन को तब पगु धर्यो। लख्यो बन अति सघनद्रुम बहुभांतिकै बहुफल फर्यो॥ललित ललित लवंग लतिका कलित करना सोहिये। बेलि बल्ली बहुचमेली जुहीयुत मन मोहिये ४॥ छप्पै॥ सोहत तरुवर ताल केलि करनार अमृत फल। सोहत कंजनयुक्तकिते सरवर जल निर्मल॥ सोहत निर्झर झरत सुथल थल सहित अखंडित। सोहत लतिका फूल भवर पुंजनि सुख मंडित॥ शीतल मंदसुगंध तहँ बहत पवन अति सुखद गति। कवि छत्र रम्य अवनी सुथल निरखत होत प्रसन्नमति ५॥भुजंगप्रयात छन्द॥ तहां आपही को कुटी भूप कीनी। बिलोकी बनी ताथली की नवीनी॥ छहूंकाल के वृक्ष फूले फलेहैं। तहां कोकिला आदि पक्षी भलेहैं ६ तपी बिप्र केते तहां चित्त मोहैं। मनों देव देवेश लोकेश सोहैं॥ मयूरी चहूंओर ते नृत्य साजैं। कहूं हंसिनी हंस नीके बिराजैं ७॥ दोहा॥ तपसी मर्कटदेखि ऋषि कीने नृपति प्रणाम॥ भांति भांति करि बंदना कही नृपति गुणग्राम ८ मोकहँ होहु प्रसन्न ऋषि देउ कछू उपदेश॥ दीनो सूरज मंत्र तब सुनि सुख

भयो नरेश ९ जाण्यो भूप तुरंतही प्रगट भयो भू भानु॥ कही भूप सो मंत्रको सुनिये सकल विधानु १० प्रात न्हाइकै भूप तुम जपियो मंत्रहि नित्त॥ षटरस भोजन द्योस प्रति पहुँचाऊं तुव हित्त ११॥ चौपाई॥ यहिबिधि भोजन प्रतिदिन पावें। आपनुजेवें ऋषिन जिवावें॥ ऋषि सब भूपति को समुझावें। तिहि बन रहत न कछु दुख पावें १२ करि दुष्टता जयद्रथ आयो। हरण द्रुपद तनया को धायो॥सक्योन नेक युद्धकोकांधि। लीनो भीमसेन सो बांधि १३ (भीमसेनउवाच) आज्ञा मोहिं गुसाईं दीजै। बांधि दुष्ट अबहीं मारीजै॥ भूप कहैं ऐसी नहिं कीजै। बांधि मारि अपयश क्यों लीजै १४ पाय रजायसु सो मुकरायो। लज्जित ह्वै गृहको चलिआयो॥ करी तपस्या शिवकी जाय। केती बर्षै तन मन लाय १५॥ दोहा॥ बहुदिन बीते करत तप भये महेश उदार॥ मांगु मांगु तोकहँ दयो सोई बर सुखकार १६ (जयद्रथउवाच)भीम धनंजय धर्मसुत सहदेव नकुल कुमार॥ मीचु लहैं मो हाथते यह इच्छा मो सार १७ (शिवउवाच) विष्णुभक्त वे पंच जन तिनसों कहा बसाय॥ एक द्योस वे पांडुसुत जीति जयद्रथ जाय १८॥ चौपाई॥ जबहिं जयद्रथ यह बरपायो। चलि दुर्योधन के ढिग आयो॥ आप पराजय सब अनुसरी। तब मैं शिवकी सेवा करी १९ एक दिवस दीनो शिव मोहिं। जीति जाय मैं दीनों तोहिं॥ सुनिकै दुर्योधन बहु लाज्यो। दुःख भयो मन आनँद भाज्यो २० दोहा॥ धर्मधुरन्धर धर्मसुत बिहरत बनमें जानि॥ भेज्यो

चाहत पुत्रको धर्मराज सुखदानि २१ लहैं अकेलो पुत्र नहिं तब दानव बपु साजि ॥ शिर अकाश पगु धरणिसों देखि उठ्यो गलगाजि २२ ऊपर लैगयो नृपति को बाण धनंजय तानि ॥ घायल नहिं ता दुष्टको कानि भूप उर आनि २३ सिंहनादलै भीमतहँ गरजि उठ्यो किलकारि॥ गिर्यो असुर भुव आयकै ज्यों मुर हत्यो मुरारि २४ सोरठा ॥ कह्यो ब्यास ऋषिराय अर्जुनसों उपदेश तब॥ सेवो ईश्वर जाय मनबच कायिक नेमसों २५ ॥ दोहा ॥ रुद्र बाण लहि रुद्रपै कहै पार्थ सतिभाउ ॥ त्रिभुवनसाईं करि कृपा अमरपुरी दरशाउ २६ तब ईश्वर आज्ञा दई कुसुम बिमान चढ़ाय॥ दरशायो सब अमरपुर भेंट्यो तहँ सुरराय २७ चित्रसेन गन्धर्ब्ब सों प्रीति बढ़ी बहुभाय। नृत्य नाद तब अर्जुनै बिद्यादई सिखाय २८ पार्थ रिझायें इन्द्र बहु सातो स्वर तब गाय ॥ नृत्य कियो सुर तरुणि तब बाजन बिबिधि बजाय २९ ॥ सुंदरीछंद ॥ अर्जुनकी बहुधा हरषी मति। तासे देव प्रसन्न भयो अति ॥ ईश्वर को सब धाम दिखावत। देखत पार्थ महा सुखपावत ३० विष्णुपुरी अवलोकि सबै तहँ। देखी जाय बिरञ्चिपुरी जहँ ॥ इन्द्र पुरी महँ मंदिर राजत। सुंदर रूप नियुक्त विराजत ३१ ॥ सवैया ॥ सुंदर मंदिर कंचनके मणि नील कँगूरनि सों छबि छाये। लाल मनोहर माणिक जाल खँचे सित खंभ बिचित्र सुहाये। बिद्रुम मुक्त अमौलिक सों प्रति हारन बन्धनवार बँधाये। सूर प्रभा सी अभा कवि छत्र बिलोकिके पार्थ हिये सुख पाये ३२ ॥ चौपाई ॥

कहि गन्धर्ब अचम्भो एह। काहेते सूनो यह गेह ॥ किहि पुर मंदिर रच्यो बनाय। किहि हित तज्यो सुकह समुझाय ३३ (चित्रसेन गन्धर्बउवाच) तालबरण दानव यहि नाम। तिहि सुर जीत्यो यह संग्राम ॥ वाके त्रास धाम यह तज्यो। आखंडल दूजो गृह सज्यो ॥ सुनिके पार्थहि चिंता भई। सहसनैन पै अज्ञा लई ॥ नीको रण दानव सों जाई। वह रण जुर्‌यो घोर दल लाई ३५ ॥ दोहा ॥ कहौं कहां लगि युद्धकी बाढ़ै कथा अपार ॥ तालबरण की सब चमू मारत लगी न बार ३६ ॥ छप्पै ॥ करत अमित गति युद्ध लड़त दानव बल जान्यो। इन्द्रपुत्र शिव बाण कोपिकै तब संधान्यो॥ रुण्ड मुण्ड कटि बांह जानु जंघा कर टूटे। एकहि बाण निदान सर्ब सेना बल लूटे॥ भयभीत शेष हति असुर सब तजि रण बल दुरिगये। जय युद्ध पार्थ करि बाहु बल तन प्रसन्न आनँद हिये ३७॥दोहा॥ इंद्रहि सुबस बसाय कै सुचिते करि तिहि धाम ॥ लहि आज्ञा आयो पुहुमि जीति असुर संग्राम ३८ ॥चौपाई॥ आय युधिष्ठिर के पद बन्दे। बंधव सुनत सकल आनन्दे (राजोवाच) तोसों तुही काहि सरि दीजै। सुर नर कौन बराबरि कीजै ३९ इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायां अर्जुनविजयवर्णनोनाम अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

नाराचछन्द ॥ तबै नरेश धर्मपुत्र संग बंधु लै भले। निकेत नारि द्रौपदी महाअरण्य मेंचले॥ लखे तहां अने-

क पुष्प स्वर्ण वर्ण देखिके। सबै सुगंध फूलमें नवीन हैं विशेषिकै १ उठाय द्रौपदी लये सराहि ताहि यों कहै। मँगाय लेहु भीमसेन पुष्प ये जहां लहै॥(भीमसेनउवाच) उड़ाय पौन ह्यांपरे कहां सुनारि पाइये। नजानिये दिशा सुकौन कौन ओर धाइये २ (द्रौपद्युवाच) विलोकि देह आपनी विचार क्यों न तू कहै। बिना अनेक यत्नते न शूर कोय यों लहै॥ कहां प्रसून हेतते बिचार चित्तमें कियो। न देहि माहिं आनिसों कठोर है महा हियो ३॥ दोहा॥ गदा लई तब भीमकर अन बोले अकुलाय॥ उत्तर दिशि गिरि कंदरन कानन पहुंच्यो जाय ४ बैठि बीर गिरि शिखर पर उठ्यो महा गलगाजि॥ पावस घन गरज्यो मनो चले सिंह सुनि भाजि ५ गिरि गह्वर मग सघन द्रुम ठाढ़े गुहा पहार॥ सुनत नाद हनुमंत तब आयगयो तिहिबार६ किये युद्ध कपि रूप तब पर्यो तहां बिचआइ॥ अवलोक्यो सो भीम तब सकै न बाट छुटाइ ७॥चौपाई॥ तारी दैदै भीम डरावै। बानर के मन कछू न आवै॥ झुकि झुकिकै वह तिन ललकार्यो। छुटै न मारग पचि पचि हार्यो ८ (भीमसेनउवाच) मारग छाड़ि कहतहौं तोहिं। लांघत जीवहि लज्जा मोहिं॥ मेरे बचन पर्यो जो रहै। आपुन कियो आपुही लहै ९ (हनुमंतउवाच) हौं अशक्त बहुभांति निहारो। तुम समर्थ इत उत गहि डारो॥ भीमसेन बल करि करि हार्यो। मर्कट टर्यो न क्योंहूंटार्यो॥ १० तब तिन बहुबिधि अस्तुति लाई। सत्य कहौ तुम कोहौ भाई॥ असुर सुरेश कि गंधब कोई। सांची बात

कहौ तुम सोई ११ गर्व हमारो सबविधि भाग्यो। दौरि भीम तब चरणन लाग्यो॥ अब जनि कपट हिये नें राखो अपनो भेद सकल बिधि भाखो १२ (हनुमंतउवाच) हनूमान है मेरो नाम। चहौ सुपुजऊं तुव मन काम॥ सुनतै भीम उठ्यो अकुलाय। चरण कमल तिन बंदे जाय १३ दोहा॥ भूलि गर्व मनमें कर्यों क्षमियो मो अपराध॥ सदा चूक तिनकी क्षमैं जो जन साधु असाधु १४ लीनी लंका रूप जिहि सो बपुदे दरशाय॥ कही युधिष्ठिर भूप सों जिनके मन पछिताय १५ मूंदत आखैं भीमके कीनो रूप कराल॥ पग धरती आकाश शिर निरखत भीमबिहाल १६ (भीमसेनउवाच)देखसक्यो यह बपु नहीं बिकल होत मम देह॥ ताते दरशावो वहै निज शरीर करि नेह १७ निज मूरति हनुमंतकी दरशाई सो बाट॥ पठयो हित करिकै तहां हुते कमल जिहि घाट १८ (भीमसेन उवाच) दुर्योधन करि दुष्टता लीने द्यूत हराय॥ द्वादश बर्षैं बन लह्यो पहुंचे यहि थल आय १९॥ दोधकछंद॥ युद्ध महा उनसों अब ह्वैहै। जीतिहि सो धरणी अब पैहै॥ आप कृपा करिके चलिआवैं। बैठ ध्वजा गल गाज सुनावैं २० होय सहायक छाहहिं कीजै। तौ बर जीति सबै धर लीजै॥ बैन सुन्यो हित जबै जबैजू। बांह दई हनुमंत तबैजू २१ नाय चल्यो शिर सो सर देख्यो। उत्तम कंजन युक्त बिशेख्यो॥ गंधर्व रक्षक देखि घनेजू। यों तिनसों तब भीम भनेजू २२॥ दोहा॥ आज्ञा देहु कृपालुह्वै लहों प्रसूनन धाय॥ झुकिगंधर्व कहीयहै तूकत

नियरो जाइ २३ बरबट सरतर पैठि कै लीनो बीड़ा बांधि ॥ रक्षक दौरे धनुषगहि तीक्षण बाणनि सांधि २४ कमल फूल द्रुमतर धरे शिरते तरे उतारि ॥ कोपिगदा सों एक सँग गयो करोरिक मारि २५ मुद्गर फरसा शक्ति शर भागे किन्नर डारि ॥ आनि कमल दीने सकल प्रिया पानि सुख कारि २६ (युधिष्ठिरउवाच) तोसों जुरैन युद्ध में किन्नर यक्षक कोइ ॥ तोहीं ते मनकामना सब बिधि पूरण होइ २७ ॥ त्रोटकछंद ॥ जबहीं बहु द्यौस बितीत भये । बनमांहि अखेटक भीम गये ॥ पुनि दीरघ पन्नग एक लह्यो । तिनि दौरि तबै पगु आइ गह्यो २८॥दोधकछंद ॥ भीम बली न छुड़ावत छूट्यो । हारि रह्यो बल दीरघ टूट्यो ॥ मारि गदा अहिको शिरतोरी । ता कहं नेक सक्यो नहिं मोरी २९ बीति गये दश बासर ताही । बाट तहां लगि भूपति चाही ॥ बंधुन सों मिलि कानन देख्यो । सर्प्प ग्रस्यो तब भीम बिशेख्यो ॥ ३० अर्जुन सोंअहि बाणनि मार्‍यो । दौरि खड्ग सहदेव प्रहार्‍यो ॥ भूप कहो कत पन्नग मारो । देवन को अवतार बिचारो ३१ नाग घोष नृप को संताप । सर्प भयो सुनि बिप्रन शाप ॥ ऐसो जंतु आहि यह कोइ । तासों याहि प्रहारन होइ ३२ भीमसेन बल करिकरि हार्‍यो । सो कत मरत तुम्हारो मार्‍यो ॥ कीनो पन्नग जय जय कार । जान्यो भूप धर्म अवतार ३३ (सर्पउवाच) दोहा ॥ तव पुरखा हौं भूप सुनु नागघोष मो नाम । बिप्र दोष दुर्गतिभई भयो सर्प गुणग्राम ३४ अपनी नृपता में महा यह

कीनो अपराध ॥ लियोद्रब्य सब द्विजन को दीनो दंड अगाध ३५ मोकहँ दीनो शाप तिन पायो यह अवतार। तब बिनयो करजोरिकै कब पाऊं सुखसार ३६ कही द्विजन जब पुहुमि में होइ धर्म अवतार ॥ तब लहिहौ शुभगति नृपति ताहि परसि तिहि बार ३७॥ चौपाई ॥ छुवत युधिष्ठिर मिटिगयो दोष। पायो नागघोष नृप मोष ॥ छाड़ि भीम भयो अंतरधान। आयो बंधव निज अस्थान ३८ सबही के मन आनँद भयो। शोक द्रौपदी उरको गयो ॥ पंडु पुत्र बनमें ब्योपरहीं। बनफल खाइ अहेरो करहीं॥ इतिश्रीमहाभारतपुराणेबिजयमुक्तावल्यां कबिछत्रसिंहबिरचितायां राजानागघोषमोक्षवर्णनोनाम नवदशमोऽध्यायः १६ ॥

दोहा ॥ दुर्योधन बैठ्यो सभा बंधु सहित सुखपाइ ॥ पांडुपुत्र पांचों तबै हियरा करके आइ १ करण दुशासन शकुनि तब बोलि लिये सुखपाइ ॥ मो मन आई सो करों अवर न कछू उपाइ २ ॥ सवैया ॥ बूझत हैं सबही दुर्योधन बुद्धि उठी यह मों उरहीतें। सुद्धि लहैं नपितामह भीषम जाइ युधिष्ठिर भूपहि जीतें॥ लेहिंगे वे सब देश भँडार सबैधन आलख औंधि बितीते। साजि चले चतुरंग चमू सब बंधुन जीति न कुंज कुटीते ३ दोहा ॥ मानि रजायसु सासतिन साजे दल चतुरंग ॥ चले भूप करि दुष्टता करण दुशासन संग ४ गिरि गह्वर मग देखि कै लख्यो घोर बन जाइ ॥ चित्र

सेन गंधर्ब तब रोषित पहुंच्यो आइ ५ बांधे बिधिकी फांससो दुरयोधन भुवपाल। मनबच क्रम बहु करणनृप कीनो कोप कराल ६॥ सुंदरीछंद॥ करण महीपति कोप कर्यो वर। पूरिलयो वर बाणन अम्बर॥ गन्धर्ब बोलि उठ्यो तिनसो हँसि। कौन छुटावहि भूप लयो ग्रसि ७ (गंधर्बउवाच) देवनसों रण तू कत ठानहि। मानव युद्ध नहीं उर आनहि॥ गाजत करण सुबाण न छांड़तु। होत कछू नहिं पौरुष मांड़तु ८॥ दोहा॥ श्रवणाकुलाहल पार्थसुनि आयो शर धनु साजि॥ निरखि बँधे दुरयोधनै बली उठ्यो रण गाजि ९ (अर्जुनउवाच) चौपाई॥ जो बांध्यो दुरयोधन राज। कहै पार्थ तौ हमको लाज॥ यद्यपि हमको मारन आयो। अपनो कियो आप फल पायो १० तबहिं पार्थ विनवै गल गाजि। तू मोपै कत उबरै भाजि॥ छाड़ि राय जो चाहै जियो। नातरु बेधतु हौं तौहियो ११ (गंधर्बउवाच) दोहा॥ दुर्योधन करि दुष्टता आयो तुव बध काज॥ अबल अकेले जानि बन उर कछु धरी न लाज १२ मित्रभाव उरमें धर्यो तो बांध्यो भुव राय॥ खोलि पांस सौंप्यो नृपति अर्जुन कर सुख पाय १३ छूट्यो मृग ज्यों बधिक तें यों भूपति उर जानि॥ दियो रजायसु धर्मसुत बिदा करहु सुख मानि १४ (अर्जुनउवाच) आजुभये तुमतेउऋण योंकहि समदे राय॥ बिलखि बदन युत करण तब चले सदन दुख पाय १५॥ चौपाई॥ जैसी करै सुतैसी पावै। ओछो ताकै ओछी आवै॥ परहित कूप जो खोदै कोई। निश्चयगिरिहै

तामैं सोई १६ ॥ दोहा ॥ मलिन भूप आये सदन निशि दिन कछु न सुहाय ॥ लखि लखि पुरबासी सबै यों तब करत चवाय १७ (पुरबासीउवाच) गये बिपिन करि दुष्टता धर्मपुत्र बधकाज ॥ बांधि लये गन्धर्व नृप उपजी दल उर लाज १८ कुलहि कलंक बिचारि कै पार्थ उठ्यो अकुलाइ ॥ त्रास दिखायो गंन्धर्बे लीनो भूप छुटाइ १९ गये ताकि हे दुष्टता गई जीवकी आस ॥ पार्थ छुड़ाये जानि कै बैठे मलिन अवास २० हुते जहां नृप धर्मसुत धर्म-राज तहँ आइ ॥ देखत सत्या कर दयो मायामृग मुकराइ २१ आपु बिप्रको रूपधरि आयो भूपति पास॥ कह्योदेहु मृग पकरिके यह पुजओ मोआस २२ तुमक्षत्रीहौविप्रहौं यहटारो मोंआरि ॥तौसीजै मोकाजसब सिंह जाइगो मारि २३ ॥ दोधकछंद ॥ बांधव पांच तबै उठि धाये। कानन में मृगके ढिग आये ॥ दूरि कहूं कहुं सूझत नेरो। हाथ चढ़ै न घिरै कहुं घेरो २४ लागि तृषा बल थाकि रहे हैं। क्लेश भये नहिं जात कहे हैं ॥ पर्बत पै चढ़िकै तब हेरैं। देखत सूझ पर्‌यो जल नेरैं २५ ॥ दोहा ॥ नकुल गये तहँ अम्बहित लीनो भरि करि नीर ॥ भइ अकाशबाणी तहां चकित भयो सुनि धीर २६ ॥ चौपाई ॥ मेरे बूझे उत्तर देहि। जबतू नीर आपु कर लेहि ॥ कह्यो न ताको इन कछुमान्यो। नकुल नीर तब बाहिर आन्यो २७ प्राणन तजि गये ताकी काय। चिंता करी युधिष्ठिर राय॥ सहदेव धाइ नीर हित गयो। विधि वाही तिनिहूं जीदयो २८ अर्जुन भीम गये जल पास। लयो अंब भरिकै सुविलास॥

फिरि सो शब्द अकाशहि भयो। उत्तर ताहि न तिनहूं दयो २९ मृतक परे ता जलकी पारि। गये युधिष्ठिर भूप बिचारि॥ नीरजहीं भरि अंजुलि लयो। सोईशब्द अकाशहि भयो ३० (आकाशवाणीउवाच) में बूझों तू उत्तर देहि। पाछे देव नीर भरि लेहि॥ धर्म बिवाद सकल तिन ठयो। भूप सत्य तब उत्तर दयो ३१ ॥ सवैया॥ लाभ कहा गुणवंतन के सँग हानि कहा जु समौबितयेते। दुःख कहा जड़ मूढ़की संगति सुःख कहा बुधिवंत भयेते। ज्ञान कहा अवलोकै न आतम ध्यान कहा विषयान चहेते। प्रीतम को पति आहिं सबै त्रिय शीलवती नित कै चितयेते ३२ ॥ चौपाई॥ कह्यो धर्महौं रीझ्यो तोहिं प्रीति भई उर अन्तर मोहिं॥ अब तेरे जो मनमें भावै। बर मांगै सो मोपै पावै ३३ (राजोवाच) चारोबीर मरे परे ते अब देहु जिवाइ॥ और कछू नहिं कामना यहै करौ सुखदाइ ३४ (धर्मउवाच) ॥ दोहा॥ जोई चाहै चारिमें सोई देहुजिवाइ॥ और न जीवै तीन में निश्चय जानो राइ ३५ ॥ चौपाई॥ साईं अब कीजै सतिभाव। कही भूप सहदेव जिवाव॥ फेरि भई ऊरध में बानी। बात भूप तुम मिथ्यामानी॥ अर्जुन भीम बीरमा जाये। कहि काहेत वे न बताये (राजोवाच) निजवीरन की पकरों बांह। अयश होय अति धरणी मांह ३६ ताते सहदेव देउ जिवाइ। मिथ्या बचन न भाष्यो जाइ॥ रीझो धर्म देह धरि आयो। सत्यवंत भूपति उर लायो ३७ तेरो पिता धर्महो आइ। अबै देउहों सबै जिवाइ॥ जल

सों छिरक जिवाये चारि। कही सुनो सुतसब सुखकारि ३८ बारहबर्षगये बन बीति। चलियो व्यास कहीजिहि रीति॥ धर्मराइ कहि स्वर्ग सिधाये पांचों बंधु कुटी महँ आये॥ ३९॥ इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहबिरचितायांभीमराजादुर्योधनमानभंगबर्णनोनामविंशोध्यायः॥ २०॥

अथ बिराटपर्व्व॥

दोहा॥ धर्मसुव नभुवभूपतब सुमिरे श्रीऋषिव्यास॥ आय गये तिहि ठामहीकरण सकल दुखनाश (राजोवाच) चामरछंद॥ बुद्धिदेऋषीशमोहिं जायकै कहांरहैं। सुःखसों रहैं जहांसमूह वस्तुको लहैं॥ शोध अंधपुत्र सुद्धि रंचकौन पावही। ठामसो हमें ऋषीश करिकृपा बतावही २ (व्यास उवाच) और तौ दिशान भूप रावरे दुरो नहीं। जाउ जू विराट देशसुःख पाइहौत्तहीं॥ चारिवर्णके हियेतहांसदा दया रहै। गुप्तहोउ जाइकै ऋषीश बातयों कहै ३॥ दोहा॥ तब ऋषीशको वचनसुनि कीनोन्टप परवान॥ तब विचार कीनो यहै सब गुणज्ञान निधान ४॥ चौपाई॥ जैऋषिनाम भूपकोभाख्यो। नामजयंत भीमकोराख्यो॥ विजय वृहन्नल अर्जुन नाम। सहदेव ग्वाल भयो गुणग्राम ५ बाहुक अश्वनि नकुल कुमार। यों कहिकै ऋषि कियो विचार॥ छांड़ि गर्ब सेवक ज्यों सेव। कीजौ मन मारे तुम देव ६॥ व्यासकीशिक्षा॥ सवैया॥ क्रोधतजो हो विरोध तजौ अरु गर्ब तजौ तुम धाम पराये। आयसु

पाइ करौ सब घायसु जाय रहौ सब आप दुराये । ऊंचोउ नीचो कहै कोउ आयकै सोउ सुने रहियो शिरनाये । शोच विमोचन राजिव नैन सदा रहियो तिनिसों चितलाये ७ सोरठा ॥ चलियो तेही छांह जब जैसो समयो लखो ॥ गर्ब नहीं मनमांह नेकहु भूप विचारिये ८ ॥ दोहा ॥ यह विधिकै बहु सीख दै गये व्यास ऋषिधाम ॥ सोई मनु हिरदै लह्यो मनसा बाचा काम ६ पाइ सीख भूपाल तब बनते भये उचाट ॥ पांचों बंधव करि क्षमा आये नगर बिराट १० मृतक पुरुषसों वेगिहौ आयुध बांधे धाय ॥ नगर निकट तरुवर समी तापर राख्यो जाय ११ निरखि ग्वालता थल कह्यो याहि छवै जो आइ ॥ बर्ष दिवस लौं मृतक यह ताकहुं खैहै धाइ १२ ॥ चौपाई ॥ यह कहिकै ग्वालनि बौराई । आपनु चले नगर को राई ॥ पैठत नगर सगुन भये घने । सहदेवसों भूपति यों भने १३ (राजोवाच) कैसे सगुन होत सुखकारि । सो तुम बंधव कहौ विचारि ॥ ऐसे लक्षण मैं पहिचाने । ह्वै हैं काज सकल मन माने १४ (सहदेवउवाच) ॥ सवैया ॥ बाल खिलावहिं बालकको सुतअस्तनपान करै सुरभीको। सुखमैंद्यौस सिरावहुगे सब होयगो काजमही पतिजीको॥ लील गयो दिशि बाम चिकारि कछू यहभो उर लागत फीको । केतिक काल वितीतभये तब शोचउठै कछुबिग्रह हीको १५ ॥ चौपाई ॥ पुरमें बंधव चारौ रहे । राजसभा चलि भूपति गहे ॥ द्विजके रूप करौती लिये । सोहत द्वादश तिलकनि दिये १६ उठि बिराट निरखत शिर

नायो। कातू विप्र कहां ते आये॥ दै अशीश यों विनबैराय। धर्म सुवनको बरुवा आय १७ गिरिगह्वर वे दुरि गे पांचो। मोसों बैन कह्यौ यहसांचो॥ जाहुविराट महीपति पास। रहियो तहां सुखी सविलास १८ धर्म पुत्र तुवपास पठायो। तातैं निकट तुम्हारे आयो॥ सुनि भूपति कीनो सनमान बैठो मुनि गुण ज्ञान निधान १९ (राजोवाच) जैऋषि नाम व्यास मुनि भाख्यो। सुनि क्षितिपति बहु आदर राख्यो॥ अर्द्धासन बैठ्यो तब भूप। शिरपर तान्या छत्रअनूप २० फिरिकै आयो भीमकुमार। आय भूपको कियो जुहार॥ दीरघ तन दीरघ भुजदंड। निरखत कौतुक भयो अखंड २१ (विराटउवाच) दोहा॥ कितते आये कौन तुम काह तिहारो नाम॥ कौन जाति किहि हेतु तुम आये मेरे धाम २२ (भीमसेनउवाच) गीतिकाछंद॥ व्यास नाम जयन्त भाख्यो पण्डुसुत को स्वारहौं। सर्बदा करतो तहां बहु भीमको जु अहारहौं॥ दया करते रचत भोजन हौं सलोनो अति घने॥ अति सुगंधित स्वच्छ व्यंजन सकल षटरस सोसने २३ रीझि रीझि नरेश दिनप्रति देत पट भूषण घनै। राखते बहुमान मेरो अनुजसरबर कोगनै॥ ह्वै विराट उदार हित करि बचनअमृत भाखियो। हेतसों बहुमान करिकैनिकट अपने राखियो २४ दोहा॥ निरख्योसरवरि भीमकी भूपति ताकी देह॥ वैसो बली विचारिकै ढिग राख्यो करि नेह २५ फिरि अर्जुन नटराज ह्वै कीनो तियको रूप॥ कंकण किंकिणि आदिदै सजि आभरण अनूप २६ सिंदुर

शीसत मोर मुख मेंहदी युत शुभपानि ॥ जावक चरण मृदंग की धुनि कीनी तिहि आनि २७ सुनि भीतर बोले नृपतिसब बूझ्योब्योहार ॥ सकलज्ञानसंगीत लखिकला चौगुनी चार २८ (अर्जुनउवाच) ॥ गीतिकाछंद ॥ होंतो अखारे धर्मसुत के रहत बहु सुख पाइकै। भांति भांति रिझावतो करि नृत्य गीत सुनाइकै ॥ कौन अपनो गुण कहैं सब बूझिजै ऋषि बोलिकै। देहि सकल सुनाइकै सबकहैं विद्याखोलिकै २९ दोहा ॥ पारथको होंसारथी विजै विहंनल नाम ॥ जीवन आये रावरे गेह लियो विश्राम ३० ॥ चौपाई ॥ धर्मपुत्र करिकै बहुनेह। पठये इहां जानिकै गेह ॥ अब आभार हमारो लेहु। वस्त्रअन्नबर ममभरि देहु ३१ लघु कन्या बालकहिं पठाऊं। विद्या दै जगमें यश पाऊं ॥ भूपसुता उत्तरा कुवांरि। सौंपी पठन योग सुखकारि ३२ फिरि सहदेव पहूंचो आय। सुद्धिकरी भूपतिसों जाय ॥ (सहदेवउवाच) होंतो धर्मपुत्रकोग्वाल। करतो महा कृपा भुवपाल ३३ वेतो दुरि बनवीथिनगये। दै उपदेश पठै ह्यां दये ॥ करि जानो गाइय को सार। अरु सबबिधि करि सकों हथ्यार ३४ मो देखत धनुको कहै गरै। को रण जुरि मो समता करै ॥ नामसैनि यह वृत्ति हमारी। यह जीविका सुचित्त बिचारी ३५ अरु जयंत जैऋषि म्वहिं जानै। उनै बूझि भूपति सनमानै ॥ सुनि तिन जान्यों बुद्दि विशाल। सौंपी सुरभी कीनो ग्वाल ३६ ॥ दोहा ॥ फेर नकुल आयो तहां लिये जात सो हाथ ॥ देखि रूपकीराशि तब चकित भये नरनाथ ३७

(बिराटउवाच)कौन जाति को आपुहौ कहा तिहारो नाम॥
केहि कारण कविछत्र कहि देख्यो मेरो धाम ३८ (नकुलउवाच)दोधकछन्द ॥ बाहुकुभूप युधिष्ठिर केरो। राखत मान सबै बिधि मेरो ॥ वे दुरिकै बनमाहिं सिधारे। दैसबतें हमको दुख भारे ३६ कट्टर कूटर अश्व चलाऊं। योजन सौ यक बासर धाऊं॥ बूझहु जै ऋषिको गुणमेरो। मैं बहु नाम सुन्यों नृप तेरो ४० मोंकहँ सौंपिय बाहन जेतो। जानहुंगे गुण मोमहँ तेतो ॥ यों सुनि भूप उदार भयो चित। हेत कर्‌यो बहुधा नितही नित ४१ दोहा॥ सौंप्यो साहन नकुल कर ह्वै भूपाल उदार ॥ बहुर्‌यो आई द्रौपदी भूपति सदन मझार ४२ देखी भूपति तरुणि जब संभ्रम बढ्यो अपार ॥ सची किधौं रति मेनका रम्भा ते सुकुमार ४३ नगी पन्नगी कमलजा भुव आई धरिदेह। सब रनिवास चकोर सों शशि ज्यों आई गेह ४४ (रानी उवाच) कहौ कौनकी कुलबधू आई ह्यां किहि काम ॥ कौन जाति बरणो सकल सबबिधि कै गुण ग्राम ४५ (द्रौपद्युवाच) पांडुपुत्र गृह द्रौपदी रानी परम उदार॥ ताकीदासी मोहिं गिन आई हौं तुम द्वार ४६ सुंदरीछंद॥ वे बन में पति सँग गईं दुरि। मोसों बैन कह्यो हँसिकै मुरि ॥ जाहु बिराट महीपति के घर। काटहु काल तहां त्यहि औसर ४७॥ दोहा॥ आई तुम सेवा करन मोहिं सुजानीनाम ॥ आज्ञादेहु कृपाल ह्वै करौंयहां बिश्राम४८॥ (रानीउवाच) कौन सेव उद्यम कहा करिजानौं कहिबाल। चन्द्र बदनि सों बेगि कहि सोइ सौंप्यो यहि काल ४६

(द्रौपद्युवाच) दंडकछंद ॥ मंजन कराऊं आछे भूषण बनाऊं चुनि चीर पहिराऊं आछे भोजन सँजोइहौं। दर्पन दिखाऊं दरशाऊं महा नीकी द्युति कुंकुम सुगंध घनसार उर लेयहौं। बीजना डुलाऊं जल शीतल पिलाऊं अरु सेजहू बिछाऊं न करौंगी काज दोइहौं। ऐसे कै सुजानी कहै जानो नीके मेरी रानी जूंठो हौंन खैहौं और पायँ हौं न धोयहौं ५० (रानीउवाच) चौपाई ॥ सत्य वचन तैं कहै सुजानी। मैं तुम निज पंडौकी जानी ॥ तनया सम मेरे गृह रहिये। मोसों मनकी बातैं कहिये ॥ हलकी भारी जो कोउ भाखै। तू जनि ताको आदर राखै ॥ थोरेहूं कीजै सन्तोष। निशदिन करिहौं तुमपर दोष ५१ (सुजानी-उवाच) गीतिकाछन्द ॥ करत रक्षा पांच गंधर्व अंतरिक्ष सदां बसैं। विक्रमी बलवंत बहुविधि घोर रूप महालसैं ॥ देहिं मोको दुःख जोवे आय ताहि सँहारि हैं। देवको नरदेवको छितिदेव को न विचारि हैं ५२ पाप दृष्टि जो मोहिं देखै प्राणगत सो जानियो। मो पंच रक्षक वे सदा यह सत्य उरमें राखियो ॥ निकट तिन राखी सुजानी परम जिय सुख पायकै। देत शिक्षा रहत सब शृङ्गार रचति बनाय कै ५३ ॥ दोहा ॥ यहिविधि पांचों पांडुसुत और द्रौपदी बाम ॥ कालक्षेप तिनके करैं छत्र सकल गुणग्राम ५४ ॥ चौपाई ॥ होहिं एक सँग कालहि पाई। सकल अवस्था बरणीं जाई ॥ जब भूवपतिहि जुहारन आवैं। प्रथमहिं जैऋषि को शिर नावैं ॥ ५५ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंह विरचितायां

पांडवअज्ञातवासवर्णनोनामएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

दोहा ॥ अपनी दुहिताको रच्यो नृपति विराट विवाह छत्र सकल पुर में भयो गृह गृह प्रति उत्साह १ क्षिति के किते क्षितीश तब आये तिनके धाम ॥ शक्रसमान पराक्रमी जगमें जिनके नाम २ ॥ सोरठा ॥ सभा रची तिहि काल अमरावति सी जगमगै ॥ आपनु ज्यों सुरपाल भूमि देव सब देव से ३ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ कहूं नृत्य कालीन के यूथ सोहैं। कहूं रागकी तानसों चित्त मोहैं ॥ कहूं कंचनी लै मृदंगी नचावैं। लसैं उर्वसी सी सबै मान पावैं ४ कहूं मल्ल माते भिरैं भीम भारे। कहूं मेष सूरे डरारे डरारे ॥ कहूं मत्त मातंग ते घोर घूमैं। तपी पुत्रसे देखिये चारु भूमैं ५ ॥ दोहा ॥ मल्ल एक आयो तहां बानो बांधे जाल ॥ पग मैठो उर पीत पट बोलि उठ्यो उत्ताल ६ सभा मांझ नरनाह तब चारिवरण की भीर ॥ बड़े धनुर्धर साहसी देखतहौं सब बीर ७ मोसों मल्ल जुरै नहीं कोऊ काहू देश ॥ है कोऊ मोसों जुरै आज्ञा देहु नरेश ८ छप्पै। मरहठ सोरठ जीति जीति सारंग तिलंगी। जीति विदर्भी मल्ल सकल भूधर के संगी ॥ मगध जीति मेवार मद्रूधर जीति चंदेरी। वंदरवारिवि घाट जीति करनाटकहेरी ॥ कविछत्र जीति अंगद नगर नहिं कोउ सरवरि करि सकै। भुज बरणहु तिहि सूरके जो करिवर सन्मुख तकै ९ ॥ चौपाई ॥ सुनि सुनि सभा न बोलै कोई। मन साहस काहूं नहिं होई ॥ नृपति बिराटहि सुधिह्वै आई

लीनो सार जयंत बुलाई १० (विराटउवाच) सुनु जयंत तू आयसु मान । मल्लयुद्ध तू यासों ठान ॥ जो हारै तौ लाज न होय। जीतै द्रव्य देहिं सब कोय ११ ॥दोहा॥ तब जयंत यह मल्ल सों कही बात हर्षाय ॥ हम तुम रससों खेलिहैं लीजै सभा रिझाय १२ तू जो आनै रोष मन डारै भुजा उपारि ॥ हम परदेशी न्यायही देहैं भूप निकारि १३ (मल्लउवाच) तन दीरघ दीरघ भुजा वचन कहत कत दीन ॥ यों सोऊ नहिं उच्चरै होय जुतनको हीन १४ ॥ चौपाई ॥ मल्लयुद्ध दोऊ मिलि करैं । लट पटाय धरती धुकिपरैं ॥ फिरि फिरि बल करि उठत सँभारि । कोउ न मानत द्वै में हारि १५ जबहिं जयंत भुजा बल किये । मल्ल उठाय पुहुमि तें लियो ॥ करि बहु क्रोध सु भूतल डार्‌यो । जनु सुर बज्र धाय गिरि पार्‌यो १६ सम्हरि उठ्यो ये वचन सुनाय । अब मारौं तू खल कित जाय ॥ लै तब गुरज उठ्यो अकुलाइ हन्यो जयंत नाशिका आइ १७ विषम चोट थर हर्‌यो शरीर । मूर्छित पुहुमि गिर्‌यो रणधीर ॥ निरखत जे ऋषि और सुजानी हैहै करिकै अकुलानी ॥ चेति जयंत उठ्यो गलगाजि जान न पायो सो खल भाजि ॥ भूमहिं सात बारधरि मार्‌यो । गहरो गर्ब्बदुष्ट को गार्‌यो १८ सो फिरि जुर्‌यो न करि बल जोरि । दोबर कीनो मल्ल मरोरि ॥ देखत सभा सकल नर हर्षै । बसन रजत मणि माणिक वर्षै २० मृतक दियो सुरसरी बहाइ । तब सब समदे राजा राइ ॥ जब सब नृपति बिदाह्वै गये।

अपने अपने गृह सुखलये २१ ॥ दोधकछंद ॥ मंत्र गयंदहुतो इक ऐसो। अंजन को भुव धूमर जैसो ॥ नीर निकेत सुछोरि चलायो। गर्जत धाम निडारत आयो २२ कानि माहावत कीनि करैसो। प्राण तजै ढिग आवत है सो ॥ सुंदर मंदिर डारि दयेजू। भीतर सब नर नारि भरेजू २३ भूपति सो सब लोग पुकारे। ह्वै कुंजर नर केतिक मारे ॥ ताहित केतिक लोग पठाये। बाधहु याको भाषत आये २४ ॥ चौपाई ॥ कोऊ निकट सकै नहिं जाई। भूपति सों सब कही सुनाई ॥ क्योंहूं हाथ न कुंजर आवै। करौ उपाय जो भूप बतावै २५ (राजोवाच) कै सब मिलिकै बांधो जाइ ॥ कै अब शस्त्र गहौ किन जाइ। बोलि जयंतहि आज्ञा दई ॥ या गयंद तैं चिंता भई। २६ कैबल बांधि कै ताकहँ मारि। पुरको कंटक बेगि निकारि ॥ कहै जयंत जुमारौं याहि। कुंजर को जिनि पकरौ ताहि २७ सिंह नाद गाज्यो बल बीर। तब गयंद थर हर्यो शरीर ॥ पूछ पकरि झक झोर्यो ऐसो। दाबत मृगको चीतो जैसो २८ पकरि रदन लै पहुंच्यो थान। ज्यों अजया गहिलीजै कान ॥ बांधि ताहि भूपति शिर नायो। तब जयंत बसननि पहिरायो २९ दोहा ॥इहि विधि बीते मास दश नृप बिराट के तीर। काल छेप इहि विधि करैं पंडुपुत्र बर बीर ३० इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहबिरचितायां भीमसेनविजयगजबंधवर्णनोनामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

सोरठा ॥ नृप तरुनी को बंधु कीचकवली बिशाल

तन। यौवन मद अतिअंध सहसद्विरद सम ताहि बल १॥ चौपाई॥ शत बंधव कीचक अतिबली। बर अवगाहत रन अस्थली॥ सोहत एक मात के जाये। ऐसे सुभट महीपति पाये २॥ गीतिकाछंद॥ इक द्यौस कीचक मोहिकै निजमहल भूपतिके गयो। कीनो प्रणाम अशेष भगनी देखिकै आसन दयो॥ पवन तेहि ढारैं सुजानी नृपति त्रिय भोजन करै। रूपदासी को बिलोकत देह कीचक थरहरै ३ बात भगनीसों कहै चित अटकि दासी सों रह्यो। कालघेरो मूढ़ हँसिकै तब सुजानी यों कह्यो॥ हैं पंचरक्षक मोहिगंधर्व तुरत ताहि सँहारि हैं। यहबली होउ कि होहु निर्बल कछु न चित्त बिचारिहैं ४ कामअंध भयो सु आतुर तुरत भगिनी सोंकहै। देहु दासी मोहिं मांगे इच्छामों उरमें रहै॥ देहुं बदले सहसदासी एक यह मोहिं दीजिये। छांड़ि लज्जा कहीतोसों कह्यो मेरो कीजिये ५ (रानीउवाच) आहि दासी द्रौपदी की कहौ केहिविधि दीजिये। रहै मेरे उत्तरा सम लोभ चित्त न कीजिये॥ जीविका हित आइ बिरमी कहौ किहि बिधि पाइये। दई जाय न बीर मोपै आप धाम सिधाइये ६ (कीचकउवाच) दोहा॥ कहिकैसे तू राखिहै दासी बल करि लेहुं॥ राजपाट सब छीनिकै कोटि कोटि दुखदेहुं ७ चौपाई॥ चेरी लागिन साहिब राजा। तेरो कहा सुधरिहै काजा॥ अति बलवंत बीर है मेरो। राखिलेहु को ऐसो तेरो ८ (रानीउवाच) पर तरुनीरत जेनर भये। अपनी करनी ते मिटिगये॥ जोचाहै अपनी कुशलात।

फेर कहौ जिनि याकी बात ९। सवैया॥ अंधमहा दश कंधहरी सिय राघव को शरता उर शाल्यो। शक्रहिशाप दयो मुनिगौतम जानि कुकर्म के कर्मनि चाल्यो। शुंभ निशुंभ हते तरुणी अरु तारहि लागि बध्यो वर बाल्यो॥ यों समझै मनमें शठ तू किनक्यो न गयो परबामको घाल्यो१० ॥ दोहा॥भगिनी मुख ये बचन सुनि उठि सुधि धायो धाम॥ विकल महाजिय कलनहीं घरी महूरत याम ११ ॥ चौपाई॥ कीचकको सुधि बुधि नहिं रही। सूने सदन सुजानी लही॥ काम अंध अंचल तब गह्यो। आतुर ह्वै याविधि सों कह्यो १२ चितमेरो तोसों अब लाग्यो। भौ आशक्त सुधीरज भाग्यो॥ मेरे तरुणी शशि उनहारी। सबपर होउ सुहागिल नारी १३ उत्तम भूषण बसन बनाऊं। अरु दासीको नाम मिटाऊं॥ काहेयोबन उतम गँवावै। तूतौ मो उरमें अति भावै १४(सुजानीउवाच) गंध्रब पंच मोहिं रखवारे। दीरघ तन बल बिक्रम भारे॥ मोहिं छुवत वै तुरतहि आवें। कीचक तेरे प्राण नशावें १५ तोहिंमरे मोअपयश ह्वैहै। मोहिंदोष सकल जगदैहै॥ यहसुनि कीचक बहु भयमानी। तुरत गयो सुकराय सुजानी १६ निशिदिन ताकहं नींद न आवै। धन संपति घरबार न भावै॥ दूती बोलि सुइहि विधि कही। कह दासी मोचित बसिरही १७ मोरे ल्याउ सुजानी अबै। मोमन इच्छा पुजवै सबै॥ बहु बातन दूती समुझावै। चित्त सुजानी कहू न लावै १८ यह विचारि नहिं बोलै सोई। आजु कालि कछु कलह नहोई। कीचक

आतुर ह्वै उठि धायो। जहां सुजानी तिहि थल आयो १९
दोहा ॥ सूने गृहमें पायकै गहेकेश कर धाइ ॥ शठ
कहिधौं तोकोअबै कौनछुटावै आइ २० दासी कर्म कराय
कै त्रासदिखाऊं तोहिं। अपनी मनभाई करौं यहै आनिहै
मोहिं २१क्योंहूं हठनहिं खलतजै अंचर डार्योफारि॥
करते केश न सोतजै अति अकुलानी नारि २२ (सुजानी
उवाच) जानत रसकी रीति नहिं तूखल एकहु बात ॥
पर तरुणीको मनदिये तबसब सुख सरसात २३ रसही
रसही मनमिलै तब लहिये परनारि ॥ बौरायो ये बचन
कहि गूढ़ उपाय विचारि २४ शिथिल भयो ये बचन सुनि
केश दये मुकराइ (सुजानीउवाच) रैनि भये ते क्योंन
तू नाच अखारे जाइ २५भोग योगसूने सदन ह्वै निशि
कीचकराइ ॥ जाहु तहांहौं आयहौं यामक रैनिविहाइ२६
दोधकछंद ॥ कीचक यों सुनिकै सुख पायो। बैन सुन्यो
हितवन्त सुहायो ॥ जात भयो अपने गृह सोई। चाहत
बाट निशा कब होई २७ बैन कह्यो तहँ आय सुजानी।
हैपतिभूप जहांसुखदानी ॥ कीचक कानि न नेकहुराखी।
सोगति बाम तहां सबभाखी २८ आयसु अर्जुन को
अब दीजै। कीचक मारहिं सोमत कीजै ॥ रोवत बामहि
श्वास न आवै। भूपति या विधिकै समुझावै २९ दोहा ॥
मास दिवश बीते त्रिया मो ब्रत पूरणहोइ ॥ तौ लगि
कालहि काटिये लखै कछू नहिं कोइ ३० ॥ चौपाई ॥
अवधि बिते कीचक संहारौं। तब नहिं और विचार बि-
चारौं ॥ कैतौ लगि रहिये मन मारि। कै बनबास करा-

वहिनारि ३१ बिलखिबदन त्रिय पहुंची तहां। हुतेबिह-न्नल अर्जुन जहां॥ बरणी कीचक की अधिकाई। भूपति के मन कछू न आई॥ मेरो कह्यो गुसांई कीजै। हनि कीचक को जग यश लीजै॥ तुमहि अछत कीचक दुःख दयो। पौरुष कहां तुम्हारो गयो ३३ (अर्जुनउवाच) जो भूपतिको आयसु पाऊं। तौ कीचकको मारि दिखाऊं॥ नृपकी कानि न तोरी जाय। तातैं कछू न करौं उपाय३४ दोहा॥ गई नकुल सहदेवपै बिलखि बदन वरनारि॥ अधिकाई तादुष्टकी सबविधि कहीविचारि ३५ (सुजानी उवाच) चौपाई॥ कीचक बांह हमारी गही। तुममेंकहौ कहां पति रही॥ मेरे जियको परिहसु सारो। क्योंनहिं अपने अरिको मारो ३६ (सहदेव-नकुलउवाच) सुनि सुनि तेरे बचन ये बाढ्यो क्रोध अपार॥ मेट्यो जाइ न नृप बचन बिनयो बारम्बार ३७ मारों कीचक क्षणक में भूपति आयसुपाइ॥ करै अवज्ञा नारि अब कोकहि नरकै जाइ ३८॥ चौपाई॥ मास एक तू और निवारि। तब सकिहैं कीचक को मारि॥ इनहूं तें त्रियभई निरास। पहुंची भीमसेन के पास॥ ३९ सजल नयन भरि आंसू डारे। मीडत नयन भरे रतनारे॥ पवनपुत्र तब यह बिधि जानी। बिलखी ठाढ़ी द्वार सुजानी ४० आयोद्वार लखी त्रियनैन। स्वासा लैलै कहै न बैन॥ बोलीबिलखि अँसुवनि मांह। कीचक दुष्ट गही मोबांह ४१ पंडुसुतन पै फिरी पुकारि। वे न गुहारि लगे कोउ चारि॥ अब जो साँईं तू सहिरैहै। गहिसो दुष्ट मोंहि लै जैहै ४२

सवैया ॥ रोषचढ्यो बिषसो सब अंग लखी त्रियके मुख पै मलिनाई। बूझत्त उत्तर फेर न देत गरो भरिकै मुख बात न आई ॥ कीचक को सुनिता मुखनाम सुदौरि गई दृगमें अरुणाई। देखतही विधिहौं क्षणमें यह पैजु युधिष्ठिर भूप दुहाई ४३ पैहथि मोचु बुलाइ लई तिनस्यार बराइ कै सिंह सौं खेल्यो। दादुर धाइ जुर्‍यो अहिसों शुक पोत किधौं बर बाज सोझेल्यो। मूषक युद्ध मंजारिहिसों पग पीलको चाहत गर्द्धभ ठेल्यो। पर्‍योहै काल कराल सोई करजाय भुजंगम के मुख मेल्यो ४४ दोहा॥ काल सर्प्पसों खल डस्यो काम लहरि अकुलाइ॥ पूंछ मरोरी सिंहकी अब जीवत कितजाइ ४५ जो नहिंमारों क्षणकमें आवै कुंतिहि लाज। जोबैरी बल करिरहै जीवन कछू न काज ४६ (द्रौपद्युवाच) चौपाई ॥ तुम देखत सब पंचन मांह। दुश्शासन पकरी मो बांह ॥ दुर्योधन तब छीनेचीर। हुते अछत तहँ पांचोवीर ४७ बिपिन जयद्रथ छलकै हरी। बांध्यो दुष्ट कानि नहिंकरी॥ दुख दै कीचक फार्‍यो चीर। तातै व्याकुल भयो शरीर ४८ दोहा॥ सभा मांझसुनि कीचकै भीमचल्यो अकुलाइ॥ अबहीं मारों दुष्टको अबको सकै बचाइ ४९ (द्रौपद्युवाच) अब न उतालव कीजिये जाने काल बचाइ॥ दुष्टहि मारों रैनिमें रहै अखारे आइ ५० मैं सहेठतासों बदी आवै तहां निशंक॥ ताहि तहां संहारियो करियो दया न अंक ५१ पूरो मतौ सु कीजिये आवै जामें जीति॥ नहीं उतावल कीजिये यहै स्यानकी रीति ५२ ॥

चौपाई ॥ भीमसेन तरुणी वपु कीनो। दृग अंजन शिर सिंदुरदीनो ॥ पट भूषण आभरण सम्हारे। कटि किंकिणि नूपुर झनकारे ५३ करि तरुणी वपु पहुंचे तहां वही सहेट अखारे जहां ॥ बैठि रह्यो तागृहमें जाय॥ कीचक काल पहूंच्यो आय ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ होनहारसो नहिं मिटै भावी महा वलिष्ट ॥ कीचक मनसिज सिंधु में बोल्यौ बली अदिष्ट ५५ ॥ दोधकछंद ॥ रैनिभयो सुखकीचक पायो। बामसहेठ बदीतहं आयो ॥ देखित्रिया वपुयों हँसि भाख्यो। तू धनिहै अपनो प्रणराख्यो ५६ आवतही करता कहँ मेल्यो। मान कियो बहु बार न ठेल्यो ॥ नेकजहीं बल कीचक कीनो। दुष्ट ढकेलि त्रिया तब दीनो ५७ जानिगयो यहबाम न होई। है बरबीरन में यह कोई ॥ तोकहँ मारि सुजानी लाऊं। जो न बधौं द्विज दोषनि पाऊं ५८ ॥ सोरठा ॥ भिरे कोपि दोउबीर लट पटात लोटत लिपटि। शूरसमर रणधीर भूधर जनु भूतल भिरत ५६ ॥ चौपाई ॥ द्वे में हारि न कोऊ मानै। कोपि अमित गति युद्धहि ठानै ॥ अतिबल भीमसेन तब कियो। मूढ़ उठाय पुहुमि ते लियो ६० पटक्यो भूमि गरे पगदियो।मारि सुदुष्ट प्राण बिनु कियो ॥ मांझ चौहटे राख्यो जाय। जानैं नहिं पुरजन ये भाय ॥ एक बूंद कहुं रुधिर न आयो। देखत सब जन विस्मय पायो ६१ दोहा ॥ मारि दुष्ट धरि चौहठे जियकी व्यथा नशाय ॥ अर्द्ध रैनि सुत पवनको निजथल पहुंच्यो आय ६२ जागे पुर जन सदन सब प्रात भये नरनारि ॥ मृतक देखि कीचक

तबै सकै न कोउ बिचारि ६३ ॥ नगस्वरूपिनी छंद ॥ नृपाल सुद्धि पायकै । गये तुरंत आयकै ॥ विलोकि भीति ह्वैरहे । न बैन जायँ तहँ कहे ६४ विलाप ताप सों तये । अशेष शोक सोरये ॥ उपाव कौन ठानिये । कछू न बात जानिये ॥ ६५ ॥ दोधकछन्द ॥ बंधव की सुधि ताक्षण पाई । भूपति की तरुणी तहँ आई ॥ रोदन कै अतिही दुख ठाने । देखतभूप महा बिलखाने ६६ (राजोवाच)कौन्यहिं कीचक शूर प्रहार्‌यो । जा सँग युद्ध जुर्‌यो सोइ हार्‌यो॥ अंग नहीं छत श्रोणत आयो । भूलि रहे कछु शोध न पायो ६७ (रानीउवाच) दोहा ॥ रहै तुम्हारे गेह में जाहि सुजानी नाम ॥ गंध्रब रक्षक तासु के निशि दिन आठहु याम ६८ कीचक अति आशक्त ह्वै गही सुजानी बाल ॥ ताही दिनसों मैं लख्यो घेर्‌योहै यहि काल ६९ चौपाई ॥ कीचक तिन गंधर्बनि हयो । काहू पास न राख्यो गयो ॥ अबचलि ताकी किरिया कीजै । लै कुश ताहि तिलांजुलि दीजै ७० लखि कुतवालहि बोले राउ । परजा लोगनि बेगि बुलाउ ॥ लै कीचक को घाटहि जाउ । बिधिसों सब किरिया करवाउ ७१ ॥ गीतिकाछन्द ॥ कहै जैऋषि नीच लोगनि नाहिं अंग छुवाइये । वरण उत्तम होय जोई ताहि बेगि बुलाइये ॥ सुधिआई भूपको तबलै जयंत बुलायकै । बार द्वै यक राज आज्ञा तिहि दई तब टारिकै ७२ फेरि आयो पवनको सुत भूप तासों यों कहै । वचन मेरो मेटिकै कहु बेगि मूढ़ कहां रहै॥पांडुसुतकी कानि राखों क्रोधह्वै कैसे हनो । तूतो रहै सन्मान सों बहु अनुज सरिवर हों

गनो ७३)जयंतउवाच) दोहा ॥ मार्‌यों कीचक मैं कहा कत कीजत है क्रोध ॥ मो दुख पायो बादि नृप अंतहि लीजै शोध ७४ भोजन भाजन छाड़िकै हौं नहिं अंतहि जाउं ॥ मनसा वाचा कर्मना तुमको महा डराउं ७५॥सो-रठा ॥ करी कृपा नरनाह यहिविधि कही जयन्त सों ॥ लै कीचक को जाहु दूरि नगर ते कृतिकरौ ७६ (जयंतउ-वाच) बंधु कुटुंब जो होय सोई मृतकहि काढ़िहै ॥ कहा परी है मोहिं ऐसे कर्मन हौं करौं ७७ ॥ दोधकछन्द ॥ भूपतिको फिरि आयसु पायो। यों नरनाथहि बैन सुनायो॥ जो अब भोजनको कछु पाऊं। लैकीचक को घाट सिधाऊं ७८ भोजन को भुवपाल मँगायो। बैठि जयंत तहां सब खायो ॥ रोवहिं कीचक के सब भाई। जेंवतसो नहिं नेक अघाई ७९ ॥ दोहा ॥ करि भोजन बलिवंड तब कीचक लयो उठाय ॥ दूरि नगर ते घाटपर मृतक उतार्‌यो जाय ८० बनउपबन द्रुम तोरिकै आनि धरे तिहिठौर ॥ और शिखर बहु गिरिन के केतिक आने तौर ८१ इत कीचक के बन्धु सब पकरि द्रौपदी बाल ॥ जारन कीचक संगही लिये चले तिहिकाल ८२ ॥ चौपाई ॥ या हित मार्‌यो बन्धुहमारो। पकरि याहि वाके सँग जारो॥ बर-जत पुरजनसों नहिंमाने। कछु भय अपने चित्त न आने॥ पकरि ताहि लै पहुंचे तहां। कीचक मृतक परो है जहां॥ भरि भरि घट घृत केतिक आने। चन्दन के गुण कौन बखाने ८३ ॥ दोहा॥ रुदन करति लखि द्रौपदी गृह तन चल्यो जयन्त ॥ क्रोध बढ्यो अँग अङ्ग में देखत कर्म दु-

रन्त ८४ बसन उतारि धरे कहूं भीम भयानक धाय ॥ फूलि गात दूनो भयो उपमा कही न जाय ८५ कीच चढ़ाई सकल अँग केश दये मुकराय ॥ कर लै तरुवर बज्र सम दई दिखाई आय ८६ देखि सकल भयभीत ह्वै भागिचले दिशिचारि ॥ एको कीचक के निकट रहे न नर अरु नारि ८७ ॥ चौपाई ॥ कीचक भागे तब अकुलाय। यह गंधर्ब पहूंच्यो आय ॥ भीम बटोरि बीर सब लये। सुर जनु बज्र धाय गिरि हये ८८॥सवैया ॥ अंगन अंगन कीच लपेटि कै केश बड़े चहुंधा मुकराये। भेष भयानक देखि सबै नरह्वै भयभीत दिशान को धाये। हांकि हने द्रुम बज्र के धाय महीधर कीचक भूमि मिलाये। कोपि निशङ्कह्वै अंकभरे सुसकेलि सकेलि चितानि चढ़ाये ८९ दोहा ॥ गये शेष नर भाजि कछु कहो भूप सों जाय ॥ कर तरुवर गन्धर्ब लै तिहि थल पहुंच्योआय ९०॥ त्रोटकछन्द ॥ द्रुम धाय हने बर बीर किते। अवलोकि भजे नर शूर जिते ॥ नृप कीचक हैं तिहि ठाम सबै। सुधि लीजिय जू तहँ जाय अबै ९१ न कह्यो कछु संभ्रम भूलि रहे। मुखते कछु बैन न जाय कहे ॥ सब कीचक भीम जराय दये। तरुणी उर आनँद कोटि छये९२॥ दोहा ॥ गृह तन पठई द्रौपदी आपु गयो सर पास ॥ न्हाइधोइ पहिरे बसन आयो आप अवास ९३ सरवर तट द्रुम डारिकै आयो भूप निकेत ॥ धाइ धाइ नरनारि सब बूझत करि करि हेत ९४ ॥ चौपाई ॥ हेजयंत कहिये सतभाई। को गंधर्ब पहूंच्यो आई॥ ताके हाथ कहां हथि-

यार । सो सब बरगाहु ताको सार ९६ (भीमसेनउवाच) दंडकछंद ॥ आयो बीर ऐसो कोउ गंधब अनैसो गिरि मंदरहै जैसो कौन बरनि बतावई । हाथमें तमाल काल-दंडते कराल बाहु देखिये बिशाल महा काल काल गावई । भारे भार कीचक सँहारे मेरे देखतही भाजेहु न बीर भाजि जान कोऊ पावई । मोहिं बुद्धि आई एक कंदरा में पाई देखो त्रिभुवन राई बिनु और को बचावई ९७ दोहा ॥ नीचे ऊपर काठ दैदीने कीचक जारि । आयोबीर कराल तहँ जहां सुजानी नारि ९८ ॥ चौपाई ॥ ताकेकान मांझ कछुकह्यो । हौं निशंक तहँ बैठ्यो रह्यो ॥ देखत सो उठि गयो अकास । डारि गयो द्रुम सरवर पास ९९ सुनि सुनि सबही अति भयमानी । देवी करिकै गनी सुजानी ॥ अरु गंधर्ब भक्ति उर राखैं । निशि दिन नृप सेवा अभिलाषैं १०० पांचौ बंधव कालहि पाई । भये एक थल सब जन आई ॥ हर्षे भीमसेन गुण गाइ । कोऊ भेद सकै नहिं पाइ १०१ इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजय मुक्तावल्यांकबिछत्रसिंहविरचितायांकीचकबधबर्णनोनाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

चौपाई ॥ दुर्योधन नृप यह सुधि पाई । कीचक किहि मारे सौभाई ॥ सो उर उपजत यह संदेह । भीम कर्‍यो है कारज एह १ (दुर्योधनउवाच) तोमरछंद ॥ सुनिदूत तिहि थलजाउ । यह सुद्धिलै फिरआउ ॥ तब भूप आयसु पाइ । पहुंच्यो तहां सो जाइ २ लहि भेद बात बनाइ ।

तिन कही नृपसों आइ ॥ शत हने कीचकराइ। कछु भेद जानि न जाइ ३ नहि पांडु सुत तेहि ठाम। लहिये कहू नहिं नाम ॥ तब दूत विनयो एह। नृपके भयो संदेह ४ दोहा ॥ भूपति करि संदेह मन बोले भीषम द्रोन ॥ पुर बिराट कीचक बधे कहिधौं कारण कोन ५ (भीष्मउवाच) कीचक को संहारिहै भीम बिना को और ॥ किते द्विरद सम ताहिबल सुभटन को शिर मौर ६ (सुशर्माउवाच) भूपति और बिचार न कीजै। मोसँग सैन अबैकछुदीजै॥ जो हरिकै सुरभी हमलावैं। होहिं तहां सब पांडव धावैं ७ वे सुरभीन हरी सहि रैहैं। लागि गुहारि तहां चलि ऐहैं ॥ भूपति संग चमू सब दीनी। बेगि बिदा तिहि अवसर कीनी ८॥ त्रोटकछंद ॥ नर नाह चमू सबसाजि चले। चतुरंगबने सबसैन भले॥ दिशिउत्तर आपु महीप गये। बनबीथिनमें सब पूरिलये ९ ॥ दोहा ॥ कोपिसुशर्मा तब गयो दिशिदक्षिण उत्ताल ॥ तत्क्षण नृपति बिराट के हरे धेनुके जाल १० ॥ भुजंगप्रयातृछन्द ॥ किते ग्वाल बांधे सुशर्मा जहांते । किते जीव लैलै भगे हैं तहांते ॥ किते आयकै भूपही पै पुकारे। किते धेनु के वृन्द लीनेतिहारे ११ चलौ सेनलै बीरयों आपु भाखें। किधों आपही जाय के धेनु राखें॥ तबै भूप शोचै कहा मन्त्र कीजै। रहैआपनो दांउ सोबोलि दीजै १२॥ दोहा ॥कीच-कको सुमिरे नृपति यह कहि बारंबार ॥ वा बिनु सुरभी बैंडिये कोकहिलगे पुकार १३ हरुवै बोल्यो भूप तब सेनपलानो जाइ ॥ धाय सुशर्मा वीरते सुरभीलेहु छुड़ाइ

१४ ॥ नगस्वरूपिणी छंद ॥ नरेश साजिकै चले। अनेक शूरलैभले ॥ कुरंगज्यों तुरंगहैं। करी समूह संगहैं १५ महा कराल क्रोधमें। चले सुधेनु शोधमें ॥ न अस्त्रसों कहूंमुरें। सुवर्मलै तहांजरें १६॥ दोहा ॥ विजय विहन्नल गृहरह्यो पांडुपुत्रतेचारि॥ देखतकौतुक युद्धको सकैनकोऊहारि १७ चौपाई ॥ तबरण सुभट सुशर्मा कोप्यो। भूपविराट नहीं पग रोप्यो ॥ भागत जानि बांधिरथ धर्यो। लैकहिताहि पयानो कर्यो १८ ॥ दोहा ॥ सहदेव वपु ग्वाल को जै ऋषि को शिरनाइ ॥ टेरि सुशर्मा हाँक दै फेर्यो तत्क्षण जाइ १९ मत्तकरी दल तासु को अंकुश लै फिरि धाइ ॥ फेर्यो बलकरि सिंह ज्यों गह्यो कोपि घसि जाइ २० चौपाई ॥ सबैसुशर्मा बलकरि हार्यो। पांडुपुत्रसो धरणि पछार्यो ॥ मल्ल युद्ध करि दल बिचरायो। छोरि बिराटहि दल में लायो २१ जै ऋषि को तिन माथो नायो। ताकी सेना बहु सुख पायो ॥ लै सुरभी तन मन सुख पाइ। चले आप गृह को तब राइ २२ उत्तर दिशि दुर्योधन राइ। बेढ़ि लईं सुरभी सुख पाइ ॥ करण दुशासन अरु भगदंत। किते यूथ लेचले तुरंत २३ ॥ दोहा ॥ भागे ग्वाल पराय कै बहु बिधि करी पुकारि ॥ उत्तर क्यों निश्चिंत ह्वै बैठ्यो सदन मझारि २४ ॥ छप्पै ॥ दुर्योधन इक हरी हरी दुश्शासन बलकरि। एक करण कुल हरी कोप करि आगे धरि धरि ॥ हरी हरषि भगदंत किती कपिला अरु धौरी। लक्ष्मण कुंवर कलिंग हरी केतिक इक ठौरी ॥ हरी द्रोण सुरभी किती क्यों न

श्रवण यह किज्जिये । सुनि उत्तर उत्तर दिशा सब तेरो धन लिज्जिये २४ ॥ चौपाई ॥ करत कुलाहल गिरि गिरि जात । दीरघ दीरघ स्वर कहि बात ॥ ऐसो धिक् है जगमें जिये । कहा कुंवर तू हारै हिये २५ (उत्तरउवाच) जोमेरे ढिग सारथि होतो । तौकहि कौरव को दल केतो ॥ ताबिनु कैसेकै रथ बाहों । पैड़ो यातें नृप को चाहों २६ (द्रौपद्युवाच) ॥ दोहा ॥ द्रुपद सुता ये बचन सुनि अर्जुन सों हरषाइ । कही सकल युत साहसै इहि विधि कै अकुलाइ २७ ॥ सवैया ॥ क्षत्रिय युद्ध डराइ रहैं जग कर्म वृथा सब धर्म अकारथ । काज त्रिया द्विज गाइन के बरदेत अभैपद जीति कै भारथ ॥ तू सब बात डराइ रह्यो कत चाउन चित्त कहाइ कै पारथ । काहेते बैठि रह्यो हठि कै अब क्यों न करै उठि उत्तर स्वारथ २८ ॥ दोहा ॥ उत्तर सों तबहीं कही विजैविहन्नल बात ॥ क्यों न युद्ध की बात को हरषत है हठि गात ॥ पारथ स्वारथ में कियो जानो रथ हों बाहि ॥ जहां होत हों सारथी कहों कहां डर ताहि ३० भयो विहन्नल सारथी रथ आरुह्य कुमार ॥ सजि कै दल लीनो घनो कोपि कस्यो करवार ३१ (उत्तरउवाच) ऐसोरथ अब हांकि तू तुरत तहां चलि जाउं । हनों सकल शत वंधुवे बचै न कौरव नाउं ३२ ॥ चौपाई ॥ तब सारथि वरुकरि रथ हाँक्यो । औघट घाट न कानन ताक्यो ॥ कौरव दल लखि सिंधु समान । लखि उत्तर घट रहे न प्रान ३३ गाजत सिंधुर अतिहय हींसत । मारै मार करत भट

दीसत॥ उत्तर तब विनवै करजोरि। सारथि फिरि गृहतन रथ मोरि ३४ बारबार सो बिनती करै। एकौ सारथि चित नहिं धरै॥ रथतजि सो भाग्यो अकुलाइ। धाय पार्थ पकर्यो सो जाइ ३५ बांधि धर्यो रथ ऊपर आइ। सनमुख चल्यो सेन के धाइ॥ तब गुरु द्रोणपार्थ पहिचान्यो। सबही सों यह वचन बखान्यो ३६ (द्रोणउवाच)॥ सवैया॥ बांधि रथी रथ आनि धर्यो जिहि आपनि शंक न शंक खरीसी। सायर संगम को अवगाहन आपु भुजा बल पैज करीसी॥ बाण शरासन शूरसजो यह बानि भली कछुमैंनहिं दीसी। पौन के गौनहुते अतिलाघव आवनि सूझति अर्जुनकीसी ३७ दोहा॥ उत्तरसों सारथि कही करि न कछू भव अंक॥ सकल निपातौं अरि चमू रहिये आपनिशंक ३८ नगर निकट तरुवर समी तापर धनु अरुबाण॥ आनिउताइल मों निकट गंजौं अरिदल प्राण ३६॥ दोधकछंद॥ बैन सुन्यो उठिउत्तर धायो। बेगिहि ताद्रुमके ढिगआयो॥लेतहि पन्नग सोदर देख्यो। संभ्रम चित्तमहा तिन लेख्यो ४० सारथि को फिरबैन सुनाये। व्याल भयेइषु मोकहँ धाये॥ यों सुनिकै तब सो उठि धायो। बाण शरासन लै तहँआयो ४१॥ दोहा॥निर्गुण धनु गुणवंतकरि सूधे कीने वान॥काढ़ी गंगा भूमिते धोये सकल कृपान ४२ पहिरि कवच शिरटोपदै करी धनुष टंकार॥ हाँक्यो रथ बहु क्रोध करि पहुंच्यो कटक मझार ४३ बीरधनुर्द्धर धीरके उरमें कछू न शंक॥ भट दुर्घटघट सब कटक करो महा

आतंक ४४ ॥ चौपाई ॥ बैठ्यो आनिधुजा हनुमंत। जाके बलको कछू न अंत॥ पूर्‍यो शंख धनुष टंकार्‍यो ॥ जीतन दुर्जनदलपगुधार्‍यो ४५ (उत्तरउवाच)मोसों कहिन बिहंन्नल आन। सत्य कहो को आप निदान॥ अद्भुत कर्म कछु कहतन आवै। महानिशंकयुद्धको धावै ४६(अर्जुनउवाच) सुनिये उत्तर यह सतभाय। जैऋषि भूप युधिष्ठिर राय॥ हौंअर्जुन यहसुनो कुंवार। भीम जयंत तुम्हारो स्वार॥ ४६ सहदेव सुरभी राखत सैन। बाहक नकुल मनोंमहि मैन ४७॥दोहा॥ वह रानीहै द्रौपदी जाहिसुजानी नाम कछुन भय चित कीजिये जीतौंसब संग्राम ४८ हमहीं लगि सुरभी हरी लेतहमारो शोध॥ अबसुनि बीती अवधिसों तबमैं कीनों क्रोध ४६ फिर उत्तर लाग्यो चरण सुनिसोई सतभाय॥ दशौंनाम अपने कहौ तौमोमन पतिआय ५० (अर्जुनउवाच) जन्मोको हरवृक्षतन अर्जुन पायोनाम॥ सितवाहन अरु फालगुन कृष्ण जिष्णु उर जाम ५१ विजय किरीटी नामभी और विभत्सुहि जानि॥ सव्यसांचीअरु धनंजय येदश नामबखानि ५२॥ चौपाई॥ भीमसेन सब कीचक मारे। लखि अपराधी तेसंहारे॥ मार्‍यो मल्ल द्विरद गहिलायो। तेरेगृहहमबहु सुखपायो ५३ तेरीआय बिपति हम टारी। बरस दिवसकी अवधि निवारी॥ द्वादश बरसैं बनमें रहे। तुम छायामें अति सुखलहे ५४ (उत्तरउवाच) हलकी भारीजो हम कही। समरथ आपनु सोसब सही॥ जोकछु हमते भो अपराधु। सोसबक्षमियो आपनु साधु ५५॥ दोहा॥ बीर

धनंजय क्रोधकरि चल्यो सबलरथ हांकि ॥ अति बलपरे तुरंग तब श्रमित रहेतहँ थांकि ५६ तेजदयो गंधर्ब तब फिरि बलभरे तुरंग ॥ कही द्रोणगुरु पार्थसों क्योंनकरै रणरंग ५७ (द्रोणउवाच) सवैया ॥ आयो धनुर्द्धर धीरबली सुकहौ रण सन्मुख को अबरैहै। युद्ध जुर्यो नहिं नेकहु सो यम खाइगयो मुख त्योंदल खैहै। याही ते शोच बढ्यो उर अन्तर को कहिधौं बर बाणि निसैहै। कोटि उपाय करोतुम पारथ जीत्यो न जैहै न जैहै न जैहै॥ सोरठा ॥ बीरालयो कलिंग जीतन पारथ बीरको ॥ कियो कोटिरण रंग अचल मेरुसो धरपर्यो ५८॥ दोहा ॥ पार्थ सहस दश बाणसों हन्यो कोपिकै बीर ॥ मूर्छित गिर्यो कलिंग रण धरि न सकत दलधीर ६० जबकलिंग मूर्छित गिर्यो तब विकर्ण रण गाजि ॥ कोपि शरासन बाणलै आयो सन्मुख साजि ६१ ॥ नाराचछंद ॥ तबै विकर्ण बाणतीस पार्थके हिये दये। विशेष बाण वृष्टि सों सलोप सूर ह्वैगये। नजानिये निशान द्यौस अंधकारसों छ्ये। सरोष पांडु पुत्रह्वै कृपान कोपिकै लये६२ दोहा ॥ तब विकर्ण चालीस शर हनेकोपि बलवंड ॥ कोटि बाण नभ छायकै संग्रमकियो अखंड ६३ तब विकर्ण साहस सहित भूमि गिर्यो मुरझाय ॥ निरखि करण बरबीर तब लीनो धनुष चढ़ाय ६४ रण अर्जुनके नेकहूं सहिन सक्योसो बान ॥ रण मंडल तजिसो भज्यो रवि सुततेज निधान ६५॥चौपाई ॥ देखेकरण महाबल हारे। दुश्शासन भगदंत सम्हारे ॥ दुर्योधन शत बंधव धाये।

चहुंदिशि घेरि पार्थको आये ६६॥ सुंदरीछंद ॥ नीरदघेरि रहे गिरिको जनु। योंचहुं ओरनितें भट अर्जुन ॥ कोपित बीर घने शर डारत। इक लैलै गिरिके गन मारत ६७ लैकर बाणनि पार्थ उठ्यो तब। मारि भगायदये बलकै सब ॥ भागत शूर नहींफिरि हेरत। तेरणभूमि घिरेनहिं घेरत ६८॥ सवैया ॥ घोरघने घनसे घुमड़े उमड़े दलदीरघ दीसन लागे। चामरसे धुरवाधरधार ध्वजा चलदामिनि कीद्युति जागे ॥ बुंदनिसे बर्षें शरजाल सुबीर सबै रसबीरसों पागे। पौन ज्यों पत्थर उड़ाय दये भहरायकै नीरदसे भट भागे ६९ अक्षय तूनते एक कढ़ै शर देखत ही लखिये करऐसो। आवतही मृग यूथनि ऊपर कोपि उठ्यो सुतकेहरि कैसो ॥ सेही करै भटबोधि सबै तिन और कियो वर विक्रम ऐसो। काटिदये ध्वज बैरख चौंर बिछाइदयो कदली बन जैसो ७० ॥ भुजंगप्रयात्छंद ॥ जबै पार्थके क्रोधसों बाण छूटे। किते सैनके जूहके शीश टूटे॥ गयेभागिकै एक पीछे न चाहैं। कटैंएकते जानु जंघा न बाहैं ७१ महा क्रोध कैकै धनैंबाण सांधैं। सशोके किते बीरके यूथबांधैं ॥ छुट्यो मोहिनी बाणसो सर्ब मोहै। कहांलौं बखानों नमोहै सुकोहै ७२॥ चौपाई मोहिरह्यो दल संभ्रम छाइ। एक नमोहे भीषम राइ॥ उत्तर पठयो तबै प्रचारि। पटभूषणसबलाउउतारि ७३॥गीतिकाछंद॥ शीशभूषण सेनके नृप आदिदै सबके हरे। आनिकै तिहि बार उत्तर पार्थके आगेधरे ॥ जागिकै कुरुराज लज्जित बाण धनु करगहि लियो। धाय भीषम बरजि राख्यो

प्रगट तासों योंकियो ७४ एकपार्थ अनेक जानो युद्धजी-
त नहींसको। लाजह्वैहै बीर भागत चित्तमें यह नात-
को॥ विकलह्वै बिलखात विथक्यों कछूनहिं मुखते कहै।
व्याल ज्यों लै श्वास दीरघ बचन घनसे उर सहै ७५
दोहा॥भीषम आयसु मानिकै दल लै चल्यो अवास।
धावन धाइगयो तबै नृप बिराट के पास ७६ (दूतउवाच)
जीतीउत्तर अरिचमू कौरवगये पराइ। सुत सपूत कीनी
विजय भाग तिहारे राइ ७७॥चौपाई॥ भूपति खेलत
पांसे सारि। संग लिये जैऋषि सुखकारि॥ हरष्यो
सुतकी कीरति गावै। सब जन मन आनन्द बढ़ावै ७८
(जैऋषिरुवाच) दो०॥ विजय ब्रिहन्नल जिहि कटक सो
कत जीत्यौजाय॥ युद्धजुरैं संग्राम थल यमहूं देइ भगाय
७९॥चौ०॥इतनी सुनत भूप परजर्‌यो। रातेदृग करि बहु
रिसभर्‌यो॥ ततछिन नहिंनरनाथ बिराट। पांसे जैऋषि
हयेलिलाट८०छूट्यौ रुधिर द्रौपदीधाई। अंजल मैं तिन
लीनो जाई॥ निरखि भूप उर चिन्तामानी। क्योंन क-
है यह भेद सुजानी ८१ (सुजानीउवाच) भूतल रुधिर
परे जो एह। द्वादश बर्ष न बर्षै मेह॥ यों कहिकै भूपति
समझायो। भीमसेनके उर दुखआयो ८२॥ दोहा॥ क्रोध
भयो लखि भीमउर धर्मपुत्रदै सैन॥ बरज्यो केहरि क्षुधि-
त ज्यों युक्तकछू यहसैन ८३॥ दोधकछंद॥ उत्तर गृह
तबहीं चलिआयो। भूपति को यह बैन सुनायो॥ आजु
ब्रिहन्नलही दल जीत्यो। कौरवको बहुधा बलरीत्यो ८४
शूर भगाइ दये सबरेयों। पौन विडारत मेघ घनेज्यों॥

मौनहि भूपति काम सिधायो। उत्तर भीतर बोलि पठायो ८५ युद्धकथा शवरी सुनिलीनी॥ सारथिकी शर जाल प्रवीनी॥ अर्जुनहै जिहि कौरव मारे। द्यौसइते इहिठाम निवारे ८६॥ दोहा॥ धर्मपुत्र नरनाह सों अर्जुन बोल्यो बैन। जाने हम सब कौरवन अब कछु चिन्ता हैन ८७ तेरह वर्षे द्योसदश बीतगये इहिठाम। अब बैठो शिर छत्रधरि गुप्तकरौ कतनाम ८८॥ सवैया॥ पाइकै त्रास अ-वास तजै बनबासजे दुःखन साधना साधी। भूखन प्यास उदास महागति योग के योगिनि की अवराधी॥ नेकहु शोच सकोच कर्‌यो नहिंकानि सबै कुरुनन्दन वाधी। आयसु दीजिये कोपि महीपति लेहिं भुजा बलसों भुव आधी ८९॥दोहा॥ प्रातहोत शिरछत्र धरि धर्मपुत्र सुख पाँइ॥ दानदये कबि छत्रकहि विप्रहि बिप्र बुलाइ ९० बंधव चारों जोरिकरि ठाढ़ेभये सुजान। कारण सबही काजकै कीजैकाहि समान ९१ नाहिंन बाहन उपनह्यो उत्तर सहित विराट॥ नृपति युधिष्ठिर चरण पर राख्यो आनि लिलाट ९२ (विराटउवाच) सोरठा॥ ढिठय भई जो होय सोक्षमिये करिकै कृपा। भूप बड़ेजे होय चूकन मानत जननकी ९३॥ चौपाई॥धोखे तुमपै सेवकराई। सो सब चूक कहीनहिं जाई॥ ओछीपूरी मननहिं धरिये।ईश अनुग्रह हमपर करिये ९४ (युधिष्ठिरउवाच) दोहा॥ तुमसे तुमहिं न दूसरो जगमंडलमें आन॥ विपति हमा-री सबहरी राखे पुत्र समान ९५॥चौपाई॥ तुम पटु तर को दीजैआन। सुरनर नाहीं अपने जान॥ तुम हमको

सब कीनी भली । तव कीरति सब भूतल चली ९६ नित नितनेह दीसिहैंनये । अबतुम भुजा हमारी भये ॥ जीतसमर सुरभीजे आनी । जितनी२ जाकी जानी ९७ तेसब जाकी ताकोदीनी । सबकी बिदा महीपति कीनी ॥ दुर्योधन संदेश पठायो । भूप युधिष्ठिरपै चलिआयो९८॥दोहा॥ प्रगटे भीतर अवधि तुम फेरिकरौ बनबास॥मितिसों पूरण कीजिये तब तुम करौ प्रकाश ९९ कहिसब विधि मलमासकी समझायो सोदूत ॥ समदिशही बैठ्योतहां ज्यों सुरपुर पुरुहूत १०० इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजय मुक्तावल्यां कविछत्रसिंह विरचितायांअर्जुनविजयवर्णनो नामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

दोहा ॥ उत्तरसों कीनोमतो नृप विराट तिहिवार ॥ दुहितादीजैअर्जुनहि करिबिवाह शुभचार १॥दोधकछंद ॥ अर्जुन ताको नृत्य सिखायो । द्यौसनिशा गुण तासुपठायो ॥ ताकहँसो दुहिता अबदीजै । जियमें और बिचार न कीजै २ योंकहिकै तिन दूतपठायो । अर्जुनको यह बैन सुनायो ॥ तोहिंसुता नृप अपनी दीनी । हेतुबिवाह सबै विधिकीनी ३ (अर्जुनउवाच) मैंदुहिता सम जानि पठाई । लाजतुम्हैं नहिं भाषत आई ॥ मोसुतको दुहिता अब दीजै ।आनँदसों सब कारज कीजै॥भूपतियों सुनिकै सुखपायो । बूझि महूरत मंगल गायो ॥ गावत आनँद सों नरनारी । भूप युधिष्ठिर को सुखभारी ५ ॥ दोहा ॥ दूत द्वारका नगरको पठयो बहुसुख पाइ ॥ बार न लागी

बाटमें कही कृष्णसों जाय(दूतउवाच) दंडकछंद॥ दीनन
केनेहसो न डोलतहो गहेगहे द्रौपदीकी लाज वहेऐसी
कौन बाततो। तात मात पास प्रहलाद ह्वै निराश रहे
जौन होती तेरी आश त्रास कैसे सहतो॥ ओकछाड़ि
आपनो सुलोक कियो लोक लोक कौन भांति थिर थोक
ध्रुवलोक लहतो। त्रिभुवन राय जोपै होते न सहाय आ-
पु कैसे कै धौं मेरो काज और लों निबहतो ७॥ दोहा॥
करि आये हो करत हो करियो सदा सहाइ॥ सहित मातु
अभिमन्यु लै आपु पहूंच्यो आइ ८ चले कृष्ण भगिनी
सहित लै अभिमन्यु हि साथ॥ चले तुरत सुख पाइकै
धर्मसुवन नरनाथ ९ मिलि कै शारँग पाणि को लै आये
निजगेह॥ अस्तुति वंदन युत करी मन बच क्रम करि नेह
१० (युधिष्ठिरउवाच)॥ छन्द॥ श्री यदुनन्दन मुनि
जन वंदन। कल्मष हर सब दुष्ट निकंदन॥ जग तारण
वक बदन विदारण। दुख दारण गजराज उधारण ११
जग पावन संतन मन भावन। व्रज छावन गिरिवर नख
लावन॥ जन मन रंजन भव भय भंजन। दनुजन मर्दन
भव धनु गंजन १२ कंस विनाशन प्रभु गरुड़ासन।
यदुवंशी अवतंस प्रकाशन॥ असुर निवारण मुनि जन
पारण। कुंजविहारण गनिका तारण १३ जगधर नग
धर पीतांबर धर। हरि दामोदर हलधर सोदर॥ सिंधु
सुता बर श्रीराधाबर। नरकनि हर वर रदन धरणिधर
१४ जनकसुता भूषणभुव भूषण। सुर रिपुदूषण तल तल
पूषण॥ भक्तन हितकारी हरि निशि चारी। भक्ति ति-

हारी सब भयहारी १५ ॥ दोहा ॥ करि अस्तुति श्री-
कृष्ण की भूपति पुनि शिर नाइ ॥ नगर कंपिला द्रुपद
गृह दीनो दूत पठाइ १६ ॥ चौपाई ॥ सुनत सँदेशो फू-
ल्यो हियो । भूपति द्रुपद पयानो कियो ॥ गजरथ बाहन
तुरी तुषार । सब दल युत साहन भंडार १७ पंचाली सुत
पांचौ साथ । पहुंचे पुर बिराट नरनाथ ॥ विदुर गेह तें
कुंती आई । मिली सुतन अति आनँद छाई १८ द्रुपद
सुता ताके पद वंदे । सब बिधि कै सब जन आनंदे ॥ बन
तें चली घरू का आयो । मायावी माया मग छायो १९
नगर राज गिरि तें चलि आयो । दुशासंघ भूपति मन
भायो ॥ धर्म्मपुत्र सुरराज समान । बिवुध अनुज सब
बुद्धि निधान २० ॥ दोहा ॥ शुभ घटिका शुभ लग्नगनि
शुभवासरहि सुधाइ ॥ रच्यो ब्याह अभिमन्यु को
मंगल चार कराइ २१ दोउ कुल की रीति ज्यों करि
बिवाह सुख दानि ॥ बाजीगज रथ छत्र कहि दीनो आनँद
मानि २२ ॥ सुंदरीछन्द ॥ भाट भले बिरदावलि गावत।
सिंधुर बाजिन के गन पावत ॥ नृत्य गुनी जन नर्तन
साजत । ताल पखावज साजत बाजत २३ को बरणौं
सब आनँद संयुत ॥ वासरहू निशि कौतुक अद्भुत । भां-
वरि पारत वेदनि उच्चरि ॥ द्वौ कुलकी ऋषि रीति तबै
करि २४ ॥ दोहा ॥ दै सोवो समदी सुता हरषे भूप
विराट ॥ धर्मपुत्र सुख पाय कै लसत अनंदित पाट २५
(युधिष्ठिरउवाच)॥ सोरठा ॥ सुनि अर्जुन गुणग्राम
वेगि बुलावो मयसुतहि ॥ धवल सँवारहु धाम खचि ख-

चि रचि रचि जाल मणि २६ ॥ त्रोटकछंद ॥ तब पार्थ मयासुर बोलि लयो। बहुभांतिन के सुख सद्म ठयो ॥ प्रति धामनि चित्र बिचित्र कर्यो । रँग रंगनिही गुरु बान ढर्यो ॥ अति दीसत सुंदर सेतअटा। इक नील बने जनु मेघ घटा ॥ उपमा कबि कौन बखानि कहैं। निरखैं नर कौतुक भूलि रहैं २८ इक अद्भुत वाहिर शोभ सने। नृपके रहिवे कहँ धाम बने ॥ तहँ बैठत भूपति नित्य सभा । अमरावति मोहति देखि प्रभा २६ पुर अंतर धाम सुशोभगहैं। रनिवास जहां सब वाम रहैं ॥ हय हींसत वारन गाजत हैं। निशि बासर दुंदुभि वाजत हैं ३० भुव भूपसभा सुख साजत हैं। द्विज वृंद तहां बहु राजत हैं ॥ बहु भीर तहां दरबार रहैं। कहि को कवि ताहि बखानि कहैं ३१ इतिश्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायांअभिमन्यु बिवाहवर्णनोनामपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

(भुजंगप्रयातछंद) सोमवंश धर्मपुत्रशक्रसो सभालसै। चारिवंधु देवसे विलोकि दुःख सोनशै ॥ अंजलीन जोरि जोरि कृष्णपै विनैकरी। शोधिकै जहां तहांविपत्ति जीव कीहरी ॥ अर्द्धदेश पाइये बिचार आपसो करौ। ज्यों हरै अशेष शोकत्यों कलेश ये हरौ ॥ देशते निकारि अंध पुत्र कानि नाकरी। धाम ग्राम छीनिछीनि संपदा सबैहरी २ दोहा ॥ करि आयेहो करत हौ सेवक सदा सहाय ॥ करी वंदना कृष्णकी धर्म सुवन भुवराय ३ (युधिष्ठिरउवाच)

चौपईछंद ॥ कच्छप बपु धरि साइ रथा हन। मत्स्य रूप संखासुर दाहन॥ वंदत मुनि जन सनक सनंदन। जैजैजै तुम जै जगवंदन ४ शूकर रूप रदन धरनी धर। बर हिरण्याक्ष पतित प्राणनि हर॥ भूतल खल दल दुष्ट निकंदन। जैजैजै तुम जै जगवंदन ५ नर हरि बपु धरि भक्त सँवारण। हिरनाकुश नख उदर बिदारण॥ कोटिक कष्ट हरण जग फंदन। जैजैजै तुम जै जग बंदन ६ छल बल वलि पताल पठावन। बावन बपु धरि भूतल आवन॥ काटत सब माया दुख दंदन। जैजैजै तुम जै जगबंदन ७ परशु पाणि छत्रिय मद नाशन। रघुकुल कमल दिनेश प्रकाशन॥ रामचंद्र दशरथ नृप नंदन। जैजैजै तुम जै जग बंदन ८ कंस कठोर असुर भय कारी। केशी मर्दन अजिर बिहारी॥ पीत बसन तन चर्चित चंदन। जैजैजै तुम जै जग बंदन ९ बोध स्वरूप पुहुमि पर धरिहौ। कल की ह्वै दुष्टनि संहरिहौ॥ वरणत विदित छत्र बहु बंदन॥ जै जैजै तुम जै जगवंदन १०॥ दोहा॥ विनय मानिकै करिकृपा दुर्योधन पै जाउ समझाओ बहु विधिन कै बचै गोतको घाउ ११॥ चौपाई॥ विहँसि कृष्ण तबहीं उठिधाये। नगर हस्तिनापुर चलि आये॥ सुनि कुरु नंदन अनुज पठाये। सभामध्य श्रीकृष्णहिलाये १२(श्रीकृष्णउवाच) धर्मपुत्र तुमपास पठाये। गोत बिरोधहि मेटन आये॥ भूपति जगमें यह यशलीजै। आधोदेशबांटि कै दीजै १३ अपने कुलहि कलंक न लावौ। कलह गोत को भूप ब-

चावो ॥ दुर्योधन बोल्यो अकुलाई। कैसे सकों कलेश बचाई १४ देशबांटिजो उनको देहौं। योगीह्वै कपाल कर लेहौं ॥ भूमिबांटि कत मोपै पावैं। जोवे नभ भूतल फिरि आवैं १५ (श्रीकृष्णउवाच) औरभूमि भूपति जिनिदेहु। पंच ग्राम दीजै करिनेहु ॥ तिल पथ नाग इंद्रपथ लीजै। अरुसुनि पथ पानीपथ दीजै १६ (दुर्योधनउवाच) ॥ दोहा ॥ सूचि अग्र जितनी कढै सो कबहूं नहिं देहुं ॥ पीछे भुव वैइलहैं प्रथम युद्ध करि लेहुं १७ ॥ चौपाई ॥ तुमहिं कहत यह कैसे आवै। जीवत मोहिंको धरनी पावै ॥ सुनि मुनि बचन जरतहै गात। जियत सुनै यह अद्भुत बात ८ (श्रीकृष्णउवाच) सवैया ॥ लोकमें शोक समूह बिनै अपलोक महा अपने शिरलेहौ। केलि सकेलि महादुख मेलिहौ यों यश पेलिकै अपयश पैहौ। उपायकै व्याधि न लीजिये रायसु आयपरै ते हिये पछितैहौ। सूझिपरी यह कृष्ण कही तब आपु मही सब दैहौ जुदैहौ १९ कोपिकै लेइ गदाकर भीम सुपार्थ धनुर्धर बाण निवाहै। बंधु समेत तहाँ सहदेव सुसाइर संग्रम को अवगाहै। बैठि ध्वजा हनुमंतबली रणगाजि उठै यह तू मन चाहै। ऐसोइ भावतुहै जिय तोहिं सुजाने को तेरी कहा मनसाहै २० ॥ दोहा ॥ कृष्ण उठे ए बचन कहि तिनको यह समझाय ॥ भावी सोकैसे मिटै को कहिसकै बचाय २१ नगर हस्तिनापुर तबै कुंती पहुंची आय ॥ समाचार श्रीकृष्णजू कहे सकल समुझाय २२ दुर्योधन मति परिहरी देतन पांचो ग्राम ॥ देवेको कहिका चली श्रवण सुनत

नहिं नाम २३ एकबात को भय भयो कर्णहि बाढ्यो गर्व॥ मारि लेहुं यह कहतु है जीतौं भारत सर्ब २४ जाहु आपतुम कर्णपै लाउ आपने गेह॥ कुशल होइ तुम सुतन को बाढ़ै अद्भुत नेह २५ कर्ण पास कुंती गई उन उठि वंदेपाइ। करि आदर आसन दयो बैठे सबसुख पाइ॥ (कुंत्युवाच) चौपाई॥ जेठो सुत तू तेरो राज। लेहु सकल गृह चलिये आज॥ हँस्यो करण माता मुख चाहि। यह सब बात अबूझत आहि २७ तब तुम राज हमारो टार्यो। घालि मंजुषा जलमें डार्यो॥ तन पोष्यो दुर्योधन छांह। अबकत डारत नर कन मांह २८ (कुंत्युवाच) जो नचलो सुतकरिके नेहु। एक बात तो मांगेदेहु॥ मो पुत्रन को करिन प्रहार। यह सब करौ दया को सार २९ सुनिसुत मेरोवचन बिलास। पांच बाण जो तेरेपास॥ जननी को करिकै हित देहु। यामें जगत विदित यश लेहु ३० (कर्णउवाच) चारिपुत्र तुवहित परिहरों। एक पार्थ सों तोरण करों॥ औरनि को नहिं घालों घाउ। अब माता अपने गृह जाहु ३१॥ दोहा॥ दीने पांचों बाणकर कुंती को तिहि काल॥ बिदा करी पग वंदिकै तबै कर्ण भुवपाल ३२॥ चौपाई॥ यहसुनि कुंती आई तहाँ। त्रिभुवननाथ कृष्णहै जहाँ॥ कही कर्ण सो वरणि सुनाई। यहि विधिकै सब निशासिराई॥३३ दोहा॥ प्रात होत श्रीकृष्णजी दुर्योधन के पास॥ गये फेरिहित संधिके छत्र सुबुद्धि अवास ३४ (श्रीकृष्णउवाच) कह्यो हमारो कीजिये पंचग्राम किन लेहु॥ बंधु एकसौ पांच सौ निशि

दिन बढ़ै सनेहु ३५॥ (दुर्योधनउवाच) नित उठि उसले सालहरि कतहिं सलावत आनि॥ करों अपांडव भूमिसब करों न कुलकी कानि ३६ (श्रीकृष्णउवाच) ॥ सवैया ॥ कोपि कोपि भीम भुजा रोपि रोपि रण मांझ ओपिओपि मुख गदा लीने गल गाजि है । रोष हिये आनि आनि क्रोध धनु तानि तानि लैकै पार्थ पानि धनुबाण सूधो साधि है॥ अश्विनी कुमार के कुमार नीकी हांक सुने धीर न धरोगे बल पौरुष सो भाजि है। गर्व्वही आरूढ़ मंत्र मूढ़ तू न जानै कछू चेतिहै तू मूढ़ जब आय मूड़ बाजि है ३७॥ दोहा॥ यह सुनि शकुनि सरोष ह्वै कही नृपति सों जाय॥ कहा कानि याकी करों बांधिलेहु सुख पाइ ३८ सब मिलिकै चाहत कियो बनै नहीं कछुबात॥ बिलखे भीषम बिदुर तब बिह्वल ह्वै गयो गात ३९॥ चौपाई॥ भीषम बिदुर बिलोकतजानि॥ बदन पसार्‌यो सारँग पानि॥ मुख भीतर देख्यो ब्रह्मण्ड॥ संभ्रम पायो चित्त अखंड ४०॥ छप्पै॥ देख्यो गगन सु सूर्य्य चंद तारागन देखे॥ देखी पहुमि सु नीर भूरि भूधर सु विशेषे॥ देखे सरिता सलिल सिंधु सरवर जल संयुत॥ देखे तरुवर बिपिन सघन द्रुम उपवन अद्भुत॥ मृगराज मत्तमातंग लखि अवलोकेऋषि राज गन॥ भ्रम भूलि बिदुर भीषमरहे शिथिल बिकल ह्वै सकलतन ४१ (भीषमउवाच) खल दुर्योधन मर्म न जानत॥ सिख त्रिभुवन पति की नहिं मानत॥ भूल्यो मूरख नृपता गर्व्व॥ कुल के कर्म तजे ति-

न सर्ब्बं ४२ ह्वै है सो जु रची करतार। भीषम कहत बारही बार॥ चले कृष्ण नृप को समझाइ। पहुंचे धर्म-पुत्र पै जाइ ४३ (श्रीकृष्णउवाच) सूक्षम महि तुमको नहिं देत। उद्यम लीनो भारत हेत॥ बिना युद्ध वह कछू न देहै। जो रण जीतै सो भुव लेहै ४४॥ इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायां श्रीकृष्ण दुर्योधनसंवादोनामषड्विंशोध्यायः॥ २६॥

अथ उद्योगपर्ब्ब कथनं॥

सुंदरीछन्द॥ बैठि सभासुत धर्म मही पति। बोलि लये तहँ कृष्ण महामति॥ बंधव चारि बिराजत ताथल कौन बखानि कहै तिनके बल १ (राजोवाच) चौपाई॥ युद्ध बचै हरि सो कछुकीजै। भूतल में बहुधा यश लीजै मोहिं महा उरमें डरु आवत। बिग्रह हौं निशि द्योस बचावत २॥दोहा॥ बनिआई सबके मतै लीने द्रुपद बुलाइ॥ संधि काज कुरुराज पै दीने तुरत पठाइ ३ गये द्रुपद नरनाह तब भूपति कौरव पास॥ आदरकरि आसन दयो बोल्यो वचन प्रकाश ४ (दुर्योधनउवाच) गीतिकाछंद॥ कौन हेत महीप आये सो कहौ समझाय कै। पावन भये तुम दरश ते बहु सुःख दीनो आयकै॥ द्रुपद भूपति यों कह्यो जग में महा यश लीजिये। नृप युधिष्ठिर को धरा नृप बांटि कै कछु दीजिये ५ नेह करि कुल कलह नाशौ लेहु तिनहि बुलाय कै। सब आपनी

मर्य्याद सों रहिहैं सदा सुख पायकै ॥ लगी शरसी बात यह सो चित्त नहिं कछु लावही । कहत बिनु रण कौन मोपै भूमि रंचक पावही ६ को युधिष्ठिर भीम को है बचन कोटि न पावही । तौ न छांड़ौं बरुण सुरपति आप आय बचावही ॥ द्रुपद सुनि कै शीश ढोर्यो रची सोई ह्वै रहै । सो बचाई क्यों बचै झुकि क्रोध सों तब यों कहै ७ सवैया ॥ लोक में आप कछू अपलोक न लीजै न लीजै न लीजिये जू । चाहत भूमि युधिष्ठिर सूक्षम दीजिये दीजिये दीजिये जू । यों करिराज निकंटक आपन कीजिये कीजिये कीजिये जू । छत्र महा हित कै तुम वैन पतीजिये पतीजिये पतीजिये जू ८ दीजिये पंच उने अब ग्राम नहीं नृप की नृपता घटि जैहै । बैठि रहै तिनमें अब जाय युधिष्ठिर आप महा सुख पैहै । जानि अजान प्रमाण के मान कि भूमि अबै अपने बल लैहै । बाण कि धारमें स्यो परवारहितोहिं बहाइधनंजय देहै ९ दोहा ॥ फिरि आये तबद्रुपद नृप नृपतियुधिष्ठिरपास ॥ दुर्योधन की कुमति के कीने वचन प्रकाश १० (द्रुपदउवाच) बुधिकै कै बहु चातुरी अरु कैकै उनमान ॥समझायो समझै नहीं करि देखे सब स्वान ११ हरि बिराट पठये तहीं नृपति तीसरीबार । समझाओ दुर्योधनै बाचै कलह अपार १२॥चौपाई ॥ नृप विराटबहु बिधिकैकही। सूक्षमसी कछुदीजै मही ॥ वे संतुष्टबैठि तहँरहैं । फेरिकछू नहिं तुमसों कहैं १३ (दुर्योधनउवाच) दोहा ॥ ह्वै है कै जग बावरो मांगत धरनी आय । हनौंपंडु सुत छिनक में

को अब सकै बचाय १४ हमसों राखौहेत तुममति भाषौ वै बैन। जौलौं जियमें जीवधर कहौंन तिल भरिदैन १५ (विराटउवाच) सवैया ॥ आपु बरावहु गोत को घाउ उतै उनि बारही बार बराई। देन कहौ नहिं चारिक ग्राम कहा मतिधौं तुमको बनिआई। होनी जो होइ सो होइ रहै न मिटै यह भूपति मैं मति पाई। नीकीयो औरु बुरी बुधिको सबको करताहरता करताई १६ ॥ चौपाई॥ इन कहिबे में कछू न राखी। जो मुख आई ते सब भाखी॥ कहा कहै काहू के होई। होनी मेटिसकै नहिं कोई १७ आयेनृप बिराट उठि धाम। किये कृष्ण को अमित प्रणाम॥ कहेन मानत खल कछु बात। सुनि सुनि बैन जरत है गात १८ यह सुनि कृष्ण बिदा तब भयो। चलिकै नगर द्वारका गयो॥ नृपति युधिष्ठिर मन दुचिताई। वाचत सूझी नहीं लराई १९ ॥ दोहा॥ उत दुरयोधन अनुज युत कीनो चित्त बिचार। भीषम अरु आये विदुर बैठ्यो सब परिवार २० (दुर्योधनउवाच) भुजंग प्रयातछंद ॥ बढ्यौ शोच तौ आपने चित्त कीजै। मतो होय पूरो पिता मोहिं दीजै॥ सदा पंडु के पुत्र हैं साल मेरे। तिन्हैं नाशकै यत्न कीने घनेरे २१ कहौ मंत्र जो जासु के चित्त आवै। हितू होय सो हित्तही की बतावै॥ गई तेरहौं वर्ष यों सुःख माहीं। रहै साल जाको सुजीवै वृथाहीं २२ (विदुरउवाच)करो मंत्र सोई तुम्हैं चित्त आवै। हमारो कह्यौ क्यों हिये मांहि भावै॥ तजौ विग्रहै संग्रहौ बात ऐसी। सबै भूतली में कही वेद जैसी २३ (भीष्म-

उवाच) सवैया ॥ एक सुनै नहिं भाषी अनेक सुटेक सबै हैं कुटेक की टेकी। ताको भलोन भयो कबहूं जिहि पैज तजी नहिं आपु कहे की। यों समझो अपने मनमें हठ झूंठ की नाहिं न बानि भलेकी। छांड़ि दई कुलकी करनी यह रीति लई हठिकै अबिवेकी २४ ॥ चौपाई ॥ भुवपै रहत नदीसै कोई। अमर एक यश अपयश होई ॥ हिरनाकुश अरु रावण गयो। यह धन नहिं काहू को भयो २५ कत अभिलाष तासु को कीजै। लोक बिलोक अलोकन लीजै ॥ हानिहोइ जीते अरु हारे। यम रहिहैं नित बदन पसारे ॥ २६ सुनत बचननहिं भूपहि भायो। तब तिन नियरो शकुनि बुलायो ॥ सोई करो जु मंत्र विचारो। मोउर भावत वचनतिहारो २७ (शकुनिउवाच) मेरो मतौ महीपति कीजै। नगर विराट वेगि लै लीजै॥ जौलौं उनकों नहीं सहाउ। लै सब सेना तिहि थल जाउ २८ पांचों बंधु न मारौ आज। सीझि जाय तौ स-गरौ काज ॥ उपजतही जो काटिय व्याधि। फिरिकत मारिय औषधि साधि २६ ॥ दोहा ॥ अंकुर निरखि क-रेछ को कपि तोरे तिहि काल। त्यों अपने अरि मेटिये कुटँब सहित भुवपाल ३० ॥ चौपाई ॥ सुनि मत मानि भूप दल साजा। सकल बुलाये भुव के राजा ॥ सिमटे दल पहुमी न समाय। छार भये सब गिरिवर जाय ३१ आये सोम दत्त भुव राय। अरु भगदत्त सबल दल लाय ॥ तिनके दलकी संख्या नाहीं। रथहय हाथी गनेन जाहीं ३२ सेना सल्प छोहनी तीन। कोरथ वाजी गनै

करीन ॥ कर्ण महारथवंत पलान्यो । अगणित दल कलिंग तहँ आन्यो ३३ कोपि चल्यौ रण आप सुशर्मा। कौन गनै रण अद्भुत कर्मा ॥ दुर्योधन द्वारावति आये। आवत श्रीहरि दर्शन पाये ३४ (दुर्योधनउवाच) करौ सहाय हमारो आप। तौ जग में अति होय प्रताप ॥ दल सजि चल्यौ हमारे साथ । बार बार विनवैं नरनाथ ३५ (श्रीकृष्णउवाच) दोहा ॥ मैंतो सब आयुध तजे अस्त्र गहौं नहिं हाथ ॥ कृतवर्मा यादव दयो दल युत ताके साथ ३६ यादवदल सजिकै चल्यौ सुभट चमू चतुरंग॥ अस्त्र शस्त्र तनु त्राण कसि कसे चर्म्म सब अंग ३७ तीन छोहनी शकुनिदल नीरद घोर समान ॥ चपला चं-चल चल ध्वजा धनुषहि धनुष बखान ३८ दल एका-दश छोहनी सिमिटि चल्यो कुरुखेत॥ महारथी अरु अति रथी बलकृत हैं रण हेत ३९ ॥ सवैया ॥ कोपि चल्यो दुरयोधन को दल कोपि चले सब शूर बली हैं। कुंजर पुंजनि पायक जाल सुभार परै भुव भूरि हली हैं। छा-य रह्यो तम लोपि दिवाकर लोपि गई सब व्योम थली हैं। बाजिन की खुर तारनि सों उठिकै धर धूरि अकाश चली हैं ४० (सुंदरीछंद) कुंजर पुंजनि पुंजनि सोहत लाल ध्वजा तिनपै मन मोहत। दीरघ शब्द महाधुनि गाजत। ज्यों तड़िता युत वारिद राजत ४१ हैयह चंचल कै खग खंजन। पौन कुरंगन की गति गंजन॥ शंख घने बहु दुंदुभि बाजत। बंदि सबै बिरदावलि साजत ४२ ॥ मधुमारछंद ॥ सुपर्ब्बत चूरि। भये सब धूरि॥ गये मि-

टि नीर । हुते जुगंभीर ४३ गये कुरुखेत । सजे रण हेत ॥ पर्‌यो दल जाय । धरा न समाय ४४ ॥ दोहा ॥ इत दल साज्यौ सबल अति नृपति युधिष्ठिर नाह ॥ चढ्यौ बीर रस सबनि को सबही के उत्साह ४५ साज्यौ बहुरि विराट दल रथी अतिरथी शूर ॥ चलत द्विरद बाजी चपल फूटि होत गिरि चूर ४६ साज्यौ द्रुपद विराट दल दुरासंध सुख पाइ ॥ चले पंडुसुत साजि कै गर्ज्जि निशान बजाइ ४७ अर्जुन समदे द्वारका त्रिभुवनपति के हेत । हमसों अरु कुल कौरवनि युद्धहोइ कुरु खेत ४८ (अर्जुनउवाच) चौपाई ॥ हेरत बाट युधिष्ठिर राइ । चलिये सांई करो सहाइ ॥ जैसे काज सदा करि आये । सोन कछू अब जात गनाये ४९ (श्रीकृष्णउवाच) दुर्योधन बहु दल लैगयो । तजे अस्त्र यह मैं पनु लयो ॥ जोजिय में यह भावै तोहिं । तौ अर्जुन लै चलिये मोहिं ५० (अर्जुनउवाच) दल दुर्योधन को सब दीजै । हम विनवैं सो पूरण कीजै ॥ आप चलौ नित दरशन पावैं । कलमष और कलेश नशावैं ५१ ॥ दोहा ॥ आप हमारे पगु धरो दल कोऊ लै जाहु ॥ पार्थसाथ श्रीहरि चले जहां हुते नरनाहु ५२ ॥ चौपाई ॥ आवत धर्मपुत्र सुख पाये । हरषि हरषि हरिके गुण गाये ॥ सिमिट्यो सेन क्षोहिनी सात । उद्यत रणको प्रफुलित गात ५३ ॥ दोहा ॥ उमड्यो घुमड्यो जलद सों कीनो कटक पयान ॥ तड़ित पताका गरज घन गरजनि सिन्धुर जान ॥ सोरठा ॥ चलि आये कुरुखेत जित तित दीसत घोरदल ॥ बलकत

भट रण हेत सजे कवच सेना हतन ५४ ॥ दोहा ॥ जुरि अष्टादश क्षोहिनी दोऊदल इकठौर ॥ महारथी अरु अतिरथी शूर सुभट शिरमौर ५५ अथ अक्षोहणी संख्या ॥ दोहा ॥ एक द्विरद रथ एकहै तीन अश्व असवार ॥ जमले दश संख्या कहे पायक पांच बिचार ५६ हाथी १ रथ १ असवार ३ पयादे ५ जमले १० ॥ दोहा ॥ तीन पंक्ति को होय इक सेना मुख ता नाम ॥ अपने अपने बुद्धि बल समुझि लेय गुणग्राम ५७ हाथी ३ रथ ३ असवार ६ पयादे १५ जमले ३० इति सेनामुखता संख्या तातै तिगुनी गुल्म इक जानि जानि उर लेहु ॥ ताकी संख्या क्षत्रकवि बुधि बल सब करि देहु ५८ हाथी ९ रथ ९ असवार २७ पयादे ४५ ॥ इति गुल्म संख्या ॥ दोहा ॥ फेरि गुल्म तिगुनी करौ जो कछु संख्या होय ॥ क्षत्र कहौ सो वाहिनी कहै जगत सब कोय ५९ हाथी २७ रथ २७ असवार ८१ पयादे १३५ इतिवाहिनीसंख्या॥ दोहा ॥ कीजै तिगुणी वाहिनी ताही पृतना जानि। हय हाथी पायक रथी कहि कविक्षत्र बखानि ६० हाथी ८१ रथ ८१असवार २४३पयादे ४०५ इतिपृतना संख्या॥ ताल पृतना जोरि कै एकचमू तब होय ॥ अपने अपने चित्त में समुझि लेहु सब कोय ६१ हाथी २४३ रथ २४३ असवार ७२९ पयादे १२१५ इति चमूसंख्या॥ दोहा॥ एक चमूको जोरिकै तिगुणी करौ जो कोइ ॥ क्षत्र सकल समझौ अबै अनीकिनी सो होइ ६२ हाथी ७२९ रथ ७२९ असवार २१८७ पयादे ३६४५ इति अनीकिनी

संख्या॥ दोहा॥ अनीकिनी सेना सकल तिगुणी कीजै ताहि। सोई संख्या क्षत्रकवि अनीकिनी दश आहि ६३ हाथी २१८७ रथ २१८७ असवार ६५६१ पयादे १०९३५ इति दश अनीकिनी संख्या॥दोहा॥दशअनी-किनी दश गुनी साजत पण्डित जानि॥ ताही सों इक छोहनी कहि कबि छत्र बखानि ६४ हाथी २१८७० रथ २१८७०असवार ६५६१०पयादे १०९३५०इति अ-क्षोहिणी संख्या दोहा॥ जुरे अठारह क्षोहिनी कोकबिकहै बखान॥ छत्र सकल संख्याकही जानिलेहु सब जान६५ हाथी ३९३६६० रथ३९३६६० असवार ११८०९८० पयादे१९६८३०० इतिअष्टादशक्षोहिनीसंख्या॥ दोहा दल एकादश छोहिनी कुरुनन्दन नरनाथ। भीषम अरु भगदत्तनृप द्रोण कर्ण सब साथ ६६ हाथी २४०५७० रथ२४०५७० असवार७२१७१० पयादे१२०२८५० इति कौरवदल की संख्या क्षोहिनी ११॥ दोहा॥ सप्त क्षोहिनी पंडुसुत राजत सेनसमाज॥ द्रुपद बिराट नरेश तहँ शुभकारी व्रजराज ६७ हाथी १५३०९० रथ १५३०९० असवार ६५५९२७० पयादे ७६५४५० इतिश्री महाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंह विरचितायां राजादुर्योधनयुधिष्ठिरकुरुक्षेत्रआगमनो नाम सप्तविंशोध्यायः॥ २७॥

दोहा॥ कातिककी सितपक्षकी त्रयोदशी शुभजानि सन्मुखदल दोऊजुरे फिरि तहँ कियो मिलान १॥ सुंदरी

छंद ॥ भानु गयो छिपिरैनि भईतब । अपनेठौर विराजतहैं सब ॥घोरघटा समसेन परीतहँ । बंदिसबै कुलके किलके जहँ २ हैंचपला चलसी ध्वज सोहति । सो बिदिशानि-दिशा मन मोहति ॥ गाजत कुंजरज्यों घन गाजत । गोर मदायनसे घन राजत ३ नाद सजे सब ठाम गुणीजन । बोलत ज्योंपिक चात्रक के गन॥ घोरघने घनसों उमड्यो दल । द्वादशयोजन लोपिलियो थल ४ ॥ दोहा ॥ कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी प्रातभयो सबजानि ॥ दुहूँ ओरके सेनतब ठाढ्यो भयो पलानि ५ बुधि पूरो बिक्रमबली साधु संत सुरज्ञान ॥ सुरसरिसुत दलपति कियो कुरुनंदन बलवान ६ अमित पराक्रम मेरुसम सरबर कीजैताहि । सोनभार भीषमलयो समलज्जा उरजाहि ७ सुरसरिसुत दलपति कर्यो सुन्यौ पंडुसुत कान । बिलखि बदन दुचिते भये रहे न घटमें प्रान ८ ॥ चौपाई ॥ जब यह भीषम की सुधि पाई । जनेजने के मन दुचिताई ॥ त्रिभुवनपति अब रक्षा करिहैं । धर्मपुत्र के सब दुख हरिहैं ९ कृष्णहिपूछि मतो यह लीनो । धृष्टद्युम्न चमूपति कीनो ॥ महापराक्रम संयुत शूरो । रणमें जो बल विक्रम पूरो १० ॥ दोहा ॥ लयो सेन आभार शिर ह्वैकै प्रफुलित गात । ताको साहस को कहै कहत न बनई बात ११ जुरिठाढ़े द्वै दलभये रज छाई असमान ॥ भई छपासी द्यौसही भये छपाकर भान १२ उतदलपति भीषमलखे कहतपार्थ भटराउ ॥ त्रिभु-वनपति यह युक्तिनहिं क्योंकरि घालौघाउ १३॥नाराच छंद ॥ बिनयकरों सुरारिजू सुमानि चित्त लीजिये । तजे

कृपाण गोतघाउ कौनभांति कीजिये। विलोकिकै कुटुम्ब बंधु पुत्रमित्र कोगनै। अलोकहोइ लोकलोक युद्धमें तिन्हैं हनै १४॥दोधकछंद ॥ इनभीषम कोटिक दुःखहरे। बहु भांतिन के प्रतिपाल करे॥ तिनको क्यहि भांति हथ्यार सजौं। अपकीरति सों बहुचित्त लजौं १५ यहकाज नहीं हमते सरिहैं। नहिं सन्मुख बाण धर्यो परिहैं। जब अर्जुन ये बहु बैन सजे। अरु आतुरह्वै धनुबाण तजे १६ (श्रीकृष्णउवाच) कहिक्यों यहकातर बुद्धिभई। शिशुता मनसे अजहूं न गई॥ अब क्षत्रिय धर्म्म विचारि हिये। नहिं पाप कछू अब युद्ध किये १७॥ दोहा ॥ समुझाये बहुज्ञानकथि भगवद्गीता गाइ। अमर एक भुव यशरहै कह्यौ कृष्ण समुझाइ १८॥ सवैया॥ तेजधरा जलपौन अकाश मिलैकैविरंचि शरीररच्यौहै। क्रोधविरोध सलोभ सकाम सुगर्ब समोह समूह रच्यौ है॥ एक रहै जग में यश औयश कालबली पैं न कोऊ बच्यौहै। बंधु कुटुम्ब त्रिया सुतहेतहि लीनभयो बहुनाच नच्यौहै १९॥दोहा॥ बदन पसार्यो कृष्णतब पार्थलख्यौ अकुलाइ॥ देख्यो सब भारतभयो अद्भुत कह्योनजाइ २० (श्रीकृष्णउवाच) चौपाई॥ कत अर्जुनतू संशय करै। यहदल सबया थल संहरै॥ यामें सब बचिहैं दशजने। और सकल तू जूझे गने २१ मैं यह सब भारत करि राख्यौं। यह तोसों मैं यशहित भाख्यौं॥ तेरो कर्यो कहा अब होई। करैकहा ताको अब कोई २२ अर्जुन को सुनि संशय गयो। लयो धनुष हरि आयसु दयो॥ संभ्रम केवल कृष्ण भगायो।

उठ्योबीरतिनकोशिरनायो२३ ॥इतिश्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकबिछत्रसिंहविरचितायां श्रीकृष्णभगवद्गीताज्ञानउपदेशबर्णनोनामअष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८॥

अथ भीष्मपर्व्व कथनम् ॥

दोहा॥ पंडुपुत्र कुरुराज रण कोपउठे दलदोइ। चर्म बर्म तन त्रानकसि बलकत भट सब कोइ १ ।दंडकछंद॥ बीररसरसे सूरकवच संनाहकसे कोपिकोपि यन्त्रतन्त्रपैज युद्धकीलई। चूरिचूरि बननीर सोखिसोखि भूरिभूरि पूरि पूरि व्योमधूरि द्यौसहीनिशाभई। थरथर कंपिउठे भूतल के थलथल धरधर कूरमकी छातीमें महाठई। पायक अपारनिसों मत्तदंती भारनिसों बाजिखुरतारनिसों क्षिति छारह्वैगई २ (भीष्मउवाच) छप्पै॥ छत्रीकुलहिकहाय सकल कुलधर्म नशाऊं। पातकानि दैनिगम और द्विज दोषनिपाऊं॥ गुरुके बचननिमेटि सर्बतीरथ ब्रतहारौं। गुरुजन शासनभंग लोककी लीकहि टारौं॥ चहुलाज होयनृप शांतनुहि बाणकृपाननि परिहरौं। प्रतिद्योसदीह दुर्घट सुभटसो जोन सहसदश संहरौं ३ ॥ दोहा॥ शूर संहारौं सहसदश दिनप्रति करि चितचाउ। नित्यकरौं जलपानतब इतनोंकरि भरिठाउ४॥चामरछंद॥ ब्रह्मरुद्र इन्द्रजू सहाय आय जोकरैं। कोपि कोपि युद्ध बाण कोटि कोटि जो धरैं॥ लोकपाल जो जुरैं तऊन पैज टारिहौं आजुते इतेक शूर नित्य नित्य मारिहौं ५ पार्थसों जुरे कराल युद्ध भौ महा घनौं। लंकनाथ सौं सक्रुद्ध रामचन्द्र

हैं मनौ ॥ गंगपुत्र अस्त्र शस्त्र बाण वृष्टि यों करै। सा-
रथी रथी समेत ठाम ठाम संहरै ६ ॥ दोहा ॥ उत्तर झू-
म्यौ प्रथमही करि बहुधा संग्राम ॥ एक अयुत भीषम
हने गने न परई नाम ७ जूझे दोऊ सेनके रथी द्विरद र-
ण मांझ ॥ भीषम पुजयो आपु ब्रत बहुरि ह्वै गई सांझ
८ रैनि भये सब शूरमा कियोन शर संधान। सजे सकल
भट सेन के प्रात उगतही भान ९ मारु मारु दुहुदल
भई उठे बीर रणगाजि। पायक रथी मतंग गण अरु
जूझे बहु वाजि १० मंडलीक कीनो धनुष शर छायो
आकाश ॥ ब्रत पाल्यो दश सहस हति करि सेना उर-
त्राश ११ ॥ चौपाई ॥ दिन प्रति दश दश सहस सँहारे।
रथी अति रथी गज रथ मारे॥ मारग कृष्णा षष्ठी भई ॥
पंडु पुत्र उर चिंता ठई १२ भीषम अगणित शूर संहारे।
पंडु पुत्र सबही हिय हारे। रह्यो युद्ध तहँ निशि ह्वै गई
। पंडु सुतनि के उर मति भई १३ ॥ दोहा ॥ अर्द्धरैनि
जबहीं गई आये भीषम पास। बहु बिधिकै अस्तुति करी
कीन्हें वचन प्रकास १४ ॥ दोधक छंद ॥ आजु पिता क-
छु सोमति दीजै। जाविधि जीति सबै दल लीजै ॥ ज्यों
कुरु नंदन को दल छीजै। आयसु देहु सुतौ अब कीजै
१५ (भीष्मउवाच) ॥ छप्पै ॥ जौलग मोघट प्राण क-
हौ को सरवर पावै। चिरंजीव कुरुराज ताहि पद ओछो
आवै ॥ विजय करै को शूर मोहिं देखत रण माहीं। जो
चितवै ब्रत राज तोहिंतौ अचरज नाहीं ॥ सुनि धर्म पुत्र
सुखसीव यह सत्य मानि चित लीजिये १६ गीतिकाछंद॥

अर्ज्जुन भीम लख्यो तृणतूल । लई शक्ति जैसो शिव शूल ॥ रावण ज्यों लक्ष्मणपै छंडी । वरु करि इंद्र पूत तब खंडी १७ खंड करी द्वै बाणनि काटि । और लयो दल बाणनिपाटि ॥ तब भगदत्त सँम्हारो आप । जाको जग में बड़ो प्रताप १८ पांच बाण करमें तिनलये । तब अर्ज्जुन के उरमें हये ॥ लागत उरमें सो पर जर्यो । बिषम बाण तिन धनुपर धर्यो १९ ॥ दोहा ॥ झुकि कुंजरके शिरहयो डार्यो शीशबिदारि ॥ पार भायो शर बेधितन कर्यो फांक द्वै फारि २० कुंजर सबल फका कर्यो दाबि गह्यो भगदत्त ॥ गिरन न पावत भूमि में साजत यतन अनंत २१ जीत्यो चाहत पार्थ को पेलत बारंबार ॥ पग दे सकत न द्विरदसो अंकुश हने अपार २२ सवैया ॥ दाबि गह्यो युग जानु में सिंधुर पौरुष को कवि कौन बखाने । युद्ध जुरै न मुरै बर बीर सो भांति अनेकनि के रण ठाने । पेलत क्रोध किये भगदत्त न कुंजर नेकहु अंकुश माने । निर्द्धन की त्रिय आयसु ज्यों अपने पति की कछु चित्त न आने २३ ॥ दोहा ॥ युगुल जंघ में मृतक गज बार बार झक झोरि ॥ हार्यो दैदै अंकुशै नहीं सकत अँग मोरि २४ बीते एक मुहूरते भूमि गिर्यो गजराज ॥ प्यादो ह्वै भगदत्त तब धायोभट शिर ताज २५ ॥ सोरठा ॥ कोपि खड्गलै धाय क्रोधित अति राते नयन ॥ मघवा चढ्यो बजाय चपला असिबर जलद तन २६ ॥ दोहा ॥ दोशर लै दोऊ हनी तबहीं पारथ बाहु ॥ बिन भुज संमुख पार्थ के चलो बलीनर

नाहु २७॥ सोरठा॥ पार्थ तीसरो बाण हन्यो शीश में क्रोधकरि॥ मुरछि गिर्यो बलवान उठि अर्ज्जुन संमुख चल्यो २८॥ चौपाई॥ तब सो पंच पैड़ चलिगयो। अर्द्ध चंद्र लै अर्ज्जुन हयो॥ काट्यो जानु जंघधर पर्यो। यों भगदत्त भूप संहर्यो २९ हाहाकार कटक में भयो। शूरन मन रबिसम आथयो॥ कौरव नृपके दुख अति भारी। सुखकी सकल बासना जारी ३०॥ दोहा॥ लीनो अर्ज्जुन लाय उर भूप युधिष्ठिर आप॥ आजुकरी संग्राम जय कीनो प्रगट प्रताप ३१॥इतिश्रीमहाभारत पुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहबिरचितायांभगदत्त बधनवर्णनोनामएकत्रिंशोऽध्यायः॥ ३१॥

——

सुन्दरी छंद॥ जूझि पर्यो भगदत्त लख्यो जब। कौरव सोदर रोवत हैं सब॥ शोच बढ्यो जियमें अति शोचत। नैननतें अँसुआ बहु मोचत १ बंदत हैं गुरु के नृप पायन। दीन भये बहु भाषत भायन॥ आपनु हौं सब कारज लायक। क्यों बिगरै जहँ होउ सहायक २ आजुभयो तुमयुद्ध पराजय। वैरण जीतिगये सबनिर्भय॥ आपुबिचार कछूअबठानहु। होयबिजयमतिसोंउरआनहु॥ ३॥ दोहा॥ राच्यौ चक्रब्यूह गुरु सुनि अवनीपतिबैन॥ दुर्गम दीरघ दुसहता जान्यो कछूपरैन ४(द्रोणउवाच) न्योतिपठावहु पंडुसुत आवहिं रणको आज। कैजूझैंकैजाहिं बन सीझिजायँ सब काज ५॥ त्रिभंगीछंद॥ सुनि गुरु बानीसोशिखमानी उरआनीतब बुद्धियहै। तबदूतबुलायो

सो चलि आयो बेगिपठायो जाय कहै ॥ तब आयसु पायो तुरत सिधायो शीशनवायो भूपजहां। सोसबनि जुहार्यो लैबैठार्यो बंधवचार्योलसततहांइ(दूतउवाच) सोरठा ॥ दीनो यह संदेश चक्रब्यूह राच्यो तहां ॥ रणहित चलहु नरेश कै तजि बिग्रह जाहु बन ७ (युधिष्ठिरउवाच) दोहा ॥ न्योति पठाये आयहैं कहौ जाय संदेश ॥ दूत समदि कीनौ तहां भूपति उर अंदेश ८ ॥ चौपाई ॥ जेते भटहैं यादल माहीं। चक्रब्यूह सो जानत नाहीं॥ अर्जुन श्रीहरि संग सिधायो। तीरथ ते चलि सो नहिं आयो ६ ताबिन युद्ध कौन यह करिहै। चक्रब्यूह बैठिकै लरिहै ॥ अर्जुनबिन जानो दलहीनो। तातेन्योतो रणकोदीनो१० तीनोंबंधुन राजा बूझै। कहौ मंत्रजो जाकोसूझै॥ जो यह युद्ध नहीं बनि आवै। राजपाट क्षिति को को पावै ११ प्रथमहि भीमहि बूझै राजा। जोरण जीतों सीजैकाजा॥ सुनिकै उत्तर भूपहि दीनो। ऐसो सुन्यो न मैं रणकीनो१२ छप्पै ॥ जुरें युद्ध गंधर्ब सर्ब्ब तिनको बल गारों। किन्नर नर अरु यक्ष सबल बल दल संहारों॥ बज्र पाणि जो बज्र लेहिं तो चित्त न आनो। युद्ध करत दिन रैन नहीं हों कछू अघानो॥ बहु शंक अंक नग पन्नगनिको मोसों सरवरि करै। सुनिभूप मोहिं यायुद्ध की सोन कछूबिधि जनि परै १३ ॥ दोहा ॥ बूझै नृप सहदेव तब जो यह जानहु युद्ध ॥ जीतिलिये ह्वै जायगो राजपाट सब शुद्ध १४ (सहदेवउवाच) जीतों दानव देवहौं जुरै युद्ध जो आय ॥ पै बिधि चक्रब्यूहकी कछू न जानी जाय १५

(राजोवाच) करो नकुल संग्राम यह राखि कटक की लाज॥ नातरु भूमि गई सबै रण कीनो बिनुकाज १६ (नकुलउवाच)। छप्पै आजु अमित संग्राम देवदानव सोमडौं। जुरै युद्ध जो आय काल दंडहु को दंडौं॥ सब अवनी पति जीति गर्ब तिनके बर गंजौं। सकल शत्रु संहारि बाहु बल सब दल भंजौं॥ सुनि भूप पाय तुव आयुसैं होइतनो संग्राम करौं। यह सौह मोहिं नृप पंडु की सो उलटि पहुमि ऊपर धरौं १७॥ दोहा॥ देख्यो सुन्यों न कानहू चक्रब्यूह नरेश॥ सोनयुद्ध कहुंमें कियो यह जियमें अंदेश १८॥ चौपाई॥ राजा बहु जियमें पछिताइ। क्यों जीत्यौं अब संग्रमजाइ॥ बिना पार्थबहु भयो अकाज। पहुमि नशाई बूड्यो राज १६ सुर नर दल सब भीमहिं डरैं। ताहू ते कछु काज न सरैं॥ सहदेव अरु नकुल बिचारि। तेऊ गये हिये अवहारि २० बैठ्यो भूपति नाये शीश। नहिं बोलत कोऊ अवनीश॥ चार्यो बंधव मनमें शोचैं॥ मन पछितायँ नयनजल मोचैं २१ सकल कटक में बीत्यो त्रास। अंतहपुर सब पर्यो उपास॥ यह सब साधु सुभद्रा सुन्यो। हिये शोच करि माथो धुन्यो २२ पति की सुरति चित्त में धरी। नैननि जल देहीं थरहरी॥ कृष्ण साथ चलि अर्जुन गयो। बहुर्यो नहीं कहा सो भयो २३ सुत अभिमन्यु गोद में पर्यो। माता नैननि अंशू ढर्यो॥ पर्यो पुत्र उरपै तिहि बार। चिंता कीनी चौंकि कुमार २४ (अभिमन्युरुवाच) दोहा॥ कौनहेतु तुम मलिन हौ कहि

घोंसो समझाइ। या जगमें तो तैं सुखीऔरन कोउआइ॥ २५ सवैया ॥ जेठ युधिष्ठिर भीमबली जहाँ हैं जगबंदन कृष्ण सोभाई। धीर धनुर्द्धर अर्जुनसो पति युद्ध जुरै यम-हूखमि खाई। हैं बिबि बंधु सहदेव सो देवर कीरति है सब भूतल छाई। सो सम पुत्रहि पाय कै माय कहा कहिधों मुखपै मलिनाई २६ ॥ दोहा ॥ बरुण करन को या समय कहिधों कारण कौन ॥ काहूके उर त्रास नहिं संपति संयुत भौन २७ (सुभद्रउवाच) तुम पितु रणहित कृष्ण सँग गयो कसेतन त्राण ॥ आई सुधि नीकी नहीं कहौरहत क्यों प्रान २८ ॥ चौपाई ॥ भूपयुधिष्ठिर दुःख निदान। भोजन करैं न खंड्यो पान ॥ तीनों अनुज रु-दन बहु करैं। बैननही मुख ते अनुसरैं २६ नहीं पार्थ की सुधि कछु नीकी। यहै बात सुत है मोजीकी ॥ चलि अभिमन्यु भूप पै गयो। जाय सभा में ठाढ़ो भयो ३० बिलखाख्यो सब परिवार बिलोक्यो। नैननि ते जल रुकै नरोंक्यो ॥ माता बचन सत्यकैमान्यो। जूझ्योअर्जुन निश्चय जान्यो ३१ ॥ दोहा ॥ उलटि चल्यो तब गेह को निरखि भीम तब धाय ॥बिलख्यो देख्यो पार्थ सुत लीनो अंकलगाय ३२ (अभिमन्युरुवाच)क्यों भूपनि मन मलिन हौ अरु दुचिते सब मौन ॥ हरष न काहू उर ल-ख्यो कहिये कारण कौन ३३ (भीमसेनउवाच) छलकीनो इक द्रोण गुरु चक्रब्यूह बनाइ ॥ ताहित न्योतो युद्ध कौ दीनो यहाँ पठाइ ३४ कहि पठई कुरुराज नृप कैरण राच्यो आय ॥ कै तजिकै संग्राम थल रहौ बिपिनि में

जाय ३५ ॥ गीतिकाछंद ॥ नहीं हमसो समर जानें श्र-
वणहूं न सुन्यों कहूं। देवपुर पाताल जीत्यो नहीं देख्यो
सोतहूं ॥ और भूपन ताहि जानत पार्थको धोखो रह्यो।
सुनतही अभिमन्यु उठिकै पवन सुतसों यों कह्यो ३६
यह काजहैं। सब सारिहैं। कह चित्तमें संशो कियो। जाय
भूपति निकट तबहीं युद्ध हित बीरा लियो ॥ आजु कौरव
कुल सँहारों द्रोण कर्णहि संहरो ॥ हतोंवर दुश्शासनै
या समर की जयहीं करों ३७ ॥ सवैया ॥ काहेको शो-
चकरो जू इतो यह काज कितो अबहीं सब सारों। आजु
हतो क्षणमें रणमें सब कौरव को कुल कोपि संहारों॥
देखतही दल द्रोण को दारि सुखर्ग दवागिनि सों पर
जारों। बाजि द्विरद्द गरद्द करों सब भीड़ि महा रथवंतनि
मारों ३८ दोहा ॥ अद्भुत गति भूपति गनी लखि शिशु
साहस धीर। सूरनि मनि केहरि कलित शील सिंधुसों
बीर ३९ (राजोवाच) नहिं गुरु ढिग बिद्या पढ़ी स-
मर न देख्यो नैन ॥ करि साहस बीरा लयो जानी कछू
परैन ४० मोहिं अचंभो पुत्र सुनि को तू दानव देव ॥
गंधूब किन्नर यक्ष तू कहि सब अपनो भेव ४१ (अभि-
मन्युरुवाच) छप्पै ॥ सेवक सोई धन्य स्वामि कारजमें
शूरो। धन्य धन्य सोइ पुत्र मात पितु आयसु पूरो ॥ धन्य
धन्य वह दास भंग नहिं शासन करई। धन्यधन्य सोइ
शूर समर पग उलटि न धरई ॥ धनि बोलि सत्य कबि
छत्र कहि सुयश सकल जग लीजिये। बहु राज काज
मन लाज धरि जन्म सुफल अब कीजिये ४२ ॥ दोहा ॥

नहीं भूप संशय करो शोच नशावहु चित्त॥ करौं बिजय भट सब हनों आजु रावरे हित्त ४३ इतिश्रीमहाभारत पुराणेबिजयमुक्तावल्यांकबिछत्रसिंहबिरचितायांचक्रव्यूहरचनोनामद्विंत्रिंशोऽध्यायः॥ ३२ ॥

(युधिष्ठिरवाच) ॥ दोहा ॥ पढ्यो न गुरु ढिगतैं कहूं लख्यो न नैनन युद्ध ॥ क्यों कांध्यो तैं भार सुत सो मोसों कहि शुद्ध १ (अभिमन्युरुवाच) सुनि नृप पूरब जन्मकी कथा कहौं समझाय॥ मथुरापुर उत्तम अवनि शोभा कही न जाय २॥ सुंदरीछंद॥ भार भयो उपजे बहु दानव। चैन नहीं बहुधा मुनि मानव॥ होम घने तप यज्ञ नशावत। होन नहीं व्रत संयम पावत ३ भारत बिप्रनि देखि तपो थल। दीरघ दीरघ दानवके दल॥ ह्वै बहु तै बसुधा जिय ब्याकुल। जात भई तब ब्रह्म पुरी थल ४ ता मुख बात सुनो जगबंदन। भूमि भये तबही नँदनंदन॥ भार उतारि दले दल दानव। ठावहि ठाँव थपे मुनि मानव ५॥ सवैया॥ भूतल भार उतारन को जग में अवतार मुरारि धर्‌यो। मारि बकी बग को मुख फारि अघासुरको बल प्राणहर्‌यो। तोरि लये रद धाय भुशुंडते कोपि करी जब आनि अर्‌यो। कंस को हंस बिध्वंसि तहाँ सब दानव बंश निबंश कर्‌यो ६॥चौपाई॥ तब श्रीकृष्ण पैज उर धरी। सकल भूमि बिनु दानव करी॥ छोटे बड़े असुर जे भये। ते बर बिक्रम के सब हये ७ मारे सब बहु त्रास दिखाई। मो माता तब बची

पराई॥ गर्भवती पितु गृह सो गई। ऐसी गति बिधना निर्मई ८ ताके गर्भ जन्म मैं लयो। कछू ज्ञान तब मो उर भयो। खेलन जाउं शिशुन के संग। नाना बिधि सब राचत रंग ९ यक शिशु यों कहि गारी दई। सुनत मोहिं बहु लज्जा भई॥ तब उन केहिन ज्ञातिन गोत। तोहिं हनौं तेरो को होत १० चलि तब माता पैहौं आयो॥ तबहींसब वृत्तांतबतायो॥ को कुलकौन पिताकहु माता। कहा कुटुंब बंधुनिज भ्राता ११ (मातउवाच) पुत्र पिता को जो गति सुनिहौ। बहु पछितैहौ माथो धुनिहौ॥ कुटुंब तुह्मारो श्रीहरि हन्यो। बालक वृद्ध तरुण नहिं गन्यो १२ ॥ दोहा ॥ कोऊ उबर्‌यो असुर नहिं पुरुष न कोऊ बाम॥ कीनी अपु बश पुहुमि सब निर्भय मथुरा धाम १३ लाज भई यहबात सुनिक्रोधभयो बहु चित्त॥ सुनि पितुकी वैसी दशा कियो यतन ताहित १४ धूम घूंटि ह्वै औंधमुख नींद भूख सब साधि॥ तन मन सब एकांत करि शिवसों लगीसमाधि १५ ॥ दंडकछंद ॥ नीचो राखि मूरध चरणकिये ऊरधमें धूम घूंटि घूंटि तप कीनो आसना कछै। सूखिगई त्वचा सब आमिष बिलाय गयो श्रोण को सलिल चल्यौ केतिक बखानिछै॥ एक चित्त साधि कै समाधि महा कष्ट साधि कीनो न बिराम कबहूं न घटिकाहू द्वै। छत्र कहि शंभुनाथ भूतनाथ भवनाथ शंकर प्रसन्न भये मोपर दयालु ह्वै १६ ॥ दोहा ॥ हौंप्रसन्न तोसों भयो मांगु मांगु उत्ताल॥ जो इच्छा तुम मन रहै सो पुरवउं इहिकाल १७ ॥ चौपाई ॥ तबमैं तिन

अर्ज्जुन भीम लख्यो तृणतूल। लई शक्ति जैसो शिव शूल॥ रावण ज्यों लक्ष्मणपै छंडी। बरु करि इंद्र पूत तब खंडी १७ खंड करी द्वै बाणनि काटि। और लयो दल बाणनिपाटि॥ तब भगदत्त सँम्हारो आप। जाको जग में बड़ो प्रताप १८ पांच बाण करमें तिनलये। तब अर्ज्जुन के उरमें हये॥ लागत उरमें सो पर जर्‌यो। बिषम बाण तिन धनुपर धर्‌यो १९॥ दोहा॥ झुकि कुंजरके शिरहयो डार्‌यो शीशबिदारि॥ पार भायो शर बेधितन कर्‌यो फांक द्वै फारि २० कुंजर सबल फका कर्‌यो दाबि गह्यो भगदत्त॥ गिरन न पावत भूमि में साजत यतन अनंत २१ जीत्यो चाहत पार्थ को पेलत बारंबार॥ पग दे सकत न द्विरदसो अंकुश हने अपार २२ सवैया॥ दाबि गह्यो युग जानु में सिंधुर पौरुष को कवि कौन बखाने। युद्ध जुरै न मुरै बर बीर सो भांति अनेकनि के रण ठाने। पेलत क्रोध किये भगदत्त न कुंजर नेकहु अंकुश माने। निर्द्धन की त्रिय आयसु ज्यों अपने पति की कछु चित्त न आने २३॥ दोहा॥ युगुल जंघ में मृतक गज बार बार झक झोरि॥ हार्‌यो दैदै अंकुशै नहीं सकत अँग मोरि २४ बीते एक मुहूरते भूमि गिर्‌यो गजराज॥ प्यादो ह्वै भगदत्त तब धायोभट शिर ताज २५॥ सोरठा॥ कोपि खड्गलै धाय क्रोधित अति राते नयन॥ मघवा चढ्यो बजाय चपला असिबर जलद तन २६॥ दोहा॥ दोशर लै दोऊ हनी तबहीं पारथ बाहु॥ बिन भुज संमुख पार्थ के चलो बलीनर

नाहु २७ ॥ सोरठा ॥ पार्थ तीसरो बाण हन्यो शीश में क्रोधकरि ॥ मुरछि गिर्यो बलवान उठि अर्ज्जुन संमुख चल्यो २८ ॥ चौपाई ॥ तब सो पंच पैड़ चलिगयो। अर्द्ध चंद्रलै अर्ज्जुन हयो ॥ काट्यो जानु जंघधर पर्यो। यों भगदत्त भूप संहर्यो २९ हाहाकार कटक में भयो। शूरन मन रविसम आथयो ॥ कौरव नृपके दुख अति भारी। सुखकी सकल बासना जारी ३० ॥ दोहा ॥ लीनो अर्ज्जुन लाय उर भूप युधिष्ठिर आप ॥ आजुकरी संग्राम जय कीनो प्रगट प्रताप ३१ ॥इतिश्रीमहाभारत पुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहबिरचितायांभगदत्त बधनवर्णनोनामएकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

सुन्दरी छंद ॥ जूझि पर्यो भगदत्त लख्यो जब। कौरव सोदर रोवत हैं सब ॥ शोच बढ्यो जियमें अति शोचत। नैननतें अँसुआ बहु मोचत १ बंदत हैं गुरु के नृप पायन। दीन भये बहु भाषत भायन ॥ आपनु हौं सब कारज लायक। क्यों बिगरै जहँ होउ सहायक २ आजुभयो तुमयुद्ध पराजय। वैरण जीतिगये सबनिर्भय॥ आपुविचार कछूअबठानहु। होयबिजयमतिसोंउरआनहु॥ ३ ॥ दोहा ॥ राच्यौ चक्रब्यूह गुरु सुनि अवनीपतिबैन॥ दुर्गम दीरघ दुसहता जान्यो कछूपरैन ४(द्रोणउवाच) न्योतिपठावहु पंडुसुत आवहिं रणको आज। कैजूझैंकैजाहिं बन सीझिजायँ सब काज ५ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ सुनि गुरु बानी सोशिखमानी उरआनीतब बुद्धियहै। तबदूतबुलायो

सो चलि आयो बेगिपठायो जाय कहै ॥ तब आयसु पायो तुरत सिधायो शीशनवायो भूपजहां। सोसबनि जुहार्‌यो लैबैठार्‌यो बंधवचार्‌योलसततहां६(दूतउवाच) सोरठा ॥ दीनो यह संदेश चक्रव्यूह राच्यौ तहां॥ रणहित चलहु नरेश कै तजि विग्रह जाहु बन ७ (युधिष्ठिरउवाच) दोहा ॥ न्योति पठाये आयहैं कहो जाय संदेश ॥ दूत समदि कीनौ तहां भूपति उर अंदेश ८ ॥ चौपाई ॥ जेते भटहैं यादल माहीं। चक्रव्यूह सो जानत नाहीं ॥ अर्जुन श्रीहरि संग सिधायो। तीरथ ते चलि सो नहिं आयो ९ ताबिन युद्ध कौन यह करिहै। चक्रव्यूह बैठिकै लरिहै ॥ अर्जुनबिन जानो दलहीनो। तातेन्योतो रणकोदीनो१० तीनोंबंधुन राजा बूझै। कहो मंत्रजो जाकोसूझै॥ जो यह युद्ध नहीं बनि आवै। राजपाट क्षिति को का पावै ११ प्रथमहि भीमहि बूझे राजा। जोरण जीतों सीजैकाजा॥ सुनिकै उत्तर भूपहि दीनो। ऐसो सुन्यो न मैं रणकीनो१२ छप्पै ॥ जुरे युद्ध गंधर्व सर्व्व तिनको बल गारों। किन्नर नर अरु यक्ष सबल बल दल संहारों ॥ बज्र पाणि जो बज्र लेहिं तो चित्त न आनो। युद्ध करत दिन रैन नहीं हों कछू अघानो ॥ बहु शंक अंक नग पन्नगनिको मोसों सरवरि करै। सुनिभूप मोहिं यायुद्ध की सोन कछूबिधि जनि परै १३ ॥ दोहा ॥ बूझै नृप सहदेव तब जो यह जानहु युद्ध ॥ जीतिलियेह्वै जायगो राजपाट सब शुद्ध १४ (सहदेवउवाच) जीतों दानव देवहौं जुरे युद्ध जो आय ॥ पै विधि चक्रव्यूहकी कछू न जानी जाय १५

(राजोवाच) करो नकुल संग्राम यह राखि कटक की लाज॥ नातरु भूमि गई सबै रण कीनो बिनुकाज १६ (नकुलउवाच)। छप्पै आजु अमित संग्राम देवदानव सोमंडों। जुरै युद्ध जो आय काल दंडहु को दंडों॥ सब अवनी पति जीति गर्ब तिनके बर गंजों। सकल शत्रु संहारि बाहु बल सब दल भंजों॥ सुनि भूप पाय तुव आयुसें होइतनो संग्राम करों। यह सोंह मोहिं नृप पंडु की सो उलटि पहुमि ऊपर धरों १७॥ दोहा॥ देख्यो सुन्यों न कानहू चक्रव्यूह नरेश॥ सोनयुद्ध कहुंमें कियो यह जियमें अंदेश १८॥ चौपाई॥ राजा बहु जियमें पछिताइ। क्यों जीत्यो अब संग्रमजाइ॥ बिना पार्थबहु भयो अकाज। पहुमि नशाई बूड्यो राज १९ सुर नर दल सब भीमहि डरैं। ताहू ते कछु काज न सरैं॥ सहदेव अरु नकुल बिचारि। तेऊ गये हिये अबहारि २० बैठ्यो भूपति नाये शीश। नहिं बोलत कोऊ अवनीश॥ चार्यो बंधव मनमें शोचैं॥ मन पछितायँ नयनजल मोचैं २१ सकल कटक में बीत्यो त्रास। अंतहपुर सब पर्यो उपास॥ यह सब साधु सुभद्रा सुन्यो। हिये शोच करि माथो धुन्यो २२ पति की सुरति चित्त में धरी। नैननि जल देहीं थरहरी॥ कृष्ण साथ चलि अर्जुन गयो। बहुर्यो नहीं कहा सो भयो २३ सुत अभिमन्यु गोद में पर्यो। माता नैननि अंशू ढर्यो॥ पर्यो पुत्र उरपै तिहि बार। चिंता कीनी चौंकि कुमार २४ (अभिमन्युरुवाच) दोहा॥ कौनहेतु तुम मलिन हौ कहि

घोंसो समझाइ। या जगमें तो तैं सुखीऔरन कोऊआइ॥ २५ सवैया ॥ जेठ युधिष्ठिर भीमबली जहाँ हैं जगबंदन कृष्ण सोभाई। धीर धनुर्द्धर अर्जुनसो पति युद्ध जुरै यम-हूखमि खाई । है बिबि बंधु सहदेव सो देवर कीरति है सब भूतल छाई। सो सम पुत्रहि पाय कै माय कहा कहिधों मुखपै मलिनाई २६ ॥ दोहा ॥ बरुण करन को या समय कहिधों कारण कौन ॥ काहूके उर त्रास नहिं संपति संयुत भौन २७ (सुभद्रउवाच) तुम पितु रणहित कृष्ण सँग गयो कसेतन त्राण ॥ आई सुधि नीकी नहीं कहौरहत क्यों प्रान २८ ॥ चौपाई ॥ भूपयुधिष्ठिर दुःख निदान। भोजन करैं न खंड्यो पान॥ तीनों अनुज रु-दन बहु करैं। बैननही मुख ते अनुसरैं २९ नहीं पार्थ की सुधि कछु नीकी। यह बात सुत है मोजीकी ॥ चलि अभिमन्यु भूप पै गयो। जाय सभा में ठाढ़ो भयो ३० बिलख्यो सब परिवार बिलोक्यो। नैननि ते जल रुकै नरोंक्यो॥ माता बचन सत्यकैमान्यो। जूझ्योअर्जुन निश्चय जान्यो ३१ ॥ दोहा ॥ उलटि चल्यो तब गेह को निरखि भीम तब धाय ॥बिलख्यो देख्यो पार्थ सुत लीनो अंकलगाय ३२ (अभिमन्युरुवाच)क्यों भूपनि मन मलिन हौ अरु दुचिते सब मौन ॥ हरष न काहू उर ल-ख्यो कहिये कारण कौन ३३ (भीमसेनउवाच) छलकीनो इक द्रोण गुरु चक्रब्यूह बनाइ॥ ताहित न्योतो युद्ध को दीनो यहाँ पठाइ ३४ कहि पठई कुरुराज नृप कैरण राच्यो आय ॥ कै तजिकै संग्राम थल रहौ बिपिनि में

जाय ३५ ॥ गीतिकाछंद ॥ नहीं हमसो समर जानें श्र-
वणहूं न सुन्यों कहूं। देवपुर पाताल जीत्यो नहीं देख्यो
सोतहूं ॥ और भूपन ताहि जानत पार्थको धोखो रह्यो।
सुनतही अभिमन्यु उठिकै पवन सुतसों यों कह्यो ३६
यह काजहैं। सब सारिहैं। कह चित्तमें संशो कियो। जाय
भूपति निकट तबहीं युद्ध हित बीरा लियो ॥ आजु कौरव
कुल सँहारों द्रोण कर्णहि संहरो ॥ हतोंवर दुश्शासनै
या समर की जयहों करों ३७ ॥ सवैया ॥ काहेको शो-
चकरो जू इतौ यह काज कितौ अबहीं सब सारों। आजु
हतो क्षणमें रणमें सब कौरव को कुल कोपि संहारों ॥
देखतही दल द्रोण को दारि सुखर्ग दवागिनि सों पर
जारों। बाजि द्विरद्द गरद्द करों सब भीड़ि महा रथवंतनि
मारों ३८ दोहा ॥ अद्भुत गति भूपति गनी लखि शिशु
साहस धीर। सूरनि मनि केहरि कलित शील सिंधुसो
बीर ३९ (राजोवाच) नहिं गुरु ढिग विद्या पढ़ी स-
मर न देख्यो नैन ॥ करि साहस बीरा लयो जानी कछू
परैन ४० मोहिं अचंभो पुत्र सुनि को तू दानव देव ॥
गंधूब किन्नर यक्ष तू कहि सब अपनो भेव ४१ (अभि-
मन्युरुवाच) छप्पै ॥ सेवक सोई धन्य स्वामि कारजमें
शूरो। धन्य धन्य सोइ पुत्र मात पितु आयसु पूरो ॥ धन्य
धन्य वह दास भंग नहिं शासन करई। धन्यधन्य सोइ
शूर समर पग उलटि न धरई ॥ धनि बोलि सत्य कबि
छत्र कहि सुयश सकल जग लीजिये। बहु राज काज
मन लाज धरि जन्म सुफल अब कीजिये ४२ ॥ दोहा ॥

नहीं भूप संशय करो शोच नशावहु चित्त॥ करौं विजय भट सब हनों आजु रावरे हित्त ४३ इतिश्रीमहाभारत पुराणेबिजयमुक्तावल्यांकबिछत्रसिंहबिरचितायांचक्रब्यूहरचनोनामद्विात्रिंशोऽध्यायः॥ ३२॥

(युधिष्ठिरवाच)॥ दोहा॥ पढ्यो न गुरु ढिगतैं कहूं लख्यो न नैनन युद्ध॥ क्यों कांध्यो तैं भार सुत सो मोसों कहि शुद्ध १ (अभिमन्युरुवाच) सुनि नृप पूरब जन्मकी कथा कहों समझाय॥ मथुरापुर उत्तम अवनि शोभा कही न जाय २॥ सुंदरीछंद॥ भार भयो उपजे बहु दानव। चैन नहीं बहुधा मुनि मानव॥ होम घने तप यज्ञ नशावत। होन नहीं व्रत संयम पावत ३ भारत बिप्रनि देखि तपो थल। दीरघ दीरघ दानवके दल॥ ह्वै बहु तै बसुधा जिय ब्याकुल। जात भई तब ब्रह्म पुरी थल ४ ता मुख बात सुनो जगबंदन। भूमि भये तबही नँदनंदन॥ भार उतारि दले दल दानव। ठावहि ठाँव थपे मुनि मानव ५॥ सवैया॥ भूतल भार उतारन को जग में अवतार मुरारि धर्‌यो। मारि बकी बग को मुख फारि अघासुरको बल प्राण हर्‌यो। तोरि लये रद धाय भुशुंडते कोपि करी जब आनि अर्‌यो। कंस को हंस बिध्वंसि तहाँ सब दानव बंश निबंश कर्‌यो ६॥चौपाई॥ तब श्रीकृष्ण पैज उर धरी। सकल भूमि बिनु दानव करी॥ छोटे बड़े असुर जे भये। ते बर बिक्रम के सब हये ७ मारे सब बहु त्रास दिखाई। मो माता तब बची

पराई ॥ गर्भवती पितु गृह सो गई । ऐसी गति बिधना निर्मई ८ ताके गर्भ जन्म मैं लयो । कछू ज्ञान तब मो उर भयो । खेलन जाउं शिशुन के संग । नाना बिधि सब राचत रंग ९ यक शिशु यों कहि गारी दई । सुनत मोहिं बहु लज्जा भई ॥ तब उन केहिन ज्ञातिन गोत । तोहिं हनौं तेरो को होत १० चलि तब माता पैहौं आयो। तबहींसब वृत्तांतबतायो ॥ को कुलकौन पिताकहु माता । कहा कुटुंब बंधुनिज भ्राता ११ (मातउवाच)पुत्र पिता को जो गति सुनिहौ । बहु पछितैहौ माथो धुनिहौ ॥ कुटुंब तुह्मारो श्रीहरि हन्यो । बालक वृद्ध तरुण नहिं गन्यो १२ ॥ दोहा ॥ कोऊ उबर्यो असुर नहिं पुरुष न कोऊ बाम ॥ कीनी अपु बश पुहुमि सब निर्भय मथुरा धाम १३ लाज भई यहबात सुनिक्रोधभयो बहु चित्त ॥ सुनि पितुकी वैसी दशा कियो यतन ताहित१४धूम घूंटि ह्वै औंधमुख नींद भूख सब साधि ॥ तन मन सब एकांत करि शिवसों लगीसमाधि १५ ॥ दंडकछंद ॥ नीचो राखि मूरध चरणकिये ऊरधमें धूम घूंटि घूंटि तप कीनो त्रासना कछै । सूखिगई त्वचा सब आमिष बिलाय गयो श्रोण को सलिल चल्यौ केतिक बखानिछै ॥ एक चित्त साधि कै समाधि महा कष्ट साधि कीनो न बिराम कबहूं न घटिकाहू द्वै । छत्र कहि शंभुनाथ भूतनाथ भवनाथ शंकर प्रसन्न भये मोपर दयालु ह्वै १६ ॥ दोहा ॥ हौंप्रसन्न तोसों भयो मांगु मांगु उत्ताल ॥ जो इच्छा तुम मन रहै सो पुरवउं इहिकाल १७ ॥ चौपाई ॥ तबमैं तिन

सों बिनई सेव। नमोदेव दवन के देव॥ वृत्ति भूमि मो मथुरा गाँउँ। तीनिहुं भवन प्रगट ता नाउं १८ बासुदेव भूतल अवतर्यो। दानव को कुल तिन संहर्यो॥ लघु बालक कहुं रहननपायो। सोहरितहँअवनीश कहायो१६ भागी गर्भवती मो माता। नैहर गई जहांनिज भ्राता॥ ताके गर्भ भयो ताठाउँ। धरो मातु अहि दानव नाउँ २० अब स्वामी सों करो उपाउ। अपने कुलको पाउं दाउ॥ लगै न आयुध होय न घाउ। दै कछु ऐसो करो सहाउ२१ दोहा॥ जाके बल हरिको हतौं कुलको बदलो लेहुं॥ लहौं बिरत बर आपनी जननी को सुख देहुं २२ दीनो एक मजूष तब ह्वै शिव परम दयाल॥ तुव रक्षाह्वैहै समर सब भाष्यो तिहिकाल २३ (शिवउवाच) मधुभारछंद॥ जबरण जैहै। जययशपैहै॥ अरिकुल गंजै। परदल भंजै २४ जब रण जानै। अरि न परानै॥ बहुबल कीनो। करिबल लीनो २५॥ दोहा॥ रहिये बैठ मजूष में तोहिं न लखिहै कोइ॥ तुम तनकी रक्षा महा याहीते सब होइ २६ आयो गेह मजूष लै बीते केतिक काल॥ मथुरापुर को उठि चल्यो जीतन श्रीगोपाल २७ जब कछु चलि मारग गयो लये मजूषा शीश। बिप्ररूप मोको मिले तीनि भुवन के ईश २८॥ गीतिका छंद॥ जरायुत सब देह निर्बल लकुट करमें लेखिये। चल्यो आवत कष्टसों बिचबाटकेशव देखिये॥ दयाउपजी मोहिं देखत कही यहगति हेरिकै। कहो बिप्रचले कहां बाणी सुनाई टेरिकै २६ रदन दाबी अंगुली द्विज कही मोढिग

आयकै। सुनत आवै कृष्ण यों कहि क्यों बचै भगि जायकै। शब्द ऊंचो क्यों करै स्वरदीन क्यों नहिं बोलई ॥ ता बिप्र की मुख सुनत बाणी मोहिं चित चिंता भई ३० ॥ दोहा ॥ मैं बिनयो ता विप्रसों कृष्णहि कहा डराउं। क्यों बोलै स्वरदीन तू सोकहि मोसों भाउ ३१ बिरति भूमि मथुरा पुरी तहँ असुरन को बास ॥ कृष्ण मानिकै वैर चितकीनो सबको नास ३२ हौं प्रोहित तिन को सदा तिन बिनुह्वै गयो हीन। नहीं बच्यो यजमान जग अब सबसों आधीन ३३ ॥ चौपाई ॥ कृष्ण सँहारे असुर अनेक। भागि बची तरुणी तहँ एक ॥ गर्भवती पितुके गृह गई। ऐसी गति बिधना निर्मई ३४ ताके पुत्र भयो मैं सुन्यो। चलि तहँ जाउँ चित्तमेंगुन्यो ॥ वह सुतह्वैहै बहु बलवान। अवशि राखिहै मेरोमान ३५ हति कृष्णहि मथुरा पुर लैहैं। धाम ग्राम हमको लैदेहैं ॥ यह सुनिकै मेरो मनमान्यो। वह मैं निज प्रोहित करिजान्यों ३६ तब मैं सो द्विज निकट बुलायो। सब बिधि अपनों भेद बतायो ॥ तू प्रोहित हौं तुव यजमान। रहु मों पास राखिहों मान ३७ ॥ दोहा ॥ फूल्यो द्विज ये वचन सुनि हर्षवन्त अकुलाइ। मोसोंहित भाषे वचन कहियों तू कितजाइ ३८ ॥ चौपाई ॥ तबमैं अपनो भेद बतायों। कृष्णहिं हौं जीतन चलिआयों ॥ तब फिरि बिप्र कहै अकुलाय। तोपै क्यों रिपु जीत्योजाय ३९ ॥ दोहा ॥ बलीनहीं है कृष्णसों तीनिलोकमें कोय। तासों तोंसों युद्धमें कैसे सरबर होय ४० तोहिं

देखि धीरज भयो जान्यो जीवन आज। अब मथुराज-
नि जायतू ह्वैहै महा अकाज ४१ तबमैं कह्यों मजूषको
भेद सबै समुझाय। दीनो शंभुकृपालह्वै प्राणन रक्षक
आय ४२ सकल निपातों अरिचमू कौनसके रण जीति।
हारत जानि मजूषमैं पैठि रहौं यह रीति ४३ सोरह
सहस करीलगी ते सब लेहु लगाइ। मोहिं लखै नहिं
शंभुबिनु दूजो कोऊ आइ ४४॥ चित्रपदछंद॥ बिप्रकहै
तब ऐसे। तूरण जीतहि कैसे॥ जानतहौं छल कीनो।
तो कहँहै यह दीनो ४५ सोन कछू कहिजाई। तू कहि
मोंसों समुझाई॥ मैं सब बात बताई। बात सबैद्विजपा-
ई ४६॥ दोहा॥ सीख लराई सबलई छलि करिद्विज
बपुमंडि। बैठ्यो मांहि मजूषहौं सकलकपटको छंडि ४७
चौपाई॥ बिकट करी उनसबै लगाई। जेमैं हुती वाहि
समुझाई॥ तामैं मोहिं मूंदिसो गयो। बुद्धि नशाई पर-
बश भयो ४८ थाक्यो बल सब पौरुष भाग्यो। कीनो
सो कछु काज न लाग्यो॥ शिवशिव कहत तजेमैंप्रान।
फिरि तब प्रगट भये भगवान ४९॥ दोहा॥ एक कुपी
में मूंदियो श्रीहरि मेरे प्रान। होनीसोई ह्वैरहै जोराचै
भगवान ५० चौकस कै तबसो कुपी दई सुभद्रा हाथ।
बिनुबूझे खोलों न तुम यों बिनयो यदुनाथ ५१॥ चौपा-
ई॥ पतिके गेह सुभद्रा आई। तबसो कुपी हाथहीलाई॥
न्हाई ऋतुवंती ह्वैनारि। जानि सुगंध सुलखी उघारि
५२ सूंघत ताको बहु सुख पायो। ताके उदर पैठि हौं
आयो॥ दिनदिन बाढ़त बिकट शरीर। ब्यथासुभद्रहि

धरति न धीर ५३ दशौं द्वारकी रूंधी श्वास । ताहिगई जीवन की आश ॥ सहस बाहु अहि दानव भयो । सह्यो न भार मात पैगयो ५४ ॥ दोहा ॥ दिन दिन देही थर हरी कृशह्वै रह्यो शरीर । देखन आये सुनि व्यथा भगनी को यदुवीर ५५ (श्रीकृष्णउवाच) कहा तोहिं मन कामना कहां बसैतुवचित्त ॥ सो मोसोंसमुझाइ कहिआनौं तेरे हित्त ५६ (सुभद्रउवाच) पैरों रुधिर प्रवाह में यह भैया चितमोहिं ॥ नित्यनित्य इहिबिधि करौं अथवांमारौं तोहिं ५७ ॥ त्रोटकछंद ॥ भ्रमश्रीहरि चित्त भयोतबहीं ॥ भगिनी मुखबैन सुन्यो जबहीं ॥ बहु संभ्रम चित्तहि छाय रह्यो । कछुजाय नहीं मुखबैन कह्यो ५८ जब शूर छिप्यो कछुरैनि गई । तब ब्याकुलता भगिनीहि भई ॥ हरि सों यह बैन बिचारि कह्यो । कहि एककथा बसि चित्त रह्यो ५९ ॥ दोहा ॥ श्रीहरि चक्रब्यूहकी कीनीकथा प्रकाश ॥ क्षमा भई सुनिकै कछू मिट्यो कछूमन त्राश ६० ॥ चौपाई ॥ यहिबिधि कथा तहां सुनि लई । सुनत सुनत आधी निशिगई ॥ दैत्य न हूंको निद्राछई । कछू क्षमा ताके उर भई ६१ कथारही यह मो चित आई । हूंकादै तब कथा कहाई ॥ तबहीं हरिभाषा पहिंचानी । कही न तबसों फेरि कहानी ६२ ॥ कुंडलिया ॥ कीनो संभ्रम चित्त में कृष्ण कमल दल नैन । उत्तरु काहू असुर को नरकी भाषाहैन ॥ नरकी भाषाहैन उदर में हो तिन जान्यो । सहस बाहु को शत्रु आपनो तब पहिंचान्यो ॥ पहिंचान्यो तिहि बार सज्यो तब यतन नवीनो । कोकवि सकै ब-

खानि चित्तजेतो श्रम कीनो ६३ ॥ दोहा ॥ सहसबाहु को कृष्ण तब पुतरा रच्यो बनाइ। कर कुशलै अभिषेक करि मंत्रजप्यो अकुलाइ ६४ तासों सकल भुजा नशीं द्वै भुजरहीं शरीर॥ तब हों प्रगट्यो भूमिपर भई सुभद्रहि धीर ६५ चक्रव्यूह कथा मुनी सुन्यो गेह को भाउ। भीम पैजकरि ताहिबर तोरिलेइ करि चाउ ६६ जिती कथा सब मैं सुनी सोबरनी तो जाइ॥ रह्यो सुने बिनु भीम सों व्रोरिदेहि सुनिराइ ६७॥ छप्पै ॥ भीमसेन की पैजकरत को शंक न करई। मुनि गण तजत समाधि शं-भुको आसनटरई ॥ भूतलब्योम पताललंकपति कंपतथर थर। गदा लेत कर कांपि अंक आतंक सकल नर॥ कोन कंपहि कबि छत्र कहि डरि डरि करिवर परि हरत॥ क्षोभहोत सुर असुरको सु पवनपुत्र क्रोधहि करत ६८ दोहा ॥ जीत्यो चक्रब्यूह रण कौन सकै अब राखि॥ नहि नरेंद्र चिंताकरो बचन कहे इमि भाखि ६९ ॥ दं-डकछंद ॥ दृढ़ दल पारोंरोरि सुभट संहारों दौरि पौरि पौरि गर्ब सब शूरन के गारिहौं। श्रोणहूं में बोरों द्रोण रथते बिरत्थ करों करहूं बिकर्णहूं को आजुरण मारिहौं ॥ सासन दुशासन को चैनदह बैनहूं को भूध-रसे दूधर को भूतल पछारिहौं। बाणनि की वायु सों उड़ाय देहुं शकुनिहिं क्रोध दुर्योधन के शीशही सों सारिहौं ७० ॥ दोहा ॥ ह्वै सुचित्त बीरादयो धर्म सुवन नर नाह। पांचक्षोहणी सबल दल दीनो करि उत्साह ७१ सहदेव अरु नकुल सँग चले द्रुपद नरनाथ। चले

बिराट चमू लिये और घरूका साथ ७२ भूपति को शिर नाय के चल्यो निसान बजाय। गेह आय जननी चरण बन्दे बहु सुख पाय ७३ इतिश्रीमहाभारतपुराणे बिजयमुक्तावल्यां कबिछत्रबिरचितायां अभिमन्युउत्साह वर्णनोनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

(सुभद्राउवाच) ॥ चौपाई ॥ देखत तोको मनु गहबर्यो। धनि धनि कुक्षा मों अवतर्यो ॥ अपने कुल को राख्यो पान्यो ॥ धन्य धन्य सुत मैं पहिचान्यो १ ॥ दोहा ॥ मुक्ता चौक पुरायकै वेद उचारत विप्र ॥ चल्यो वीर रसमों सुभट शत्रुहिं जीतन छिप्र २ मंगल गाये सखिन मिलि बाजन विदित बजाइ। न्योछावरि मणि मुक्त करि नीरज चीर लुटाइ ३ बंदिन मिलि बोल्यो विरद रथ आरूढ़ कुमार ॥ चल्यो सबल दल साजिकै कोपि कर्यो फिर वार ४ ॥ सुंदरीछंद ॥ कुंजर पुंजनिपुंजनि सोहत। बैरख जाल महामन मोहत ॥ देखत यों कबिता छबि साजत ॥ ज्यों उत दामिनि वारिद राजत ५ चंचल बाजि किधौं खग खंजन। पौन कुरंगनि की गति गंजन ॥ ज्यौं सलभा गण पायक राजत। शोभन दीरघ दुंदुभि बाजत ६ ॥ दोहा ॥ रज उड़ि लोप्यो ब्योम रबि रह्यो धार तम छाइ ॥ कमठ कसमस्यो शेषकोलचकि लचकि शिर जाइ ७ ॥ दंडकछंद ॥ छाती होत धरधर शेषकी धरा धरत कुरम कलमलात भुरि तलातलतल ॥ टूटिटूटि द्रुम क्षिति छूटि छूटि नीरगये खूदि खुरतार मुखै

सरिता सकल जल। चहूं ओर चकित चवाइ ससवाइ गये अरि अवनीश कंपि कंपि उठे हल हल ॥ सुर अवतंस पंडु वँश अंश अर्जुनके सेन चले हालि उठे भूतल के थल थल ८ ॥ दोहा ॥ चलत कटक पहुंच्यो तहाँ जहँ बिराट को धाम। दियो सोधु इक सहचरी जगी उत्तरा बाम ६ (सख्युवाच)जीतन चक्रव्यूह को कोपि चढ्यो तब कंत ॥ चढ्यो बीर रस कटक में हर्षवंत दीसंत १० अति आतुर जे बचन सुनि उठी उत्तरा बाम॥ निरख्यो प्रीतम प्राणपति सब साहस को धाम ११ चौपाई॥ कीन्ही कुमरि मोहु अधिकाई। नहीं करी कछु कृष्ण भलाई ॥ अबहों सत्य बचन इमि भाख्यो। जात कुमार को अबहूं राख्यो १२ उपज्यो मोह कृष्ण पहिँचान्यो। तब बिचार उरमेंयह आन्यो॥ परम निठुरता तब उपजाई ॥ मोह काटिकै रची रुखाई १३ तब अभिमन्यु लखी तिय ऐसी। चंद्रबदन रति कमलाजैसी॥ सूक्षम सुभग सकल अगवनी ॥ दीनी विधि शोभा अति घनी १४॥ दोहा ॥ बरणिकहालों कहि कहौं रूप वाहि कम वाल। निरखि कुंवर को मन मथ्यो मन्मथतेही काल १५ ॥ चौपाई॥ तब उपाव श्रीहरिजू कर्यो। सब तन मथि मनसिज जल ढर्यो॥ पान मांझ सो जल धरि लयो। कुमरि उत्तरा के करदयो १६ भक्षत वगरि गयो तन माहीं। यह सँयोग कहु जान्यो नाहीं ॥ ह्वै संतुष्ठ सुबीरज लयो॥ चलि अभिमन्यु अगाड़े गयो १७ निशिको कीनी जाय मिलान। भई निशा तब अथयो

भान ॥ सूती सेज उत्तरा नारि। जागी स्वप्न अरिष्ट निहारि १८(उत्तराउवाच)॥ दोहा ॥ देख्यो स्वप्न अरिष्टमैं याते मन अकुलाइ। जावौं कुशल न कुंवर की प्राण उठ्यो सोंजाय १९॥सवैया॥जाति बिवाहन को अभिमन्यु भये सपने कपि रीछ बराती। गावत जंबुक बाघसो गीतनि मंडप छावत गिद्ध संघाती॥ रातइ भूषण रातिय मालसो पागवनी गहरे रँगराती। पांच सखी मिलि तेल चढ़ावति याडरते धरकी बहु छाती २० ॥ दोहा ॥ कह्यो विप्र सों दान करि बैठि रहो सोवाल। बीराजल संतुष्ट ह्वै गर्भ धर्यो तिहि काल २१ चलि पहुँच्यो अभिमन्यु रण चक्रब्यूह निकेत। खबरि भई कुरुराजको पठयो नर सुधिहेत २२ इतिश्री महाभारत पुराणे बिजय मुक्तावल्यांकबि छत्र बिरचितायां अभिमन्यु पयान बर्णनोनाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

अथदोधकछंद ॥ बंदि तबै नरनाथ पठायो। नाम लसै बिदवन्त सुहायो॥ को सजिकै रणको चढ़ि आयो। सो हटि सेन किता सँग लायो १ जाय बसीठ तहाँइमि देख्यो। घोर घनो घन सो दल लेख्यो॥ बूझत लोगनि को सजि आयो। भीम युधिष्ठिर रोषनि छायो २ कै सहदेव कि अर्जुन सोहै। शूर कहो अब को दल में है॥ जात कहां कित तें दल आयो। भेद कछू अब मैं नहिं पायो ३ (सेनउवाच)॥ दोहा ॥ अर्जुन सुत अभिमन्यु यह चढ्यो निसान बजाय। जीतन चक्रब्यूह को को अब

सकै बचाय ४ चलि बसीठ पहुँच्यो तहां पारथ सुत के पास। बैठ्यो देख्यो कुवँर तहँ साहस युत सु बिलास ५ दै अशीष ठाढ़ो भयो आदर कियो कुमार। कुशल प्रसन्न हिं बूझिकै बैठक दई अगार ६ (अभिमन्युरुवाच) कैसो चक्रव्यूह नृप रच्यो कहो किहि रीति। सोई घटिका एक में पैठि लेहुं सब जीति ७ (बसीठउवाच) कोट रचे इक ईश गुरु संघट करो न जाय। पैठि कौन कहनी करै बं-कट दुर्ग मझाय ८ बिकट दरी मारग बिकट सागर सम गंभीर। ताके अमित प्रबाह धसि कौन लहि सकै तीर९ दुर्योधन वलि बंड सुत लाखनि नाम कहाइ। प्रथमकोट आभार शिर लयो भुजा वर आइ १० कोट दूसरे विकट में बिदुर बीर को बास। तीजै शल्य कह्यो बली तीजै कोट निवास ११ कोट चतुर्थ मैं द्रोण सुत रह्यो बली दल गाजि। कोट पाँचवे सकुन दल राख्यो बहु दल साजि १२ छठै सु शर्मा सात में साज्यो सबल सबाह। अष्टम बिश्वासेन तहँ सजे कवच संनाह १३ नवम बिषम भूरिश्रवा दश में को सब भार। एकादश अरु द्वादशैं ताही को बिस्तार १४ कोट तेरहें द्रोणगुरु सकल सेन की लाज। चतुर्दशैं गांगेय तहँ राजत बड़ो समाज १५ है कलिंगगढ़ पंद्रहैं जिहि बहु जीते युद्ध। दुश्शासनगढ षोडशैं सेना सहित सक्रुद्ध १६ ॥ चौपाई ॥ सप्त दशैं कृतवर्मा देख्यो। ताको महा गर्ब में लेख्यो ॥ अष्टादशैं लसै मह बाहु। नव दश सेना युतउत्साहु १७॥दोहा॥ कोट बीस में करण नृप ताके बल नहिं अन्त। एक बीस

मँह जयद्रथ साज्यो दुसह दुरंत १८ दुर्योधन सब अ-
नुज सुत साजि सेन चतुरंग। न्यारो लसै महीप तहं
सुभट बिकट सब अंग १९ यह बिधि चक्रब्यूहकी सुनि
अभिमन्यु कुमार। करौ बिदा चलि जाउं हौं दुर्योधन
के द्वार २० (अभिमन्युरुवाच) साजे नृपति महारथी
सकलसजे तनत्राण। यह संदेशो देहु तुम करवर गहौ
कृपाण२१ पहुंच्यो दूतमहीपपै कहीसकल बिधिजाय।
नृपति युधिष्ठिर की चमू तुम पर पहुंची आय२२साज्यो
चक्रब्यूहपै पारथसुत बलिबंड॥ नाम भेष लघु जानिये
पौरुषपरम प्रचंड २३ ताको साहसमें लख्यो कहत न
बनईबात॥ कहतलेहुंहैं जीतिकै चक्रब्यूहको जात २४
करो उताइल कटकमें साजोराजा राय॥ सावधानसब
होहु भट गरजि निशान बजाय२५॥ त्रोटकछंद॥ प्रति-
हार नरेश तबै पठयो। अवनीशनि सोधु सो दैन गयो॥
सुनि ता मुख बैन सबै सजिकै। तन त्राण कसे बहुधा
गजिकै २६ चहुं ओरनि घोर निशान बजे। कहुं कुंजर
बाजि समूहसजे॥ रथवंत महारथ साजितहां। लखिये
नहिंपौन प्रवेश जहां २७ अभिमन्युजबै तहँ साजिचल्यो।
बहु बीरन को हिय देखि हल्यो॥ पहिले गृह मध्य
प्रवेश करयो। तब लाखन के मन शोच परयो॥ लखि
बालक सों न करै रणको। यहशोकभयो अतिहीमनको॥
नगहै धनुबाण सो शीश धुनै। पलही पलही हियमाहिं
गुनै २८ (लखनउवाच)॥ दोहा॥ अति अपराधी मो
पिता पंडु सुतनि नहिं खोरि॥ उननधरी जियमांझ इन

औगुण किये करोरि २९ प्रथम बरुण मंदिर रच्यो तामें दिये जराय ॥ भजिउबरे दावाग्निते श्रीहरि कियोसहाय ३० पांसे कपट बनाइ कै छलकरि लिये हराइ ॥ राज पाटसब छीनिकै दीनो बिपिन पठाइ ३१ खैंचत लज्या नाकरी द्रुपद सुताको चीर ॥ हरि सहाय उघर्यो नहीं कितहूं तनक शरीर ३२ ऐसे कोरि बिचारि कै समर न आप अन्हाइ ॥ जान दयो सुत पार्थको नहिं राख्यो बिर माइ ३३ गयोपैठि गृहदूसरे पार्थपुत्र बरबीर ॥ निरखत धनु गुण युत कर्यो बिदुर उठे रणधीर ३४ निरखतही अभिमन्यु को बिदुर डुलायो शीश ॥ रक्षा बालककीकरो ह्वै कृपालु जगदीश ३५ आपुन कांधो युद्ध नहिं धनुष दियो भुवडारि ॥ पापीबैठे गेहकत पंडुपुत्र तुमचारि ३६ पौरुषतजि लज्यातजी तजीसकल कुलकानि ॥ बालक रणहिं पठाइकै आपुरहे सुखमानि ३७ दीरघतन दीरघ भुजा दीरघ पौरुष पाइ ॥ कातरह्वै बैठे सदन बहुबल-वन्त कहाइ ३८ बिदुर साथ बरजो सबै कोऊ जुरै न युद्ध ॥ चल्यो तीसरी पारिको पार्थपुत्र ह्वै शुद्ध ३९ पैठि गयो गढ़ तीसरे पार्थ पुत्र तब धाइ ॥ सहित शल्य भट सकल मिलि लीनो धनुष चढ़ाइ ४० सन्मुख समर सरोषि ह्वै जुरे बीर बिबि युद्ध ॥ तबहिं पार्थसुत शल्य उर हनी शक्तिह्वै क्रुद्ध ४१ बिषमचोट नहिं सहिसक्यो भज्यो बेगिदै पीठि ॥ पारथ सुत कीनी तबै चौथे गृहपर दीठि ४२ ॥ चौपाई ॥ तहां द्रोणसुतहै बलबंड । जाको पौरुष लसै अखंड ॥ तहँ अभिमन्यु बेगि दैगयो । तासों

महायुद्ध तब भयो ४३ अग्निबाण उन लीने तीनि। डारे पार्थ पुत्र ते छीनि॥ बाण बीस सों गुरुसुत हयो। ताके परम क्रोध उर छयो ४४ तब अभिमन्यु हयो शत बान। उन शर कियो सहस संधान॥ दोऊ समर करत बलिबंड। दोऊ बरषत बाण अखंड ४५॥ दोहा॥ एकै बिद्या दुहुनकी संग्रम करत समान॥ ऐसे वेई और को पटतर दीजै आन ४६ क्रोध कर्‌यो तब पार्थ सुत रिसकै छांड़ेवान। द्रोण पुत्र मुर्छित भयो आगे कर्‌यो पयान ४७ तबहीं पारथ सुतगयो कोट पाँचवें कोपि॥ शकुनि रह्यो तहँ क्रोध करि अंगद ज्यों पग रोपि ४८ (शकुनिरुवाच) बांधौ जीवत बालकै भागि न पावै जान। मारिलेहु तिन को अबै जो कोऊ सजैं कृपान ४९ छेंक्यो चहुं दिशिते कुंवर बाण अनेक चलाइ॥ घोर कर्मकीनो महा रह्यो व्योमशर छाइ ५० रण कराल अभिमन्यु को सक्यो न खलपै जाइ। जितहि दवागिनि सों उठै तृण ज्यों दल भहराइ ५१ भजे लजे नहिं शकुनि उर सबदल गयो पराइ। बहुत बीर अभिमन्यु सों उबरे हाहा खाइ ५२ छठे सातवें आठवें नवमें कोट मंझाय। दश एकादश द्वादशैं पहुंच्यो बलही जाय ५२ सबही को शरशेल्ह सों हतिकै गर्भ नशाइ॥ गयो तेरहें कोट धसि द्रोण उठे अकुलाइ ५३ (द्रोणउवाच) चौपाई॥ बालक तुरण में कित आयो। हौंन सुन्योग्रहते कितधायो॥ तोसँगसंग्रम हौं कत मंडौं। बालक जानि हियेअबछंडौं ५४ जान-तहू अब क्यों भगिजैहै। क्यों करिकै इखु तीक्षण सैहै॥

काल बलीबर तो कहँ लायो। बालक भूलि इहांकत आयो ५५ पारथ भीम युधिष्ठिर आवै॥ सो कछु नेक प्रवेशहि पावै॥ तूकत पैठि सकै गढ़ माहीं। तो अवगाहन की यह नाहीं ५६॥ दोहा॥ सुनत कुंवर यह परजर्यो झुकि बोल्यो ये बैन। धनुगहि कर गुरु विप्र तू क्षणइक युद्ध करैन ५७॥ सवैया॥ बालक मोहिं गनो जिन द्रोण सु क्यों नहिं बाण शरासन साजत। जानतहौ शशिबंशकी रीति नहीं लखिकै कोउ युद्धहि भाजत॥ मोसँग जौलगि आपुजुरै नहिं तौलगि हौं इहि मंडल गाजत॥ तौलगि आपुन चित्तन आनत जौलगि बाणन शीश बिराजत ५८॥ दोहा॥ कौन हमारे बंशमें भाग्यो देखि जुझार। ताते द्रोण विचारिकै करटेको करवार ५६ कृपा करौ जो आप उर प्रथमहिं करो प्रहार॥ रह्यो न धोखे चित्तमें धरिये आप हथ्यार ६०॥ गीतिका छंद॥ बाण द्रोण तजै नहीं इन बचन कोटिक भाषियो। जानि बालकबेष करुणा हृदयमें बहुराखियो॥ कोप करिअभिमन्यु छांड़े कालसे शरलेखिकै। सहजही तिन छीनि डारे उरध आवत देखिकै ६१॥ दोहा॥ खुरप बाण अभिमन्यु लै ध्वजा पताका काटि। डारे भूतल शरन सों सब दललीन्यो पाटि ६२॥ सवैया॥ जेबहु कालहुने जित बार सोते उजरे नहिं युद्ध अनैसे। बाण बिधे सब के तनयों जिमि रोषित ब्याल बिले महँपैसे॥ शूर सनद्ध भये अध अंधक मध्य गिराय दये सब ऐसे। ज्यों उनमत्त मतंग सरोवर पैठि बिदारत बारिज जैसे ६३॥ दोहा॥

हयो द्रोण ह्वै लक्षशर कह्यो न संग्रम जाइ। शलभा-
गण ज्यों ब्योमघर रहे वाण तहँछाइ ६४ ॥ सवैया ॥
कोटिन कोटिहुते बहु योधासु काहुन द्वै घटिका वि-
रमायो। पौनके गौनते बाढ़ि उठ्यो दल नीरद संघटसो
बिचरायो॥भूतलब्योमदिशाविदिशासुतपारथकेशरपंजर
छायो। ह्वै भय भीत सशोकित अंगन कौरव जानत
अर्जुन आयो ६५ ॥ दोहा ॥ मंडलीक कीनो धनुष पारथ
सुत बलिवंड। वेध्यो गुरुद्वै लक्षसों जीत्यो समरअखंड॥
६६ समर सह्यो नहिं द्रोण गुरु रह्यो मानि हिय हारि।
पैठ्यो अगिले कोट में पारथ सुत भट भारि ६७ और
सबल थल जीति कै पहुंच्यो करण निकेत। तबहीं उठि
ठाढ़ो भयो सोई रण के हेत ६८ (करणउबाच) दो-
धकछंद ॥ जानत हौं शिशु मीच बुलायो। ढीठ भयो चलि
मो ढिग आयो ॥ वृद्ध हुतो द्विज द्रोण पुरानो। हौं ति-
नुका करि तो कहँ जानो ६९ जीवत क्यों न बचै भजि
मोपै। होय कहा अब मो ढिग तोपै। पारथ को सुत यों
तब भाखै। कर्ण बुलाउ जो ताकहँ राखै ७० ॥ सवैया॥
बीर अबीर महा भट भीर सो तीरही तीर खरे सबहेरे।
आजु तबै सब गर्भ हरौं अब पायो है मैं करि आपने नेरे॥
जीवत जाय न सन्मुख आयकै तो सों मूढ़ कहौं यह टेरे।
भूप युधिष्ठिर की जय को कुरु नंदन बाधहुं देखत तेरे
७१ ॥ दोहा ॥ आप धनुर्द्धर धीर तुम रहे कहाइकहाइ।
तौ बलदाई जानिहौं युद्ध जीति जो जाय ७२ दुर्योधन
बांधौं जियत तेरे देखत आज। नृपता महि मंडल करैं

युधिष्ठिर महराज ७३ ॥ सुंदरीछंद॥करण महीपतिकोप
कियो जब। ऊरध में शर छाय दये तव ॥ ते अभिमन्यु
बली रण तोरत। सन्मुखते अँग नेक न मोरत ७४आहि
धनुर्द्धर धीर महावर। ब्योमहि छावतुहै शरही शर॥अद्भुत
युद्धनहीं कहि आवत। कोउपमा कहि ताहि बतावत ७५
दोहा ॥ लख्यो करण अभिमन्युसों जबहिं जयद्रथयुद्ध॥
बलसों रोंकै पंडुसुत तिरछौ पैठि सक्रुद्ध ७६ ॥ चौपाई॥
भूप युधिष्ठिर भीम प्रचार्यो। तोपहँ जाय न सो अरि
मार्यो ॥ पंडु महीपति के सुत रोके। बैठिरहे सुखवाइस
शोके ७७॥ दोहा ॥ भयोसहाई ईशबर रोके पंडवचारि
रह्यो जयद्रथ रोपि पगु अंगदकी उनहारि ७८॥चौपाई॥
चलि अभिमन्यु गेह में गयो। पारथ कुंवर अकेलोभयो॥
भयो करण सों युद्ध कराल। छप्योअकाश धराशरजाल
७९ तबअभिमन्यु बढ्योबहुक्रुद्ध। रबिनंदन सहिसक्यो
न युद्ध ॥ बिचलि भग्यो नहिं रोप्यो पांउं। उर पारथ
सुतके भौचाउं ८० ॥ सुंदरीछंद ॥ बाणन साथ उड़ाय
दये भट। पौन चले जिमि नीरद संघट। कौरव यों
लखिकै उर आनत। आय गयो रण पारथ जानत ८१
दोहा ॥ पाछे देख्यो पार्थसुत साथ न पांडव चारि ॥
बिलखि बदन बिस्मयकियो रह्यो बिचारि बिचारि ८२
(अभिमन्युरुवाच)॥ गीतिकाछंद ॥ आजुतो रण भीम
होतो युद्ध मेरो देखतो। ह्वै पराजय करण भाग्यो सकल
कौतुक लेखतो। लखै पौरुष कौन मेरो कियो इहि थल
आयकै। जानिकै उतपात कौरव कुंवर छेक्यो जायकै

८३ दीपऊ परज्यों पतंगे यों परे भट धायकै। मेघ झर ज्यों वृष्टि शायक करी चहुं दिशि जायकै। जुरे रणभूरिश्रवा दह बैन दूशासन बली। जुरे कौरव युत कलिंगहि शोभिजै रण अस्थली ८४॥ दोहा॥ चहुं दिशिसे अभिमन्यु तब छेंकि लयो बलिबंड॥ घेर्‌यो सुरपति गिरिन ज्यों करि करि कोप अखंड ८५ बढ्यो कोप अभिमन्यु उर तब मुकुराये बाण॥ कटे पताका चौंर ध्वज कटिगये करण कृपाण ८६॥ भुजंगप्रयातछंद॥ चले भागि चौंहू दिशा रावराने। निषंगी चले चर्म बर्मा पराने। रथी सारथी अश्व हस्ती भगेहैं। नहीं युद्धमें बीर कोऊ खरेहैं ८७ पताका ध्वजा काटि द्वैखंड कीने। तजे अस्त्र काहू नहीं हाथ लीने। तहाँ कोपिकै कर्णको पुत्र आयो। मनो दंडधारी महारोस छायो ८८ तबै पार्थ के पुत्रसों युद्ध ठान्यो। नहीं चित्तमें नेकहू त्राश आन्यो। कटै बाणहीं बाणसों अंगताके। करैं बीर दोऊ दुहूं युद्ध थाके ८९ दोहा॥ रबि नंदन को पुत्र तहँ बीरनि मणि वृषकेतु॥ पार्थ पुत्रको जोरही जान न भीतर देतु ९० अर्द्ध चंद्र अभिमन्यु लै हयो हियो बलबीर॥ मोहित ह्वै भूतल गिर्‌यो अति थर हर्‌यो शरीर ९१॥ चौपाई॥ दुर्योधन सुत लक्ष्मण आयो। पारथ सुतसों रणकोधायो॥ दोऊ भिरत न माने हारि। सकै न कोऊ काहू मारि ९२ दिशि दिशिते मिलि कौरव आये। चहुं दिशिते तिन शर मुकराये॥ मुद्गर काहू शक्ति प्रहारी। बलकरि पारथ सुततन डारी ९३ मुर्छितगिरे धरणि अकुलाई। दुर्योधनसुत तब

उठि धाई ॥ दोहथ गदा सुलक्षण हयो ।बिनाजीव पारथ सुत भयो । धर्मयुद्ध नहिं हियेबिचार्यो।पर्यो कुंवर तिहि दुष्ट संहार्यो ॥सुनत युधिष्ठिरबहु दुख पायो। अतिआनंद कटकमें छायो ६५ ॥ दोहा ॥ कृष्णपक्ष एकादशी मारग मासबखानि । प्राणतजे तबपार्थ सुतकटक रह्योभयमानि ६६ इतिश्रीमहाभारतपुराणेबिजयमुक्तावल्यांकबिछत्रबि रचितायांअभिमन्युबिमोहनोनामपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

॥ दोहा ॥ अर्जुन आयो जीतिरण पश्चिम दिशि अव गाहि । निरखि सशोक्यो कटक सब अति भय उपजी ताहि १ ॥ भुजंग प्रयातछंद ॥ सशोके बिलोके सबै राव राने । महादुःख संयुक्त ते को बखाने ॥ नगावैं गुणी ना-कहूं बंदि गाजैं । बुधी सों नहीं बेद बिद्या मसाजैं २ मसा लैं न दीसें नहीं दीप देखैं। सबैशूर आतंक सो चित्त लेखैं ॥ तबै पार्थ जीमें महा त्राश आयो । तहाँबैन श्री-कृष्ण जूको सुनायो ३ (अर्जुनउवाच)॥ दोहा॥ बिलख्यो देख्यो कटक सब अरु बिलख्यो सब साथ। जानतु हों जूझो इहाँ धर्म पुत्र नर नाथ ४ कैरण जूझो भीम अब सबबिधि भयो अकाज ॥ पुरुपारथ सब बलगयो गयो हाथते राज ५ नृपति युधिष्ठिरपै गये देख्योसब परिवार। पगबंदे करजोरि कै अरु बूझयो ब्योहार ६ (अर्जुनउ वाच) देखत सबहीं कुशल सों कुशल सकल अवनीश। कौनहेत बिलखे सबै सोमोसों कहिईश ७ लाज महाउर नृपति कै कह्यो कछूनहिं जाइ । हरुवें नृप बोल्योतबै

बिलखि बदन अकुलाइ ८ (राजोवाच) कहौंकहाँ कह-
तन बनै भई अनैसीबात । जूझि पर्यो अभिमन्यु रण
दुखन जरत सब गात ६ कपट युद्धरचि द्रोण गुरु चक्र-
ब्यूह बनाय । ताहित हमको पार्थ सुनि न्योतो दियो प-
ठाय १० सोरण हम जानै नहीं रहे चकित नरनाथ ।
साहस कै अभिमन्यु तब बीरालीनो हाथ ११ पैठ्यो बंकट
कोटमें भीम आदिदै साथ । द्रोण करण को देखिकै धी-
रजु रह्योन हाथ १२ नकुल सहदेव भीमको रह्यो जय-
द्रथ रोंकि । भयो सहाई ईश बर रहे बिलोकि बिलोकि
१३ कुंवर करण सों युद्ध करि फेरि गिर्यो मुरझाय ।
लक्षिमन कोपि गदा लई परे सुमार्यो आइ १४ हाहा
करि सुनिकै गिर्यो तबहीं पारथ बीर । बीते एक महूरते
सुधिमें भये शरीर १५ (अर्जुनउवाच) सहेबाण क्यों
द्रोणके क्यों करि अँगयो युद्ध । मुख चांह्यो सुत कौन को
करन भयो जब क्रुद्ध १६ रोंकिरह्यो मगु जयद्रथ भीम
न पायो जान । निपट अकेलो पुत्र तब तिहि थल छांड्यो
प्रान १७ ॥ चौपाई ॥ भीमसेन जो पावै जान । क्यों
बूझन पावै सुनि दान ॥ कह्यो जयद्रथ को यह मायो ॥
ताते मैं अब यह ब्रत लायो १८ आजुबैरु सुतको हौं
सारौं । अथवत भानु जयद्रथ मारौं ॥ जो पौरुष इतनो
नहि साजौं । मात पिता पांडुहिहौं लाजौं १६ ॥ सवैया ॥
मात पिताहि लजाउं महा अरु तीरथ धर्म सबै ब्रत
हारौं । दोष बिना तरुणीहि तजैं तिनकी गति पाय निरै
पग धारौं ॥ बिप्रनको अपमान किये पति सों त्रिय बीच

बिछोहहि पारों। एतिक पातक मोहिं लगें पुनि जोनहिं आजु जयद्रथ मारों २० हेमहरे द्विज दोष करे अति गर्बभरे गुरु मानन पावैं। मित्रको द्रोहलये पर चित्त सोचित्तकुकर्मनिके मगलावैं॥ झठिये साखिजेआवत भाखिनिएज कहाअप स्वारथ भावैं। जोनबधौं वर आजु जयद्रथ एतिक पातक मोशिर आवैं २१॥ दोहा॥ करी पैज हति पार्थ यह बहु दुख करि रणधीर। जब जान्यो विस्मय करत चरित रच्यो यदुबीर२२माया वपु अभिमन्यु तब अर्जुन को दरशाइ। सपनो सांचों जानि चित संभ्रम रह्यो भुलाइ २३ शिवपुर देख्यो पुत्र तब सपने खेलत सारि॥ चितयो सो इत में नहीं रह्यो पार्थ मन मारि २४ रुदन करयो सुत इंद्रके आँसू चले अपार॥ परे पुत्रकी पीठिपर चितै कह्यो तिहिबार २५ (अभिमन्यु-उवाच)॥सोरठा॥ कौन कौनकोभायतू मूरखरोवै कहा॥ सब जग आवत जाय कर्म फांस बंधन बंध्यो २६ को माता को पूत कौन कहो काको पिता। बरधूतें जग धूत कित याको संशय करो २७॥ दोहा॥ भग्यो शोक तब पार्थ को सुनत पुत्र मुख बैन॥ इतने निरखि चरित्र कोउघरि गये फिरिनैन २८॥ नाराचछन्द॥ कह्यो चरित्र कृष्ण सों जो पार्थ आपु देखियो॥ रह्यो भुलाय चित्तमें कछू बिषादना कियो॥ उठ्यो समर्थ गाजिकै बढ्यो सुरोष चापसों॥ करयोनिखंग कोपिकै कराल कालभालसों २९॥त्रोटकछंद॥ कुरुराज सुनीयह बातजहीं। प्रगट्यो गुरु सों सब भेद तहीं॥ कछु आपुन आजु बिचार करो॥

यहमो बिनती चित मांहि धरो ३० दिन एक जय द्रथ राखि अबै। मग पूजहि तो मन काज सबै॥ ब्रत आजु धनंजय कोटरि है॥ नरहै जग जीवत सो मरिहै ३१ कुरुराज कहै यह मानि अबै। सुत पंडु अनाथ बिचारि सबै॥ तबहीं नृपसों गुरु द्रोण कहै। बलजा कह राखहुं कौन लहै ३२॥ दोहा॥ द्रोणाचारज तब रच्यो सकटव्यूह बनाइ॥ भेद भाव जाको कछू कहूं न जान्यो जाइ ३३ आगे सूची अग्र सम रच्यो विकट अति व्यूह। आस पास हाथी रथी राखे शूर समूह ३४ यमहूं को न प्रवेश जहँ दुर्गम दुसह संवारि। नर किन्नर नहिं लहि सकैं रहैं सुरेशौ हारि ३५ भाग्यो चाहत जयद्रथ पै नहिं पावत जान। राख्यो सकटव्यूह में तजौं अथावत भान ३६॥ चौपाई॥ राख्यो व्यूह मांझ सो लाय। यमहूं पै सो लख्यो न जाय॥ आस पास गज रथ की पांति। दुर्गम दुसह रच्यो बहु भांति ३७ रक्षक द्रोण चमूपति बीर। अतुल पराक्रम साहस धीर॥ गाज्यो पार्थ धनुष लैवान॥ स्वारथ कीनो तब भगवान ३८॥ दोहा॥बाजे मारू जूझकै अति गति तबल निशान॥ भेरि शंख बहु धुनि भई करवर गहे कृपान ३९ प्रथम युद्ध गुरु द्रोण सों असि वर बाजी मार। नहिं प्रवेश अर्जुन लहै करत अमितसंहार ४० मार्‍यो परै न पार्थपै द्रोणविप्र बलबंड। शरसमूह नभछाय तहँ संग्रम कियो अखंड ४१॥ गीतिकाछंद॥ पार्थके रथकेतुरंगनि छतनतिल तिलकैछये। दै सके नहिं अग्रको पगु परम बिह्वल व्हैगये॥ चाहि मुख

श्रीकृष्णबोले बीरयह सुनिलीजिये। अंबुपीवै बाजिजैसे सो कछूबिधिकीजिये ४२ बाणछाय अकाश अर्जुन गेहसों तब करि लयो। मारि शरसों गंग काढ़ी नीर अश्वन को दयो॥ फेरिकरि श्रीकृष्णजू रथपैचढ़े अकुलाय कै। पंडु को सुत द्रोणसों तबहीं जुर्‌यो रण आयकै ४३ ॥ दोहा ॥ बल करिकै द्विजद्रोण के शर हित चित्त भ्रमाय। गयो पंथदै दाहिनो दलमें पहुंच्यो जाय ४४ भयो समर नृप कर्ण सों तिनहूं रण अघवाइ। पेलिगयो चलि अगमनो जयको शंख बजाइ ४५ योजन तीनि गयो बली चलही कटक मँझार॥ तहां जुर्‌यो रण शकुनि सों संग्रम भयो अपार ४६ भयो कुलाहल सोंरहै सुन्योंकछू नहिं जाय। सुन्यो शंख नहिं पार्थ को धर्मपुत्र बिलखाय ४७ चौपाई ॥ पांच जन्य शब्द सुनि राई॥ मनहीं मन बि-लखै अकुलाई। सत्य किजादव पठयो तहां॥ संग्रम क-रत पार्थहो जहां ४८ रथ चढ़ि धनुष बाण तिनलयो। प्रथम द्रोण गुरु आड़ो भयो॥ कह्यो आदि यादव रण आयो। मैंहीं तुव गुरु पार्थ पठायो ४६ घटिका चारिक संग्रम भयो॥ भूतल ब्योम शरन सोंछयो। निशि बि-दिशा सूझै नहि नैन॥ सात्यकि कहै विप्र सों बैन ५० सात्यकिउवाच)॥दोहा॥ जाहु बिप्रअब भागिकै समर करत बे काज। जोन भगाऊं तोहिंहों तौ गुरु पार्थहि लाज ५१ बिषम बाण उर लगतही द्रोण गिर्‌यो अकु-लाइ॥ जहां हुतो भूरिश्रवा ता ढिग पहुंच्यो जाइ ५२ कोप्यो लखि भूरिश्रवा करलीन्हे दशवान। सात्यकि के

तिन उर हये सुरपति बज्र समान ५३ बहुत युद्ध तिन सों भयो को कहि सकै सुनाइ॥ तब सात्यकि मोहित भयो धरणि गिर्‌यो अकुलाइ ५४॥ गीतिकाछंद॥ धायकै भूरिश्रवा करि केश यादवके गहे। क्रोध सों झकझोरिकै बहु बचन इहि विधिके कहे। आजुही शठ तोहिं मारौं तोहिं कौन बचावई॥ आयकै अवतोहिं राखेतोहि क्यों न बुलावई ५५॥ दोहा॥ ताके बधहित खड्ग लै भुजा उठाई बीर। निरखि पार्थ बहुक्रोध करि बाण हन्यो रणधीर ५६॥ दोधक छंद॥ दक्षिण बाहु सखड्ग उड़ानी। टूटि परी सबरे दल जानी॥ छूटि गयो तब यादव ऐसे। केहरि ते मृग छूटतजैसे ५७ यादव कोपि कृपाणसम्हार्‌यो॥ कोबरणै बलही अरि मार्‌यो। काटि तबै शिर भूतल डार्‌यो॥ज्योंद्विजयज्ञनमेंपशु मार्‌यो ५८ नगस्वरूपिणी छंद॥ नधीर सेनमें रही। न जाय सो कछू कही॥ शशोकवंतह्वैगये। नरेशदुःख सोंछये ५९ दोहा॥ पहुंच्यो अर्जुन पास तब सात्यकि यादवजाय। हत्यो बली भूरिश्रवा कुरु नंदन पछिताय ६०॥ सोरठा॥ कह्यो युधिष्ठिर राय भीमसेन को बोलिकै। सुधि लावहु तहँ जाय जहां पार्थ संग्राम करै६१॥ त्रोटकछंद॥ कर बाण शरासन भीमलयो। तब पारथ की सुधि लेनगयो॥ तहँ मारग में द्विज द्रोण लह्यो। तिन देखतही इमि बैन कह्यो ६२ फिरि जाहु घरै नहिं बाट लहौ। ममबाण नहीं क्षण एक सहौ॥ सुनि कै दुहुं बीरन युद्ध कियो। धर भूतल बाणन छाइ लियो ६३ तबहीं

रण भीमहिं क्रोध भयो । गुरु को रथ बीर उठाय लयो॥
पटक्यो धरणी थल में जबहीं । न रह्यो भगि विप्र ग-
यो तबहीं ६४ ॥ दोहा ॥ रथ के बाजी भीम तव क्षण-
हीं में संहारि । बढ्यो क्रोध षोड़श कुंवर तबहीं डारे
मारि ६५ कोपे दूधर दुष्ट बल सुबल सुबाहु प्रचंड ।
सोग कलिंग अशेष रण जिन जीते बलवंड ६६ भीम-
सेन रण कोपिकै इक इक शर सबमारि । और रथी रण
धीर रण डारे बहुत सँहारि ६७ चल्यो पूर रण श्रोण
को को कबि कहै बखानि । भागि चले बहु शूर गण जुरे
न क्षणभरि आनि६८॥दंडकछंद॥ श्रोणित सलिल माहिं
कीने के करीसे शीश श्याम श्याम केश ते सिवार ऐसे
लेखिये । ब्याल ह्वे बिशाल शुंड दंडनि के जाल जहां
ग्राह के करीन के कलेवर बिशेषिये । कच्छपति रति
चर्म चक्रवाक चक्र रथ चामर पताका गण मीन अवरे-
खिये । पवन पूत क्रोध ह्वै समर सिंधु साच्यों रच्यो
फूलन मराल बग माग द्विज देखिये ६९ ॥ दोहा ॥
भूतल डारिमहा रथी आगे पहुंच्योजाय । निरखि शरा-
सन बाण लै करण उठ्यो अकुलाय७० (करणउवाच)
जीते केतक समर तैंभीम कहां अबजाय।जीवन दुर्ल्लभ
जानि बशपरयो हमारे आय ७१ भीम करण के उरहये
सतबाण करि क्रुद्ध । धनुषकाटि रबि पुत्र तब हृदयहन्यो
शर सुद्ध ७२ ॥ चौपाई ॥ फेरि क्रोध रबि नंदन भयो । क-
वच भीमको तब कटिगयो ॥ धायो भीम उघारे अंग ।
कीनो जाय तहां रणरंग । ७३ रथ आरूढ़ पवन सुत

भयो। रबि सुतके उर मुठिका दयो ॥ भूतल गिर सों उठि अकुलाई। मेल्यो धनुष भीम शिर आई ७४ बार बार रिससों झक झोर्‌यो। ऐंच्यो कइयो बारकढोर्‌यो ॥ भीमसेनको पौरुष गयो। करण शक्ति अति ब्याकुल भयो ७५ ॥ दोहा ॥ करि सुधि कुंती बचनकी भीम दयो मुकुराय। बिलख बदन चली पार्थ पै तबहीं पहुंच्यो जाय। ७६ देख्यो पौरुष पार्थ को तब कुरु नंदनराय। सोलह सहस मतंग तहँ दीनेतुरत पठाय ७७ ॥ भुजंग प्रयातछंद ॥ चले मत्तमातंग ते अग्र आये। मनो भूतली में महा मेघ छाये ॥ तहां पंडु के पुत्र चिंता भ्रमाये। सशोके हियेमें महा त्राश लाये ७८ हिये शोच शोचै गयो नेम मेरो। रह्यो आसराहै दया सिंधु तेरो ॥ सदा आपहोदीनही के सहाई। परी भीरभारीसबैसो नशाई ७९ ॥ दोहा॥ कही भीमसों पार्थतब अब बलवंत सम्हारि। कातर लों अति शिथिल तनकहा रह्यो हिय हारि ८० यों सुनि गाज्यो सिंह ज्यों आकंपे मातंग। बिचलि चले मृग यूथ ज्यों सूखि गयेसब अंग ८१ उठ्यो भीम बलि दंड तब कह्यो न पौरुष जाय। एक बार दश सहस गज ऊरध दये चलाय८२ ॥ सवैया ॥ एक रथी रथमंत महा इक एक हते बर बीर निखंगी। तेउ जुरे नहिं आयुध लै जु हते बल बिक्रमसत्र के भंगी। मत्त मतंग तजे नभ को बिरच्यो रण भीम सदा रण रंगी। पौनके चक्र में जाय परे सबह्वै रहे अंग त्रिशंकु के संगी ८३ दोहा ॥ जेतिकगज ऊरध तजे फिरि भुव गिरे न आय।

सहस पंच गजदूसरे ऊरध दये चलाय ८४ लंक पौरि परते गिरे कछुक कंदरन माँझ। सहस मतंग गदा हने जानि नीयरी सांझ ८५ दुर्योधनके अनुज तहँ तीसहने बलबीर। पैरतरथ जल जंतुसे श्रोणितसलिल गँभीर८६ हयहस्ती रथ भंजिकै दीनेदल बितलाय। निकट जयद्रथ पार्थतब पहुंच्यो बलही जाय ८७ सूक्षम निरख्यो द्योस तब बार बार अकुलाय। उतहि जयद्रथ निशिचहै निरखि निरखि रबिजाय ८८ ॥ दोधकछंद ॥ द्वैजनको मन शोचत ऐसे। है तरुणी चकई मनजैसे॥ रैनिचहै वह द्योसहि चाहै। यों तिनके मनमें मनसाहै ८९ ताकत भानु जयद्रथ देख्यो। पार्थ तबै निजकाज बिशेख्यो॥ अंजलि बाण धनंजयलीनो। ताक्षणहीं अरिके शिरदीनो ९० ॥ दोहा ॥ उड्यो बाणके संग शिर कोकबि कहै बनाइ। पर्यो तासुपितु अंजुली निरखि गिर्यो अकुलाइ ९१ ॥ चौपाई ॥ जबहीं शिर अंजुलि में गयो। निरखत शोक वंत सोभयो॥ कौरव दलमें अति भयभारी। परे औंध मुख नरअरु नारी ९२ हाहा कुरुनंदन अनुसरै। कोऊ काहू धीरन धरै॥ पूरि पैज पारथकी भई। हरि अर्जुन शंखध्वनि ठई ९३ इतिश्रीमहाभारतपुराणे बिजयमुक्तावल्यांकबिछत्रसिंह बिरचितायांजयद्रथबधन अर्जुनविजयवर्णनोनामषटत्रिंशोऽध्यायः॥ ३६॥

दोहा ॥ जूझौजानि जयद्रथै दुर्योधन ह्वैक्रुद्ध। तुरत हि रथ ऊपरचढ्यो चल्यो युद्धको युद्ध १॥ सुंदरीछंद ॥

सूर्य छिप्यो तमरैनिभई तब । गाजिमहा रथमंत उठेतब॥ देखिघरूकहिक्रोध बढ्योअति । ब्योमगयो बहुशूरन को हति २ रैनि भई न तहां कछु सूझत । अपने बागन लै भट जूझत ॥ युद्ध भयो कबि कौन बखानहिं । द्वैदल में कोउ हारि न मानहिं ३ ॥ दोहा ॥ तजत घरूकाऊर्द्ध ते गिरिवर शिखर अपार ॥ शरतर फरसा शक्तिसोंकरत अमित संहार ४ ॥ चौपाई ॥ भयो अँधेरो ना कछुसूझत । जल थल कौरव को दल जूझत ॥ नारदमुनि मसाल दरशावैं । दल संहरत महा सुख पावैं ५ अर्द्ध रैनिलौं बीती मार । द्वै क्षोहणि दल कियो सँहार ॥ दलकोनाश जानि कुरुराय । कह्यो करणसें तब अकुलाय ६ (दुर्योधनउवाच)॥ दोहा ॥ ह्वै अदृश्य यह ब्योम तें बरषत गिरि तरुजाल । प्रलय करत सब दल हन्यो कीनोकर्म कराल ७ आनी शक्ति जो पार्थहित तासों याहि सँहारु॥ बूड़त रणकी धारमें यह दल बीर उबारु ८ शक्तिप्रहार कियो करण जानि कटक को नाश ॥ गिरो ऊर्द्ध ते बीर धर भयो सकल दलत्रास ९ बज्रपातसें धरपर्‌यो गिरि से सुभट गिराइ ॥ हन्यो खूंदि एक क्षोहणी दल सब चल्यो पराइ १० जूझि घरूका घर पर्‌यो पंडु पुत्र दुख पाइ ॥ रुदन करत तब हँसिउठेश्रीहरि बहु सुखपाय ११ समाधान करि योंकही पार्थ जियोहै आज ॥ गईजुसेखी कर्णकी अब सीझो सबकाज १२ भयो द्योस तब त्रयोदशी जब बीत्यो इक याम ॥ उठ्यो द्रोण तब गाजिकै कियो अमित संग्राम १३ ॥ चौपाई ॥ पांडवसेन चल्यो

अकुलाइ। काहू पास न राख्यो जाइ॥ नृपति विराट तीस शर हयो। इन करि क्रोध शरासन लयो १४ तीन बाण गुरुके उर मारे। काटि पताका औ ध्वज डारे॥ एक बाण उरमें तब हयो। लागत द्विज व्याकुल ह्वै गयो १५॥ दोहा॥ बहुरि सम्हारो द्रोण गुरु शायक हन्यो ललाट॥ बास लियो हरिलोक तब जूझ्यो भूप बिराट १६ जबहींझुकि धरणीगिर्यो करवरगहेकृपान॥ रोक्यो द्रुपद नरेश गुरु लहै न आगे जान १७ सहदेव धायो नकुल पार्थ युधिष्ठिर आप॥ जग मंडल नवखंड में जाको अमित प्रताप १८॥ त्रोटकछंद॥ चहुंओरनि तें गुरु घेरि लयो। तब देखतही बहु रोष भयो। सबके उरमें बहुबाण हने। मुरझाय गिरे कबि कौन भने १९ (अर्जुनउवाच) जगबंदनदै सिख मोहिं अबै। रणजीत-हिं ज्यों बर आजु सबै॥ तुमहीं बिपदा सब ठाम हरी। मनकी बहु पूरण आशकरी २०॥ कवित्त॥ त्रिभुवन ईश जगदीश सों करन जोरि नाय नाय शीश पार्थ बंदना महा करी। काटि काटि कोटि कोटि संकठ अनेक भांति भांति २ जनन की आपदा सबै हरी। भारी भारी भीर भाव जहाँ जहाँ जानीभय तहाँ तहाँ पैज कहूं सेवक की नाटरी। अमित अपार बल संतन के रखवार गावत नि-गम नव कीरति घरी घरी २१ (श्रीकृष्णउवाच) नारा-चछंद॥ तजै कृपाण बाण द्रोण पुत्र जो मर्यो सुन्यो। कोटिधौं कराल शोक दुःखहोहि सोगुन्यो॥ सरोष भीम-सेन आज हाथ जो गदा धरै। तुरंत द्रोण पुत्र नाम को

मतंग संहरै २२ ॥ दोहा ॥ अश्वस्थामा नामगज हन्यो भीम करि कोह ॥ द्रोण होइ बिह्वल सुनत बढ़ै हिये बहु छोह २३ बैन युधिष्ठिर नृप कहैं तबहिं बिप्र पतियाइ ॥ तजै सकल आयुध सुनत अति बिह्वल ह्वै जाइ २४ द्रुपद पुत्र धृष्टद्युमन तबहीं काटै शीश ॥ यह उपाय करि जीति हौ बोले त्रिभुवन ईश २५ दुरद अश्वत्थामा हन्यो भीमसेन तिहिवार ॥ हन्यो द्रोण तव पुत्र मैं अब कत गहै हथ्यार २६ द्रोणनहीं रण को तजै बैन सुन्यो न पत्याय ॥ तौ मानैं मन बचन क्रम कहैं युधिष्ठिर राय २७ तबै प्रचारयो धर्मसुत कहि गुरुतजे कृपान ॥ बंधुन हित बोल्यो तबै भूपति बुद्धि निदान २८ (युधिष्ठिरउवाच) समर अश्वत्थामा हन्यो भीमसेन सुनि बिप्र ॥ नर नारी कुंजर हत्यो कही नृपति यह छिप्र २९ (त्रोटकछंद) यह बैन सुन्यो गुरुद्रोण जहीं। बहु ब्याकुल ह्वै गिरयो भूमि तहीं ॥ समझावत कौरव सेनसुनै। बहु ब्याकुल ह्वै द्विज शीश धुनै ३० ॥ सोरठा ॥ तब गुरु तजे कृपाण धृष्ट द्युम्न अवलोकि कै ॥ शिर काट्यो तिहि बाण धर्म पुत्रकी जय करी ३१ ॥ दोधकछंद ॥ दुर्योधन के दल दुचिताई। मोपै छत्र कही नहिं जाई ॥ बुद्धि थकी सुधिकी गति थाकी। आश थकी मनमें नृप ताकी ३२ ॥ दोहा ॥ धर्म पुत्र जय रण भई गहरे बजे निशान ॥ करयो चमूपतिकरण तब दुर्योधन दै मान ३३

इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकबिछत्रसिंहबिरचितायांद्रोणगुरुबधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥ इति॥

अथ कर्णपर्व्वकथनं ॥

सोरठा ॥ दलपति कीनो कर्ण दुर्योधन अपने सुप्रण॥ जन जनको दुखहर्ण षट् दरशन को कलपतरु १ ॥ दोहा॥ चढ्यो कर्ण रणधीर तब कर लीने धनुबान ॥ सुर नर गणके तासुकी पटतर नाहीं आन २ शल्य कियो रथ सारथी पारथ जीतन काज ॥ कृतबर्मा लछिमन चढ़े लैसँग शकुनि समाज ३ दुश्शासन रक्षक भयो कर्णसंग सुखपाइ ॥ यूथ जूझ सेनाचली गरजि निशान बजाइ ४ अर्जुन अर्जुन कहत भट आये रण गलगाजि ॥ बांधिलेउ बर आजुही जानन पावैं भाजि ५ सजे कँवच सन्नाहतन बाण शरासन हाथ ॥ बीर दुशासन आदिदै सब धाये इक साथ ६ भीम दुशासन देखिकै परम क्रोधसोंधाय॥ धरिकै पटक्यो भूमिपर दैग्रीवा पै पाय ७ (भीमसेन उवाच) ॥सवैया॥ है कोउ द्वौ दलनें समरत्थ दुशासन को बर आनि छुड़ावै। रैकुरुनंदन रेरबिनंदन सोकरुसों तोपै बनि आवै। शूर घने रण रोवत देखत जूझ करै सब यों मन भावै। कालहु ते उबरै भजि जीवत जीवत सों भजि जान न पावै ८॥ दोहा ॥ द्वौदलमें समरत्थ जो याको लेहि छुड़ाइ ॥ पाछे कहिहौ बालकन देखत राजा राइ ९ शंखध्वनि हरि तब करी नत क्षणही अकुलाइ ॥ बचन भीमको पार्थ सुनि तबहिं युधिष्ठिर राय १० कौरवदल कछु नाकर्यो लीनीभुजा उखारि ॥ केहरिज्यों मृगको उदरत्यों उरडार्यो फारि ११॥सवैया॥ ज्योंरघुनाथहन्यो रणरावण जंभकिधौं सुरराज पछार्यो।

राघव वीर बध्यो बाणासुर तीक्षण बाण समूल प्रहार्यो । कै त्रिपुरारि हन्यो बर राक्षस एकहि बाण उरस्थल फार्यो । ऐसहिं भीम दुशासन मारि तबै मनको वह रोष निकार्यो १२ कोपिकै बीर बली बलसों दुश्शासन द्वैदल बीच सँहार्यो । केहरि ज्यों मृग दौरि दल्यो सुर-राज किधौं भुव पर्व्वत फार्यो । ज्यों हनुमंत बलीबलसों महिरावण को भुज मूल उपार्यो । त्योंनरसिंह सक्रोध भयो हरणाकुशको जो उरस्थल फार्यो १३ ॥ दोहा ॥ मन भायो करि फारि उर रुधिर अंजुली चारि ॥ अँचै भीम प्रफुलित भयो मनको रोष निकारि १४ औररुधिर भरि अंजुली लैकै पहुंच्यो धाम ॥ जाय न्हवाई द्रौपदी सब पूजे मन काम १५ ॥ सोरठा ॥ यशहै जीवन मूरि इहि पुर अरु वहि पुर सुखी ॥ ते सब ह्वैहैं धूरि द्विज दोषी अरु अपयशी १६ ब्यालबसै जिहि गेह पर द्वारा रतिजे पुरुष ॥ निश्चय जानोंएह मृत्युमाहिं संशयनहीं १७ छैपर तरुणीचीर सबजगमें अपयश लियो । मर्यो दुशासन बीर देखत सकल महारथी १८ द्रुपदसुतातब रुधिर न्हवाई । रण मंडल सो पहुंच्यो जाई ॥ नकुल शकुनि सोंरण भयो घनों । जुरे असुर अरु सुरपतिमनों १९ बाणन मारि शकुनि बिचरायो । बेध्यो उर वरभूमि गिरायो ॥ जूझत शकुनि कुलाहल भयो । हाहा शब्द सकल दल छयो २० ॥ दोहा ॥ भयो द्रुपद अरु करणसों अतिगति करि संग्राम ॥ जूझे भट द्वै सेनके बरणि सकै को नाम २१ कर्ण द्रुपद नरनाथ

को उर मारे दशबाण ॥ कौन कहै तिन धरणिधुकि ततूक्षण छांड़े प्राण २२ ॥ दंडकछन्द ॥ धीर तजे बीर सबै व्याकुल शरीर ह्वैकै संग्रम गँभीर बीर कर्ण सो महारथी। शूर कहलाने दहलाने दल दीरघ जे हाथी हहलाने शंक जाय कौनपै कथी ॥ यत्र तत्र शत्रदाह दुर्घट बिकट भट काटि काटि कीने कालदंड लोकके पथी। कहूं डरे अश्व कहुंपायक पताका रथ कहूं गिरे रथी कहूं महिगिरे सारथी २३ ॥ दोहा ॥ करण पराक्रम कै बढ्यो नहीं सुरोंक्यो जाय ॥ कटक त्राश उर जानिकै रुप्यो पार्थ रण आय २४ ॥ इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायां दुश्शासन शकुनि राजाद्रुपदबधबर्णनोनामअष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

त्रोटकछन्द ॥ रबिनन्दन पार्थ जुरे रणमें। बहु क्रोध दुहूं जनके मनमें ॥ अति संग्रम भो कवि कौनकहै। शर जालन कों तहँ पौन बहै १ घर ऊरध बाणनछायलयो। छपि सूर तहां तम छायगयो ॥ अति अद्भु त बिक्रम कौन कहै। सुरवे लखि लाखनि भूलिरहै २ ॥ दोहा ॥ बाण चले दुहुबीरके योजन एक प्रमान। वेसै येई युद्धको पटतर नाहीं आन ३ अस्त्र शस्त्र सो परस्पर समर रचतदोउ बीर ॥ जुरिजुरि क्योंहूं सरस महि दोऊ रण रणधीर ४ आयो वासर तीसरो क्योंहूं रण उस रैन ॥ सुर असुरन यह कर्म कहुं सुन्यो न देख्यौ नैन ५ कब छांड्यो कब शरलयो सेन परै कहुं जानि ॥ मंडलीक कीनो धनुष थके

न क्योंहूं पानि ६ रह्यो करणके तूण में बाण ह्वैगयो व्याल ॥ धर्‌यो धनुष बलवंड सो छांड़ि दियो उत्ताल ७ ॥ दोधकछंद ॥आवतसो अहि श्रीहरिदेख्यो । पारथ काल हिये महँ लेख्यो ॥ दाबि कियोतबहीं रथनीचो । शीश बच्यो लहि सूक्षम बीचो ८ वतटि किरीटहिलै गयो सोई । सेन समूह त्रशे सब कोई ॥फेरि सो व्याल सरोषत धायो । कर्ण निकेत तबै चलिआयो ६ (सर्पउवाच) ॥ दोहा ॥ निजअरि मारोंपार्थहै करण सो बुद्धि निदान ॥ हनों शत्रु तुम मोह जो करिकै छोंडो बान १० (कर्णउवाच) हो समरथ पार्थहि हतौं चाहों नहीं सहाय॥ कह्यो न मान्यो सर्प कोवह करि थक्यो उपाय ११ ॥ चौपाई ॥ कटक मुकट पारथ रिस भर्‌यो। खुरप बाण धनु योजित कर्‌यो ॥ बल करि रविनंदन शिर हयो ॥ टोपा काटि पार सो भयो १२ दोऊ रोषवंत वर बीर । करत युद्ध नहिंश्रमित शरीर॥ तजत न रण शिर छूटे केश। दोऊघोर असुरके भेश१३ ॥ गीतिकाछंद ॥ शल्य सो नृप करण भाख्यो कौन रथवर बाहई । सुनत सारथि रोष कीनो भूमि अबबैरिनि भई॥ गिले रथके चक्र धरती थकित ह्वै चलिना सक्यो। बार बार अशेष उद्यम किये सो करिकै थक्यो १४ श्राप पूरब जन्म दीनो बिप्रबहु दुख पाय कै । गिलेरथ के चक्र धरणी रह्यो संभ्रम छाय कै॥ कँवचकुंडल इंद्र लीने बाण कुंती लैगई । भई बैरिनि मेदिनी चित कर्ण के चिंता भई १५ (कर्णउवाच)॥ दोहा ॥ क्षत्रीधर्म

विचारि उर क्षण इक समर निवारि ॥ सुन्यो पार्थ जौं लैं रथै भुवतेलेहु निकारि १६ (श्रीकृष्णउवाच)॥ सवैया॥ पौन को पूत बहायदियो जल भोजन माँझ हलाहल डार्यो । सुरभि हरी जब भूप विराट की जायतहाँ बहु साँकरो पार्यो । करी न कछू मर्य्यादकी बात जबै सुत धर्म को देश निकार्यो । द्रौपदी को खल चीर गह्यो तब पाप कियो तुम धर्म विचार्यो १७ ॥ दोहा ॥ करै निहोरो क्यों जियो ताते कीजै युद्ध ॥ ज्यों पावक में घृत जलै भयो करण अति क्रुद्ध १८ कोपि शरासन कर लयो चले करण के बान ॥ हनत पार्थ मोह्यो महा भूतल पर्यो निदान १६ वल करि काढ्यो कंध दै भुवते रथ सविलास ॥ बहुरि वृष्टि शरकी करी छायो धर आकाश २० ॥ दोधकछंद ॥ चेततही उठि पारथ धायो । करण लख्यो नियरो जब आयो ॥ सारथि सों बिनवै तब ऐसे । हाँकु रथैरण जीतहुं जैसे २१ फेरि धरारथ चक्र गिल्यो है । सोवर ठेलतहू न ठिल्यो है ॥ बारहिं बार महा झकझोर्यो । भूमि हली अहिको शिर ठोर्यो २२ पारथ क्रोध कियो बहुधाहीं । बाण हयो रिपु के उर माहीं ॥ जूझि पर्यो रविनंदन ऐसे । बज्र हन्यो सुरने गिरि जैसे २३ ॥ चामरछंद ॥ हाय हाय यत्रतत्र ह्वै रही जहाँतहाँ । देवलोक भूमिलोककर्णसों रथीकहाँ ॥ सैनता बिना भयो अशेष भाँतिदीनसो । अंध पुत्र भो महाविशेष दुःख लीन सो २४ ॥ दोहा ॥ भागि चले सब शूरगण कर्ण पर्यो रण देखि ॥ दुर्योधन तब आपनी मृत्युगिनी

सुबिशेषि २५ अहंकार युत जब कर्यो दलपति शल्य जुझारि ॥ पाय रजायसु बेगिही कोपि कर्यो किरवार२६ लोपि गयो दिन कर जहाँ कर्ण पर्यो रण देखि ॥ रुदन करतगंधर्व सब सुर शोके सबिशेखि २७ नैनहीन अंबुज बदन योबन त्रिया शृँगार । त्योहीं कौरव दीनदल को कहि थंभनहार २८ ॥सवैया॥चंद्र बिना रजनी रजनी-पतिरैनिबिना द्युति मंदअनैसो । नीरबिना सर नैन बिना नरधाम धनी बिनदेखिय जैसो । नीरबिना मुक्ताहलसो अरु दीप बिना रजनीतम जैसो । त्योहीं शृँगार बिना युवती नृप कर्ण बिना दल लागत तैसो २९ ॥ दोहा ॥ पर्यो देखि नृप कर्ण को बिप्र रूप धरि आय ॥ दुर्बल अति ह्वैकै कह्यो नृपति कर्णसों जाय ३० ॥ चौपाई॥ दारिद्रहि बहु भाँतिसतायो । याचनतोहिं यहाँहौं आयो॥ कर्ण सुन्यो जगमें बड़भागी । ताको चित्त भयो अनुरागी ३१ (कर्णउवाच) पाहन लैकर बिप्र सयाने । मोरद भंजन शंक न आने ॥ बेगि करहु यह बार न लावहु । लै सोइ कंचन धाम सिधावहु ३२ (श्रीकृष्णउवाच) दोहा ॥ साधु साधु तू करण नृप पट तर दीजै काहि ॥ तोसों तुहीं न दूसरो जग में कोउ न आहि ३३ (कर्ण-उवाच) बिप्रन हित कंचन दियो सुनियो बिप्र समान ॥ निज त्रिय रति योबन गयो स्वामि काज ये प्रान ३४ आदि अंत जाको नहीं सब जग ब्यापक आय ॥ भई स-कल मन कामना तिनको दरशन पाय ३५ ॥ श्लोक ॥ कृपायुक्तस्तदाकृष्णो यत्रकर्णोरणेहतः । जीवकर्णसहस्त्रेण

योदतेकृष्णावोपुनः ३६ वृद्धब्राह्मणरूपेण कृष्णस्तुस्वय
मागतः। बिप्रोहंकर्णराजेंद्र दारिद्रंबहुव्यापते ३७ पाषाणं
गृहणेविप्र दंतभंजयतेमम। सवाभारसुबर्णश्चयथात्वंरण
उच्यते ३८ (श्रीकृष्णउवाच) साधुसाधुमहाबाहो सर्व
शास्त्रबिशारद। दातारसमकर्णस्य पृथिव्यांनप्रजायते ३६
(कर्णउवाच) बिप्रार्थेनधनंक्षीणं स्वदारागतयौवनं। स्वा-
मिकार्य्यंगताप्राणाअंतकालेजनार्द्दनम् ४० ॥ दोहा ॥ कर्ण
पर्‍योदिनतीसरे जब बीतेद्वैयाम ॥ समर भूमिउद्यतभयो
शल्यकियोसंग्राम ४१ इतिश्रीमहाभारतपुराणे बिजयमु-
क्तावल्यांकबिछत्रसिंहविरचितायां कर्णबीरसंमोहनोनाम
ऊनचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ३६ ॥ इतिश्रीकर्णपर्बसमाप्तम् ॥

अथशल्यपर्ब्बकथनम् ॥

दोहा ॥ शल्यशूर रथ आरुहो कर लीने धनुवान ॥
जीत्यो चाहत शल्य को साजत समर बिधान १ द्रोण
कर्ण भीषम हते रण जित बार अनंत ॥ जीत्यो चाहत
शल्यरण आशा बहु बलवंत २ ॥ दोधकछंद ॥ अर्जुन
को रथ बाणन छायो। सेन घनो बलकै बिचलायो ॥
धूरिउड़ी उठि अंबर लोप्यो। शल्य तहाँ जमि कै पग
रोप्यो ३ द्वैदल में नहिं सूझत कोऊ। सन्मुख युद्ध जुरे
भट दोऊ ॥ शूर घनो करि पौरुष जूझत। काहू की कोउ
बात न बूझत ४ ॥ दोहा ॥ जरासंध को पुत्र तब दुरा-
संध तिहि नाम॥ सहित आपने सेनसों जूझि पर्‍यो
संग्राम ५ दुरासंध जूझो लख्यो नकुल पर्जर्‍यो बीर ॥

हन्यो सुशर्मा क्रोधकरि जूझि पर्यो रणधीर ६ ॥ चौपाई ॥ नृपति युधिष्ठिर कोपे आप । जाको जगमें बड़ो प्रताप ॥ असुर हिडंब आपकर हयो । बिनाजीव परि भूतल गयो ७ एक घरी दिन लगि रण कर्यो । भूप युधिष्ठिर सों संहर्यो ॥ दौर्यो पवन पूत बलिबंड । कीनो तिन संग्राम अखंड ८ ॥ छप्पै ॥ शूर हने रण धीर हने रथवंत बीर बर । कहूं हने गजराजगिरे कटिकुंभ चरण धर । गिरे सारथी अश्वगिरे कहुं छत्र चमर धर । कहूंगिरे ध्वज दंड कहूं थर हर पायक नर । बीस कुंवर कौरव तहाँ भीमसेन बर संहरे । काटिदियो बन कदलि ज्यों थल थल भट दीसत परे ९ दोहा ॥ सब कौरव निंन्यानवे हनेभीम बलबंड ॥ दुर्योधन एकै बच्यो भो संग्राम अखंड १० सहदेव अरु शल्य सों संग्रम भयो अपार ॥ को बरणै बिधि परस्पर करत अमित संहार ११ ॥ चौपाई ॥ सहदेव कर असिवर लयो। शल्य सारथी तब तिनहयो ॥ तोर्यो रथअरु हने तुरंग । कीनोघाव शल्य के अंग १२ मार्योशीश टूटिधर पर्यो । दुर्योधन थरथर थरहर्यो ॥ भजे शेषभट आयुध डारि । कितेचले भट हियरा हारि १३ ॥ दोहा ॥ कुरुनंदन तिहि थल रह्यो निपट अकेलो आप ॥ हती चमू चतुरंगसब जाको अमित प्रताप १४ ॥ छप्पै॥ छप्पन योजन छत्र छाँह जाकी धर मंडहि । दुर्गम दुसह दुरंत अदंडनि बलकरि दंडहि ॥ बंधु कुटुंब अशेष सकल किंकर चहुंओरहि । सबजग अमित प्रताप ताप क्षत्रिन

क्षिति छोरहि॥ बहु छत्रचँवर गज बाजिरथ दलवर दीरघ पेखिये। सोइ भूमिभूप कुरुराज रण निपट अकेलो देखिये १५॥ सोरठा॥ होनी होयसो होय नहीं मिटावै ईशसो॥ ताते जग सबकोय संशय चित्तन आनिये १६ जो राचो करतार सोई सोई ह्वैरहै॥ यहै बात सबसार मूरख जो संशयकरै १७ इतिश्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकबिछत्रसिंहबिरचितायांसुशर्माशल्यवधोनामचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४०॥इतिश्रीशल्यपर्व्वसमाप्तम्॥

——

अथगदापर्व्व कथनम्॥

चौपाई॥ राजानिपट अकेलो भयो। मंत्र जपन जल भीतर गयो॥ जपन चारि घटिका जोपावै। तौ अपने सब सेन जियावै १ यह सुधि पाये पंडव धाये। जलमें भूपहुतो जहँ आये॥ कह्यो कहाँ दुरि कुरुपतिगयो। सो नहिं हमैं सामुहे भयो २ (भीमसेनउवाच)॥ दोधकछंद॥ तौलगि केतिकभूपति काये। नामकछूनहिं जातगनाये॥ ताथल जूझि परेसबतेई। क्षत्री जे बलवंतहुतेई ३ तौउरहै इतनो डरु पैठ्यो। तू दुरिकै जलभीतर बैठ्यो॥ क्षत्रिय धर्म बिचारि हियेमें। शोच कछूनहिं आपकियेमें ४ जो भजि बीर पतालहि जाई। तौ न बचै अब मोपहँभाई॥ भूमि पताल सँहारौं तोहीं। शपथ महीपति पंडुकि मोहीं ५॥ दोहा॥ हनेबीर निंन्यानवे तूकतउबरै भागि॥ जौलगि तोहिं हनोनहीं नवै न तामस आगि ६॥ चौपाई॥ पंडु सुतन में तोहिं जो भावै। सोई तोसों रणको

आवै ॥ जोई आयुध तू कर धरिहै । ताहीसों सोतोसों लरिहै ७ अबजो क्षत्रिय धर्म न गहिहै । सब जगमें उपहासहि सहिहै ॥ सुनत बैन भूपति परजर्‌यो । ज्योंघृत माँझ हुताशन पर्‌यो ८ रोषवंत केहरि सोंकढ्यो । रोष देखि भीमहिं उर बढ्यो ॥ बज्रपातसम मुष्टिक मार्‌यो। कौतुक देखत बंधव चार्‌यो ॥ ६ ॥ नगस्वरूपिणीछंद ॥ सरोषह्वै दुहूंजुरै । न भाँति भाँतितें मुरै ॥ अशेष युद्ध साजहीं । न रोष छाड़ि भाजहीं १० ॥ दोहा ॥ गिर्‌यो बार दश भीमधुकि मोहिमोहि बलवंड ॥ सप्तबार भूपति गिर्‌यो करि संग्राम अखंड ११ कोऊ बीर करै नहीं भूपर गिरे प्रहार ॥ भिरत अमित गति कोकहै तारणको बिस्तार १२ (दुर्योधनउवाच) ॥ सुन्दरीछंद ॥ ढीठभयो तू कत रण ठानत । मोहिं न तू अपने उर आनत ॥ बालक मारि कितो बलबोलत । कैयह बिक्रमफूल्योडोलत ॥ १३ जीवत क्यों उबरै अबमोपै । युद्धकरो बनिआवैतोपै ॥ बंधव तेरेइतोहिं सराहत । भाँतिनभाँतिन तोमुख चाहत १४ डारि गदा भगिजाय न क्यों अब । जीवतछाड़ौंन तोहिं इहाँ जब ॥ द्वैमें हारि न कोऊ मानत । भाँति अनेकन युद्धहि ठानत १५ ॥ दोहा ॥ हिय हार्‌यो तब पवनसुत बिलखे बंधव चारि ॥ फेरि सम्हार्‌यो देह तिन जब झुकि कह्यो मुरारि १६ (भीमसेनउवाच) सकल देव नरदेव के जो पीछे दुरि जाय ॥ तऊन छाड़ौं तोहिं हौं कोटिक करो उपाय १७ सैनदईश्रीकृष्ण तब भीमहिं चितवतजानि ॥ तब रिसा-

थकै उठिचल्यो ठोंकि जंघसों पानि १८ ॥ चामरछंद ॥
सैनजानि भीमसेन जंघमें गदाहनी । मोहि मोहि भूमि
में गिर्यो सुभूमिको धनी ॥ बेगिदै महीप धर्मपुत्र पास
आइयो । देखिदेखि सोथली अशेष दुःख पाइयो १६
(राजोवाच)॥ छप्पै ॥ जाभुज भीषम करण द्रोण भग-
दत्त सुशर्मा । दुश्शासनदै आदि बंधुसब अद्भुत कर्मा ॥
देशदेशके भूप द्योसनिशि शंका मानत । दुर्योधन पग
परसि आपनो जीवन जानत ॥ निशिद्योस छत्र छायाच-
लै तेज अमित गति पेखिये । रण भूमि भूमि भूपति गि
र्यो सोकोउ साथन देखिये २०॥दोहा ॥ श्वेतछत्र कबि
छत्रकहि तन्यो युधिष्ठिर शीश ॥ बहुत बिसूरे कृष्णको
मुखचाह्यो अवनीश २१ (राजोवाच)॥चौपाई ॥ हुतोस-
कल दल सो कित गयो । भूपति बिनवै बहुदुख छयो ॥
रथी अतिरथी शूरअपार । कितगयो साहन सब परिवार
२२ जिन तृणकरि मेरोदल लेख्यो । क्षितिपर कोऊ शत्रु
नदेख्यो ॥ जाकेडर थर थर थरहर्यो । सोईभूप अके-
लो पर्यो २३ जाकोक्षिति सब जोरैं हाथ । सोभुज पर्यो
नकोऊ साथ ॥ यहिविधि धर्मपुत्र दुख छाये । भीमआ-
दि सब बंधव आये २४ (भीमसेनउवाच) ॥ दोहा ॥
कतदुख कीजै भूप अब क्षत्रीधर्म विचारि ॥ पायपायतुव
आयसु डार्यों कटक सँहारि २५ हमचूके सेवक नहीं
आयसु मान्यों शीश ॥ गुण औगुण जोबनिगयो तबअ-
ज्ञा अवनीश २६ चित्त कर्यो फिरि चलनको भूपयुधि-
ष्ठिर राय ॥ पहुंचे तहँ बलभद्र तब भूपतिके ढिगजाय२७

गीतिका छंद ॥ देखि दुर्योधन पर्‌यो भुवजंघ घाउबि-
लोकिकै। जानियुद्ध अधर्मको बहु चित्तमाँझ सशोकिकै॥
हैगदाके युद्धको यह धर्मचित्त बिचारितो। अर्द्धतन कटि-
कै पर्‌योसो स्वप्नहू नहिंमारितो २८ ब्योमभूमि पताल
भीमहिं हौंनहीं अब छंडिहौं। आजुही बल आपने हठि
सर्बगर्ब निखंडिहौं॥ बाड़वानलसों उठ्यो करिक्रोध बहु
दुख पाइकै। अति रोषवंत विलोकि श्रीहरि यौंकह्यो ढि-
ग आयकै २९ (श्रीकृष्णउवाच) द्रौपदी तब सभाआनी
कर्मकर्कश नृपकियो। जंघ तोर्‌यो मारिकै यहनेम भीम
तहाँलियो॥ ताहेतु दुश्शासन सँहार्‌ये आपनो पनुपा-
रियो। हतिशत्रु बलही जीवके इन सर्बशोक निवारियो
३०॥दोहा॥समझायेबहुभाँतिकरि सुनि बलभद्रसोबात॥
कुरुनंदन अपराधकी सुधि करिकरि पछितात ३१ करी
बिदा बलभद्रकी उरको क्रोध निवारि॥ बंधक पांचौसंग
लै निजथल चले मुरारि ३२ एक क्षोहिणी दल बच्यो
धर्म सुवनके साथ॥ रथचढ़ि चारों बंधुयुत तबैचले नर-
नाथ ३३ रैनिभये धृष्टद्युम्न निशि सूत्यो सुखबीर॥ द्रुपद
सुताके पाँचसुत सूते श्रमित शरीर ३४ इतिश्रीमहाभारत
पुराणे बिजयमुक्तावल्यां कबिछत्रसिंह विरचितायांगदा
युद्धदुर्योधनबधबर्णनोनाम एकचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४१॥

दोहा॥ सूत्यो जान्यो कटक दल नंदिघोष रथ
पाय॥ दूरिगये लै कृष्ण तब पंडुपुत्र सुखपाय १
उतरे रथते अनुजयुत तबहीं भुवभरतार॥ घसत कृष्ण

रथते तबै उठो अगिनि की धार २ नंदिघोष जरि भस्मभो कह्यो न कौतुक जाय ॥ यह लखिकै पांचौ अनुज संभ्रम रहे भुलाय ३ (श्रीकृष्णउवाच)भीषम गुरु अरु कर्णके शरन दयो रथ जारि ॥ याको अब परभाव सुनि प्रगट्यो भेद मुरारि ४ ॥ चौपाई ॥ जौलगि हौं रथ ऊपर रह्यो । तब लगि सो बाणन नहिं दह्यो ॥ जबहौं धसि भुवऊपर आयो । नंदिघोष तिन शरन जरायो ५ हरिचरित्रतिन ऐसो देख्यो।बरणयो जायन अद्भुत लेख्यो॥ दुर्योधनजहँ रणमें पर्यो । द्रोणपुत्र तिहिथल पगुधर्यो६ (अश्वस्थामउवाच)॥दोधकछंद॥आयसुदे कुरुनंदनमोको। दुष्ट हनौं बहुदै सुख तोको ॥ पैजकरी यहिभाँतिभनैंसों। पार्थ युधिष्ठिर कौन गनैंसों ७ सेन रही सोइ आज सँहारों । बंधव पांच तुरंतहि मारों ॥ जीवतमोहिं परे सुख सोवैं । आजु सबै यमको मुख जोवैं ८ ॥ चामरछंद ॥ पंचबंधु मारि आजु पंच शीश लायहौं । तबै महीप तोहिं मुःख आयकै देखायहौं ॥ बेगिदै कृपालहवै नरेश भागि जो सकै । गाजिकै चल्यो बली सरोष चित्त मांझकै ९ कुंडलिया ॥ बैर पिता को आजुही लेहौं दल संहारि । और हनौं बर पांडुसुत धृष्टद्युम्न को मारि ॥ धृष्टद्युम्न को मारि सकल मनभायो करिहौं । वृद्ध तरुण शिशु बाल चित्तमें एक न धरिहौं ॥ धरिहौंशंक न अंकहतौं उर संशय जाको । सोई करिहौं काज मिलाऊं बैर पिताको १० दोहा ॥ चलि सो पहुंच्योदल निकट द्रोणपुत्रयुतक्रुद्ध ॥ पुरुष एक ठाढ़ो भयो तासों कीनो युद्ध ११ द्रोणपुत्र की-

न्हो तहाँ दो घटिका संग्राम ॥ बहु संतुष्ठ कियो सुनर तब कीन्हो बिश्राम १२ ॥ चौपाई ॥ तब तिहि पुरुष दया बहु करी। माँगु माँगु यहि बिधि अनुसरी ॥ जोई बर तेरे मनभावै। माँगतही सो मोपैपावै १३ (अश्वस्थामाउवाच) बीर अबीर सबै अरि मारौं। पांडुसुतनयुतभट संहारौं ॥ यहै दयाकरिकै बर दीजै। परम अनुग्रह मोपै कीजै १४ एवमस्तु करि दीनो जान। गयो कटक में गहे कृपान ॥ सोते कुंवर शिखंडी देख्यो। भारत भयते निर्भय लेख्यो। १५ ॥ दोहा ॥ प्रथम प्रहार्‌यो सो कुंवर धृष्टद्युम्न को जाय ॥ बाम चरण छाती हन्यो सोवत बीर जगाय १६ उठन न पायो बीरसो मार्‌यो दुःख दिखाय ॥ द्रुपद सुता के पंच सुत तेऊ मारे जाय १७ अर्द्ध रैनि लौं सब कटक ठाम ठाम संहारि ॥ एक क्षोहिणी दल हन्यो चल्यो सकल भुव डारि १८ पंचालीके सुतनके शीश काटि लै हाथ ॥ तबपहुंच्यो तिहि ठाम जहँ दुर्योधन नरनाथ१९ (अश्वस्थामाउवाच) धर्म पुत्रको आदिदै शिर लै आयो काटि ॥ दुर्योधन उर सुख भयो ताके कर ते डाटि २० त्रोटकछंद ॥ सुख दुःख समान भयो जबहीं। नर नायक प्राण तजे तबहीं ॥ चलि भूप युधिष्ठिर गेह गयो। लखि कै दलते भय भीत भयो २१ (राजोवाच) सुत द्रोण कहा यह कर्म कियो। शिशु मारि कहाँ अपराध लियो ॥ बहु दुःख धनंजय चित्त धर्‌यो। अपने उरमें बहु क्रोध कर्‌यो २२ भगि कै अब सो अरि जाय कहाँ। अबहीं हतिहौं पुनि बेगि तहाँ ॥ रुकि कै तबहां रथ और

सज्यो । तिहि रोष नहीं पल एक तज्यो २३ सुनिकै गुरुपुत्र भज्यो तबहीं । बहु पारथ रोष कर्यो जबहीं ॥ तिन जाय लयो नहिं भाजि सक्यो । अति ब्याकुलह्वै थहराय थक्यो २४ ॥ दोहा ॥ अर्जुन योजन एक पै गुरुसुत लीनो जाय ॥ जान्यो नहीं उबार तिन फिर्यो शूर समुहाय २५ उपज्यो अद्भुत युद्ध तहँ कोकबि सकै बखानि ॥ शरही शर नभ छायगो थके शूर नहिँ पानि २६ काटत दोऊ परस्पर बाण समूह अनेक ॥ एक ब्योममें एक धर करन कटत है एक २७ ॥ चौपाई ॥ हारि न मानत दोऊ बीर । दोऊ समर बली रण धीर ॥ एक हि गुरु पै बिद्या पाय । ब्योम थली बाणन करि छाय॥ २८ दोऊ रण को तब अलि बढ़े । एक संग दोउ बिद्या पढ़े ॥ ब्रह्म अस्त्र कर पारथ लीनो । वही द्रोण सुत योजित कीनो २९ उपजी अगिनि दुहुन ते भारी । त्रिभुवन कंपे नर अरु नारी ॥ हाहा शब्द सकल पुर ठयो । महा ताप सुर असुरन भयो ३० ॥ सोरठा ॥ आकंप्यो सुरराज देखन बहु आतंक उर ॥ प्रलय होत है आज इहि बिधि जग जन उच्चरत ३१ ॥ दोहा ॥ ब्रह्म बाण क्यों पार्थ को रणमें निष्फल जाय ॥ शीश फोरि कै मणि लई तब दीनो मुकराय ३२ गर्ब उत्तराको हन्यो गुरु सुत कै संधान ॥ भयो मृतक सुत तिहि समैं सब कुल दुःख निदान ३३ कृष्ण अनुग्रह सुत जियो भयो परीक्षित नाम॥ चले पार्थ गृहको तबै रहित भयोसंग्राम ३४ ॥ चौपाई॥ चले हस्तिनापुर सब आये । नृप धृतराष्ट्र तबै समुझाये॥

भाँति भाँति बिनयो कर जोरि। मिटै न होनी किये क-
रोरि ३५ भयेशुद्ध पानी तिनदियो। काज कर्म कृतिसब
विधिकियो॥ रुदनकरैं कौरवकी नारी। दुख दावागिनि
तें परजारी ३६ तब भीपम सब त्रियसमझाई। होय रचैजो
त्रिभुवन राई॥ पांडु पुत्र सबपासबुलाये। दिन प्रति राज-
नीति समुझाये ३७ (भीष्मउवाच)॥ सवैया॥ क्रोध
वृथा न करो कबहूं न मतो कछु मूढ़नसों करियेजू। मित्रन
को अपमान रचो न दया उरशत्रुन की धरिये जू। छत्र
सदा परस्वारथ कीजिय लोकअलोकनतें डरियेजू। होउ
हठी न छली नरनाथ न वित्त कहूं द्विजको हरियेजू ३८
छप्पै॥ दयाराखिये अंक भूलि व्रतही मन करिये। युगुल
चोरकीसौंहचित्तमेंएकनधरिये॥ सदा रक्षिये ताहि शरण
शरणागतआवै। भूलिहुचित्त प्रबीन नहीं कातरतालावै॥
त्रिया काज द्विज गायके निज काजन सब परिहरत।
कबिछत्र चलत यहिरीतिजो सो नृपता महिमंडलकरत
३९॥ दोहा॥ बिरद बड़ाई पायकै गर्व न कीजैचित्त॥
नाबिसरहु हरिको हिये बिसरायो जनिमित्त ४० राज-
नीति सब सब कही भाँति भाँति समझाय॥ छत्र कृपा
करि भक्त बश श्रीहरि पहुंचे आय ४१ (भीष्मउवाच)
सकल भई मन कामना कलिमल गये नशाइ॥ अंत
अवस्थामें सुखद श्रीहरि दरशन पाइ ४२॥ सवैया॥
लाजसदा बिरदावलिकी कबिछत्रसदाजनकोसुखकारी।
धावनि चक्रगहे करकीकह बानिकहूं बिसरै न बिसारी।
केहरि ज्यों उतर्यो गिरिते अवलोकतही जिमि कुंजर

भारी। वेदकी कानि न साधत ज्यों व्रत राखि कृपानिधि पैज हमारी ४३ ॥ दोहा ॥ करी बंदना कृष्णकी भीषम बुद्धि निदान ॥ प्राणतजे भीषम तबै उत्तर आये भान ४४
इतिश्रीमहाभारतपुराणेबिजयमुक्तावल्यां कबिछत्रसिंह बिरचितायांभीष्मपरमधामगमनो राजायुधिष्ठिरबिजय दुर्योधनबधवर्णनोनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

दोहा ॥ तबै राज अभिषेक करि भूप युधिष्ठिर आप॥ बैठ्यो प्रफुलित पाट पर बाढ्यो अमित प्रताप १ करत निकंटक राज्यवर नाशे शत्रु समूल ॥ छत्र कहै सज्जनन के बाढ़ी तन मन फूल २ ॥ दंडकछंद ॥ कर्महै कुकर्म जेते मिटेहैं अधर्म सब भूतल सकल धर्म सरसाइयतुहै। ठौर ठौर दान सनमान घने बिप्रन के आनँद निधान भौन भौन गाइयतुहै ।यत्र तत्र छत्रकबि कोउ नाहीं शत्रुरह्यो अस्त्र छाड़ि छाड़ि सोन ढूंढ़े पाइयतुहै। भूपति युधिष्ठिर के राजमें सुचैन जग मेटिकै असत्य सत्य धरा छाइयतु है ३ ॥ दोहा ॥ चारि वरण ते स्वप्नहूं परत्रिय रत नहिं कोय ॥ परद्रोही नर कृतघ्नी अयश न काहू होय ४ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ दरिद्रै दरिद्री अधर्मैअधर्मी। महाशोक शोकै कुकर्मै कुकर्मी ॥ लसै इंद्र कीसी पुरी राजधानी। सबै सद्म नीके महा सुःखदानी ५ सुहाये अटादेखिये धाम धामा। पुरस्त्री बिराजैं मनों कामकामा॥ कहाँलौं कहौं तापुरी की निकाई। चहूं ओर दीखै महा शोभ छाई ६ सबैबाग फूले फले चित्तमोहैं। मनोंतेलता

कल्पकी छत्र सोहैं ॥ तहाँ धामहैं नीर संयुक्त ऐसे। मनों देव देवेश के सद्म जैसे ७ छहूं कालके वृक्ष फूले फलेहैं। तहाँ कोकिला आदि पक्षी भलेहैं ॥ कहाँ लौं बखानों महा शोभ नीकी। तहाँ शोक शंका नशै सर्ब जीकी ८ दोहा ॥ धर्म सुवन भूपति बने आगे बंधव चारि ॥ सेवत मन बच कर्म सों सकत न आयसु डारि ९ ॥ गीतिका छंद ॥ गोत घाउ विचारिकै ऋषिराज तहँ बोले घनै। व्यास ऋषि दुर्वास युत ऋषिराज येतिकको गनै ॥ यज्ञ तहँ हयमेध कीनो सर्ब विधिन बनायकै। पार्थलै चतुरंग सेना भूमि जीती जायकै १० ॥ दोहा ॥ आयो दश दिशि जीति कै आन्यो बाजी धाम ॥ पूरण कीनो यज्ञ तहँ सब पूजे मन काम ११ ॥ चौपाई ॥ यज्ञ सिरायो सुरसरि तीर। धर्म धुरंधर गुण गंभीर ॥ समदे ऋषि जे आये भूप। भूपतिपहिरे बसन अनूप १२ जिती हुतीकौरवकी नारी। ग्रसीं सकल दुःखनिसोंभारी॥ते सब व्यास महाऋषि राई। लीनी अपने पास बुलाई १३ दोहा ॥ मायाबीतिनके पुरुष दीने ऋषि दरशाय ॥ पति लहि सब आनन्दयुत पगन परीं सब जाय १४ धसीं सुरसरी के सलिल भईंसुअंतर धान ॥ ह्वैहै सोई जो कछू रचि राखी भगवान १५ रहे तहाँ धृतराष्ट्र अरु गंधारी सँग नारि ॥ बहुत बिसूरें रैनि दिन सुतको शोच बिचारि १६ एक छत्र महिभोगईं भूप युधिष्ठिर आप ॥ रामचंद्र ज्यों अवध में दिन दिन बढ्यो प्रताप १७ निशिदिन सेवा मातकी करैं न शासनभंग॥आज्ञाकारीसर्वथा

चारो बंधव संग १८ वृद्धि भई शशिबंशकी अरु साहन भंडार ॥ बाढ्यो छत्र बिशेषि के यदुकुल बहु परिवार १९ चौपाई॥करि भारत ठवरे दश जने। अब कबि तिनके नाम नि भने ॥ पांचो पंडु पुत्र बलवान। छठे शोभिजै श्रीभगवान २० करणपुत्र शोभित वृष केत। मेघ बरण बहुविधि सुख देत ॥ कृतबर्मा यादव बलिबंड। द्रोण पुत्र संग्राम अखंड २१ ॥ दोहा ॥ उबरे भारत में इते और रह्यो नहिं कोय ॥ जोई चतुरानन रची सोई सोई होय २२ सोरठा ॥ करण पुत्र वृषकेतु सुत सरिबर भूपति गनो ॥ करि कुंती बहुहेतु जानति ताकहँ प्राण सम २३ ॥ छप्पै ॥ नित्य नित्य ऋषिराज भूरि भोजन तहँ पावहिं । षट दरशन रनिवास सकल मङ्गल उपजावहिं । सप्त द्वीप नवखण्ड सकल बंदीगुण गावहिं । हरषि हरषि मणि मुक्त द्विरद बाजीगण पावहिं । कबिछत्र सकल भूपति जपति दीन न नरकोउ देखिये। भुवभूप युधिष्ठिर राजमें सो थल थल आनँद लेखिये २४ ॥ दोहा ॥ द्वादश बर्षै बनरहे त्रयोदशै अज्ञात ॥ मारि कीचकन यश लियो हर्षवंत ह्वै गात २५ सब कौरव परिवार युत मारे जग यश जीति ॥ रहे हस्तिनापुर नृपति चारों अनुज समीति २६ ॥ छप्पै ॥ कूलद्रोण गांगेय सकल कौरव तरु साजै। बारि जयद्रथ भयउ लहरि रबिनंदन राजै ॥ कच्छ मच्छ जलजंतु शल्य तहँभयउ सुशर्मा। भूरिश्रवा भगदत्त भयो तहँ ग्राह सुबर्मा ॥ करिनाव धनंजय धीर को त्रिभुवन पति केवट भयउ। यश तिलक

युधिष्ठिर शीशकरि सोरणा सरिता तरि गयउ २७॥ दोहा ॥ जीत्यो भारत कृष्णा मत तिनहिं सहाईपाय ॥ एक छत्र महि भोगई छत्र युधिष्ठिर राय २८ भारत सुनि भाषा कियो छत्र सुबुद्धिहि पाय ॥ कहत सुनत पातक नशत अघ दीरघ दुख जाय २९ चारि बरण में जो सुनै तरुणी पुरुष जो कोय ॥ प्रगटै हरिकी भक्ति उर मोचन अघ को होय ३० ॥ सवैया ॥ जोफल तीरथ बर्त किये अरु जो फल षोडश दान दियेते। ज्ञान कथानि सुने फल जो कबि छत्र बढ़ै बहुबुद्धि हियेते। जो फल संयम नेम रचे अरु जो फल है शतयज्ञ कियेते। जो फल रुद्र प्रसन्न भये फलसोइ युधिष्ठिर नामलियेते ३१ सेवत साधक सिद्धिन को अरु ईश प्रसन्न भयेबर पाये। तीरथ राज प्रयाग गये अरु सागर संगम गंग अन्हाये। योग किये व्रतनेम लिये अरु ऊखल सप्तपुरी निशि धाये। यज्ञ जपे भगवंत भजे जप जाप सजे जु युधिष्ठिर गाये ३२ ॥ दोहा ॥ अष्टादशौ पुराण में सुनैं जगत में कोइ॥ सुनत बिजयमुक्तावली तैसोई फल होइ ३३ बरणयो ग्रंथ सुछत्र कबि अपनी मति अनुसार ॥ क्षमियो चूक बुद्धीश सब कबिता समुझनहार ३४ ॥ छप्पै ॥ मधुकैटभ कुल हन्यो हन्यो हिरणयाक्ष अघासुर। हरणाकुशजिहि हन्यो हन्यो धेनुक केशी सुर। बंधु सहित दशकंध हन्यो बत्सासुर जिहिबर। नरकासुर तिहि हन्यो हन्यो शिशुपाल अधम धर। सुत धर्म कर्म रक्षण करन महिमा नहिं जानी परै। त्रैलोक्यनाथ कबिछत्र कहि

पढ़त सुनत रक्षा करै ३५ ॥ सवैया ॥ ब्यालधरे शशि भाल धरे गज खाल धरे तन भस्म चढ़ाये। ज्वाल धरे शिर माल कपाल धरे बिषकंठ महासुख पाये। गंग धरे अर्द्धंग शिवा ढिग भंग धरे गण भूतनछाये। ऐसे सदा शिव होहिं प्रसन्न सो छत्र बिजय मुक्तावलि गाये ३६ ॥ दोहा ॥ फौज सुदरबारी लसै भूपति सिंह कल्यान ॥ पूरण कीनी छत्र कवि ग्रंथ सुतिहि अस्थान ३७ इतिश्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकबिछत्रसिंह बिरचितायांराजायुधिष्ठिरराजबर्णनो नामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

छप्पै ॥ तिलक भाल बनमाल अधिक राजत रसाल छबि। मोर मुकुट की लटक चटक बरणत अटकत कबि ॥ पीताम्बर फहराय मधुर मुसक्यानि कपोलन। रच्यो रुचिर मुख पान तान गावत मृदु बोलन ॥ रतिकोटि काम अभिराम अति दुःख निकंदन गिरिधरन। आनंदकंद ब्रज चंद प्रभु सु जयजयजय अशरन शरन१ मोर मुकुट नग जड़ित कर्ण कुंडल हेम झलकैं। मृगमद तिलक ललाट कमल लोचन दल पलकैं ॥ घुंघरवारी अलक कौस्तुभ कंठ बिराजै। पीत बसन बनमाल मधुर मुरली धुनि बाजै ॥ करत कोटि आभावरण सुचन्द्र सूर्य देखत लजत। ब्रह्मदेव येभक्त जन सु श्याम रूप प्रीतम सजत२ चतुरानन सम बुद्धि विदित जो होंय कोटि धर। एक एक धर प्रतिन शीश जो होंय कोटि वर ॥ शीश शीश प्रति

बदन कोटि करतार बनावैं। एक एक मुख माहिं रसन फिर कोटि लगावैं ॥ रसन रसन प्रति शारदा कोटि बैठि वानी बकहि। महिजन अनाथ के नाथ की महिमा तबहुं न कहि सकहि ३ भूमि परत अवतरत करत बालक बिनोद रस। पुनि योवन मद मत्त तत्व इन्द्री अनंग वस ॥ विषय हेतु जड़ फिरत बहुरि पहुंच्यो वृद्धप्पन। गयो जन्म गुण गनत अंत कछु भयो न अप्पन॥ थिर रहत न कोउ नरपति नवल रहत एक चहुं जुग्ग यस। सोइ अजर अमर नरहर निरखि जपियत भक्ति भगवंत रस ४ बिमल चित्त करि मित्र शत्रु छलबल वश किज्जिय। प्रभु सेवा बश करिय लोभवंतहि धन दिज्जिय॥ युवती प्रभु बश करिय साधु आदर बशआनिय। महाराज गुण कथन बन्धु समरससम मानिय॥ गुरु नमित शीश रस सों रसिक विद्या बल बुधमन हरिय। मूरख बिनोद सु कथा बचन शुभ सुभाय जग बशकरिय ५ सोयाचक लघु पद लहै कामातुर जो कलंक पद। लोभीदुर्यश लहै अस न लालची लहै गद॥ मूरख औगुन लहै लहै पढ़ि पढ़ि गुण पंडित। शूर सुरन यश लहै रहै रणमें महि मंडित॥ निर्वाण सुपद योगी लहै जो न गहै ममता सुमति। सुख भगत जगत जन लहै करै सुनो बिधि भक्ति अति ६ धिक मंगन बिन गुनहि गुन सुधिक सुनत न रीझै। रीझक धिक बिन मौज मौज धिक देत जो खीजै॥ देवोधिक बिन साँचि साँचि धिक धर्म न भावै। धर्म सुधिक बिनदत्त दया धिक अरिकहँआवै॥

अरिधिक चित्तन सालई चितधिक जहँ न उदार मति।
मति धिक के सब ज्ञानबिन ज्ञान सुधिक बिनहरिभगति ७

कवित्त॥ नेहराज रूपराज रसिक रसराज नैन सुख राज गहिकै उठायो गिरिराज है। छोटे से करन वर अँगुरी पै धर्‌यो गिरि पूंभी कैसो छत्र हरि लिये गज-राज है। हाथन ललाई तामें पहुंचिनि छबिछाई ऊंचो कियो हाथ सब छबिको समाज है। नैननिकी सैननिसों कहै अलबेली अलि चोर चोर खायो दधि काम आयो आज है। नेकु तो निहारो प्रिय प्राणन को प्यारो अ-ति पंकज से हाथ लिये धार्‌यो गिरि भारी है। प्रेमसों लपेटी कहै नेह भरी बात अलिलेहुरी लकुटि नेकु देहुरी सहारो है। कहैं अलि मिलि सब काम आयो आजु व-लि खायो रुचि माखन जो चोर कै हमारो है। नेह भरी बात सुनि हिय हुलसात मंद मंद मुसक्यात मुख रूप कोउ धारी है॥ सबही के ग्वाल बाल सबही के गोधन हैं सबही पै आनि परी प्राणन की भीरहै। सबही पै मेघ बरसत है गोलाधार सबही की छाती छेद करत स-मीर है। किधौं मेरोई अनोषो ढोटा भागि आनो एरी वीर वोझल पहारतर कोमल शरीर है॥ नेकु याके हा-थ ते गिरि लेहु क्यों न तुमहीं सब अहीर पै न काहू हिये पीर है॥

इति विजयमुक्तावलीसमाप्ता॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
चित्रचंद्रिका	ज्ञानमाला	अमरबिनोद	मुहूर्तदीपक
बारहमासा बलदेवप्र॰	गोपीचंद भरती	वैद्यजीवन	बृहज्जातक सटीक
मनोहर लहरी	कथा श्रीगंगाजी	औषधि संग्रह कल्पवल्ली	जातकालंकार
गंगा लहरी	अवधयात्रा	अमृतसागर द्रवबोध	जातकाभरण
यमुना लहरी	भरतरीगीत	वैद्यमनोत्सव	होरामकरंद
जगद्बिनोद	दानलीला बनारसीता दिल्लगन		मुहूर्तमार्तंड सटीक
शृंगारबत्तीसी	दोहावली रत्नावली	ज्योतिषभाषा	संस्कृत उर्दू टीका
राग	गोकर्णमाहात्म्य	जातकचंद्रिका	मनुस्मृति
रागप्रकाश	श्रीगोपालसहस्रनाम	जातकालंकार	विष्णु हारीत
लावनी	कथा सत्यनारायण स॰	दैवज्ञाभरण	महिम्न स्तोत्र
क़िस्सा वग़ैरह	हनूनाटक	ज्ञानस्वरोदय	व्रतार्क
नानार्थ नौ संग्रहावली	हनुमान बाहुक	रमलसार	याज्ञवल्क्य स्मृति
ब्रह्मसार	जनकपच्चीसी	रमल नौरत्न	संस्कृत भाषा टीका
शिवसिंहसरोज	हरिहरसगुण निर्गुण	इंद्रजाल	अमरकोष तीनों कांड
भक्तमाल	पदावली	संस्कृत की पुस्तकें	याज्ञवल्क्यस्मृति
इंद्रसभा	दनयात्रा	लघुकौमुदी	सन्ध्यापद्धति
बिक्रमबिलास	कायस्थ वर्णनिर्णय	सिद्धान्तचंद्रिका	व्रतार्क
बैताल पच्चीसी	बिहार वृंदावन	भाषातत्त्वप्रकाश	भगवद्गीता टीका ह॰
सिंहासनबत्तीसी	समबिहार वृन्दावन	पंचमहायज्ञ	भगवद्गीता टीका आ॰
पद्मावती खंड	कल्पभाष्य	निर्णयसिंधु	गीतगोविंद
शुकबहत्तरी	लक्ष्मी सरस्वती संवाद	संग्रह शिरोमणि	कथासत्यनारायण
बकावली सुमन	इल्मी	भगवद्गीता पंचरत्न	परमार्थसार
चहार दरवेश	अक्षरावली	दुर्गापाठ मूल व स॰	शार्ङ्गधरसंहिता
क़िस्सा हातमताई	स्वयम्बोध	विष्णु भागवत	पाराशरी सटीक
अपूर्वकथा	ज्ञान चालीसी	कथा यमद्वितीया	शीघ्रबोध सटीक
क़िस्सा गुल सनोबर	दोहावली	अपराधभंजनस्तोत्र	लघुजातक
सहस्र रजनी चरित्र	बालबोध	कायस्थ कुलभास्कर	षट्पंचाशिका
राबिन्सन का इतिहास	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक	कायस्थ धर्मनिरूप	सामुद्रिक
सीताहरण	किताब जंत्री	तथा छोटा	गरुड पुराण
सतीबिलास	गणितकामधेनु	मथुरा सभा	रामविवाहोत्सव
क़िस्सा मर्द औरत	लीलावती	ज्योतिष	तौरेत वाल्मीकी
सांगीत प्रह्लाद	पटवारियों की पुस्तक भा॰	मुहूर्तगणपति	पुस्तकें
मुतफ़र्क़ात	वैद्यक भाषा	मुहूर्तचक्रदीपिका	संस्कृत
प्रानिश्वर की कथा	निघंट	मुहूर्तचिंतामणि स॰	ऋजुपाठ २ भाग

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ऋजुपाठ २भाग	अवधदेशीयभूगोल	पशुचिकित्सा	१८६७ ई०
तथा ३ भाग	इंगलिस्तान का इति-	पट्टा दरख़्त कैथी	मजमूआ ऐक्ट अ-
धात्वर्णव	हास	तथा क़बूलियत	वधलगान १९
नागरी कैथी	हितोपत्रिका	रजिस्टर दाख़िल-	सन १८६८ ई०
वर्णमाला कैथी	बालाभूषण	ख़ारिज तुलबा मद-	पुख़्तादारी २६
१भाग तथा २भा.	पद्यसंग्रह	र्सा	सन १८६६ ई० व-
तथा कैथी फ़ारसी	भाषाकाव्यसंग्रह	रजिस्टर हाज़िरी	ग़ैरह
नागरी	कवित्तरत्नाकर १भा-	पाठशाला	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता-
हरूफ़मुफ़र्रदात	तथा २भाग	क्षेत्रव्यवहारिक	वेज़ात १८ सन
अक्षरारम्भ	मंगलकोष	तत्व १भाग	१८६९ ई०
वर्णप्रकाशिका	अंकप्रकाश	तथा २भाग	ऐक्ट ताल्लुक़दारा-
१भाग तथा २भाग	गणितप्रकाश१भा-	व्योहार पत्र संग्र-	न मक़रूज़ अवध
सूरजपुरकी कहानी	तथा२व.३व४भाग	ह कैथी	२४ सन १८७०
धर्म्मसिंहका वृत्तांत	गणितक्रिया	क़ानून कैथी	ईसवी
शिक्षावली	क्षेत्रप्रकाश	पटवारियों के क़ायदे	ऐक्ट चौपायों का
शिशुबोध	क्षेत्रचंद्रिका १भाग	उर्दू कैथी महाजनी	मदाख़लत बेजा
पत्रहितैषिणी	तथा२भाग	टिकट के लाइस-	१ सन १८७१ ई०
पत्रदीपिका	सकीलदायरा	न्सका ऐक्ट २सन	ऐक्ट मजमूआ ज़ा-
विद्याचक्र	रेखागणित १भाग	१८७८ ई०	बिता फ़ौजदारी १०
विद्यांकुर	तथा २भाग	नागरी	सन १८७२ ई०
पदार्थविद्यासार	बीजगणित१भाग	ऐक्ट लगानमग़-	ऐक्ट मालगुज़ारी
पदार्थज्ञानविटप	रामायण तुलसीकृत	रबी व शिमाली	मग़रबी व शिमाली
भोजप्रबंधसार	बालकाण्ड	१० सन १८५९ ई०	१९ सन १८७३ ई०
राजनीति	अयोध्याकाण्ड	इंडियन पिनल-	तरमीम मजमूआ
भाषालघुव्याकरण	आरण्यकाण्ड	कोर्ट	ज़ाबित फ़ौजदारी
१भाग तथा २भाग	किष्किन्धाकाण्ड	मजमूआ ज़ाबिता	११ सन १८७४ ई०
भाषातत्वदीपिका	सुन्दरकाण्ड	फ़ौजदारी ऐक्ट	तक़ावी के क़ायदे
भाषाचन्द्रोदय	लंकाकाण्ड	२५ सन १८६१ ई०	सवाल व जवाब
भूगोलतत्व	उत्तरकाण्ड	ऐक्ट रजिस्टरी २०	पुलिस
भूगोलदर्पण	गुटका १भाग	सन १८६६ ई०	अवधरुहेलखंड
इतिहासतिमिरना-	तथा २भाग	ऐक्ट स्टाम्प १सन	रेलवे का दस्तूरुल्-
शक१भाग	तथा ३भाग	१८६२ ईसवी	अमल
तथा २भाग	हिदायतनामामु-	ऐक्ट स्टाम्प अदा-	इति
तथा ३भाग	दर्रिसान्	लत २६ सन	